January II 2014

Every Fortnight

मूल्य ♦ दस रुपए

बच्चे

- धैर्य की पतंग
- प्यारी पतंग

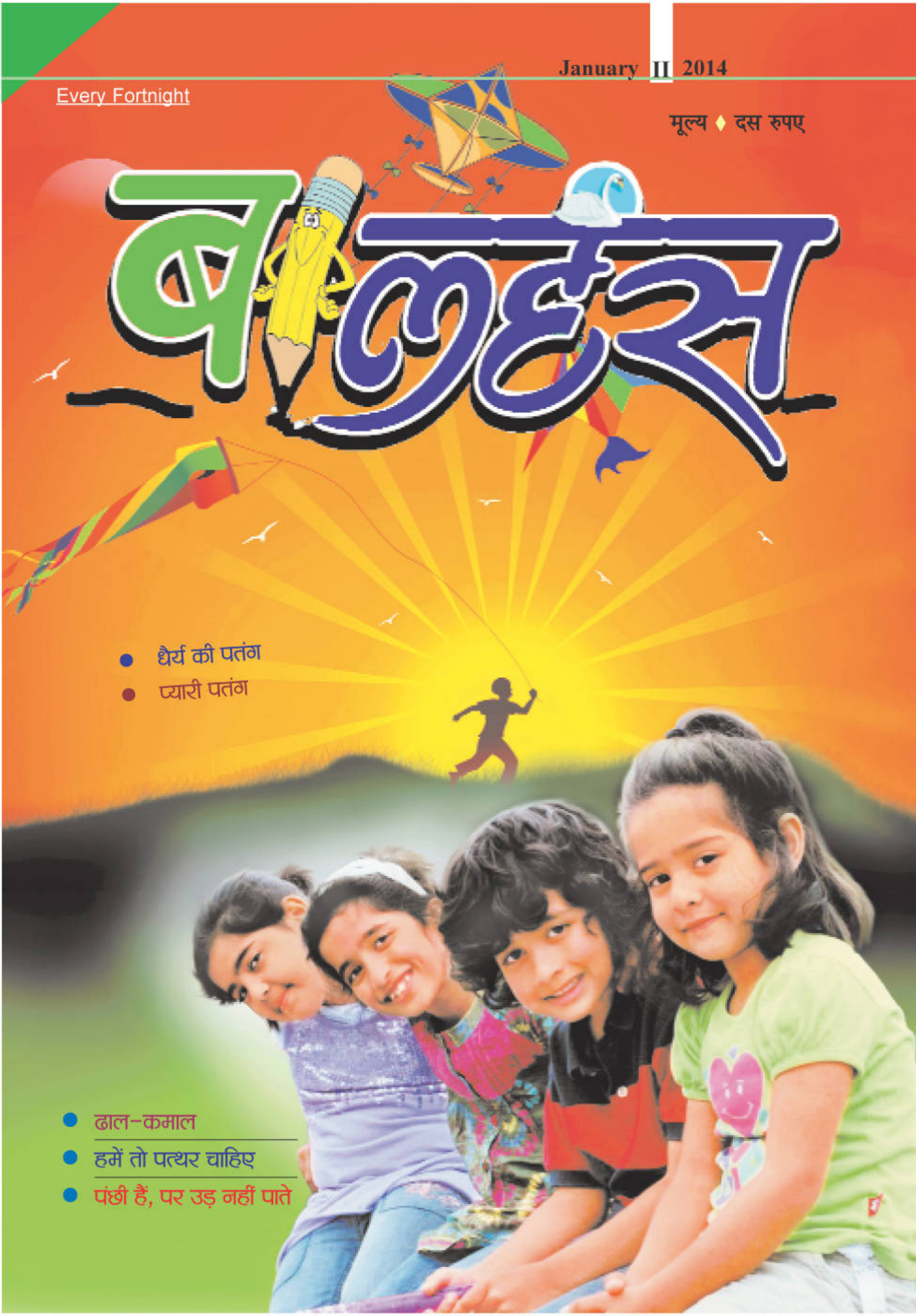

- ढाल-कमाल
- हमें तो पत्थर चाहिए
- पंछी हैं, पर उड़ नहीं पाते

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

• विजन एक्टिविटी किट

वर्ष- 28 अंक- 13
15-31 जनवरी, 2014 पृष्ठ- 68

सपना
-वेणु वारियथ-
एक दिन बादशाह होजा के साथ बातचीत कर रहे थे।
ज्ञान प्राप्त करने और सीखने से बड़ा कुछ नहीं होता...।
ऐसा कैसे बादशाह हुजूर!
यदि अदम्य इच्छा-शक्ति हो तो कुछ भी असंभव नहीं...
बस बड़ा सपना देखने और मजबूत इच्छा होने की जरूरतभर है..
होजा तुम्हारा सबसे बड़ा सपना क्या है?
मेरा सपना तो बादशाह बनने का है....
क्या पागलों जैसी बात कर रहे हो!!
अभी आपने ही तो कहा था कि कुछ बनने के लिए बड़ा सपना देखने की जरूरत है.....

वर्ष- 28 अंक-13

जनवरी (द्वितीय) 2014, जयपुर

विविध

क्यों और कैसे/कमाल है- 46
क्रॉसवर्ड पजल्स- 47
बालमंच- 48
नॉलेज बैंक- 49
आर्ट जंक्शन- 50-51

किड्स क्लब- 54-55
ढूंढो तो...- 61
कैसा लगा- 66

कार्टूनी पतंगबाजी- 5
सीख सुहानी- 14
ऐसे भी उड़ी पतंग-20
बालहंस न्यूज़- 26-27
सैर-सपाटा- 28-29

ठिकाना तो बताना/
ग्राफ से चित्र/
अंतर बताओ- 52-53

कविताएं- 34-35
क्रेजी किया रे- 36-37
बोलें अंग्रेजी- 39
गुदगुदी- 40-41
सामान्य ज्ञान- 42-43
तथ्य निराले- 44-45

विजन एक्टिविटी
किट- 30-33

प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम- 58
ज्ञान प्रतियोगिता- 59
रंग दे प्रतियोगिता- 60

चित्रकथा

जितना दम,
उतना दिखाओ- 15-17
हमें तो पत्थर चाहिए-
22-25
ई-मैन- 62-65

कहानियां

धैर्य की पतंग- 6-7
ढाल-कमाल- 8-9
चांग और वांग- 12-13

कहते हैं पंछी, उड़ नहीं
पाते- 56-57

संपादक
आनन्द प्रकाश जोशी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

संपादकीय सहयोग
किशन शर्मा

चित्रांकन
प्रतिमा सिंह

पृष्ठ सज्जा: शेरसिंह

संपादकीय सम्पर्क

बालहंस (पाक्षिक)
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
दूरभाष: 0141-3005857
e-mail: balhans@epatrika.com

ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं।
वार्षिक- 240/-रुपए,
अर्द्धवार्षिक- 120/-रुपए

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिए 0141-3005825 पर संपर्क करें।

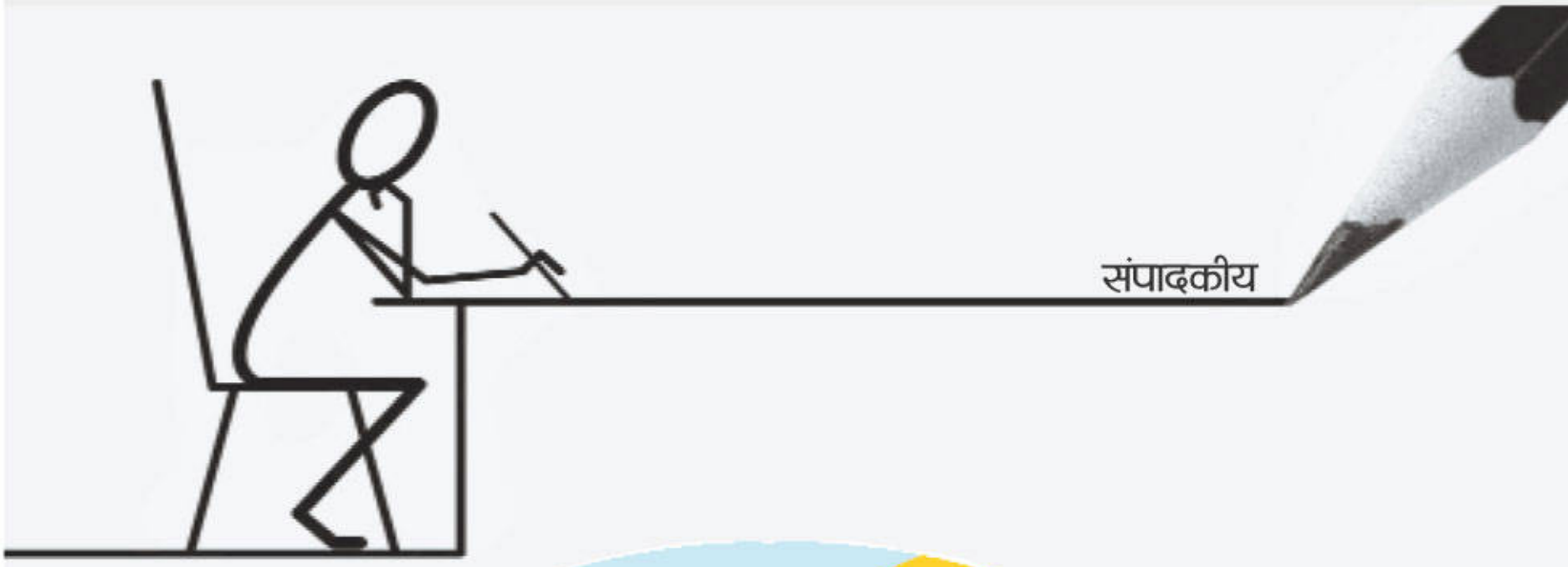

संपादकीय

दोस्तो,

नया साल शुरू हुए कुछ दिन बीत चुके हैं। आप में से कई अभी भी इस उधेड़बुन में होंगे कि किन रिजोल्यूशंस को प्राथमिकता में रखा जाए। अक्सर ऐसा ही होता है। हम अपने टाइमटेबल को कब और कैसे लागू करें, इसी में रह जाते हैं और समय हाथ से खिसकता रहता है। टाइम मैनेज करना भी एक कला है। सभी को दिन में 24 घंटे मिलते हैं। कोई उनका अच्छे से सदुपयोग कर लेता है और कोई इस बहानेबाजी में रह जाता है कि हमारे लिये तो ये घंटे बेहद कम हैं। अपने कार्यों की प्राथमिकताओं की एक सूची बनाइये और जो काम जरूरी हैं वे पहले कीजिये। जैसे एक विद्यार्थी के लिए पहली प्राथमिकता है– पढ़ाई। तो सबसे पहले पढ़ाई पर ध्यान दीजिये, फिर अन्य बातों पर ध्यान लगाइये। चलिये ये तो हुई सबक की बात। इस माह दो पर्व मकर संक्रान्ति और गणतंत्र दिवस आ रहे हैं। पतंग हमारी आशाओं और उन्नति की प्रतीक हैं कि हम ऊपर और ऊपर जाएं। एक स्वस्थ गणतंत्र हमें देश के प्रति अनुशासन का पाठ पढ़ाता है। तो नये साल की गहमागहमी, पतंगों की काटा–काटी और गणतंत्र दिवस की उमंगों के बीच कुछ ऐसा करिये कि उत्साह बना रहे।

तुम्हारा बालहंस

सेवा करने की शिक्षा हमें सूर्य से लेनी चाहिए; जो नित्य–प्रतिदिन संसार को रोशन करने के लिए प्रकट हो जाता है।

कार्टून पतंगबाजी
पतंगबाजी के कारण बच्चे छत से नीचे नहीं आ रहे हैं! दिनभर उनकी फरमाइशें छत पर पूरी करते-करते परेशान हो गयी हूं.
मेरा भी यही हाल है.
..देखना, हमारी पतंग सब से ऊपर जायेगी- कटकर नीचे नहीं गिरेगी- मैंने उसपर महंगाई लिख दिया है..
महंगाई
..आज हम कितने पतंग काटेंगे, कटवाएंगे, और कितना मांजा लूटेंगे?
!
हम नजदीक से पेंच लड़ते हुए देखना चाहते हैं!
RAMBABU MATHUR

धैर्य की पतंग

बच्चो, तुहें किसी भी काम में जल्दीबाजी नहीं करनी चाहिए। हर काम समय मांगता है। जल्दी में किये गये कार्यों का बिगड़ना निश्चित-सा रहता है। हमें इसका नुकसान भी उठाना पड़ता है। इस कहानी में यही सीख दी गई है।

आज मकर संक्रांति का दिन था। हल्की धूप निकली हुई थी। सुहानी हवा चल रही थी। मोहल्ले के सभी बच्चे अपने-अपने घरों की छत पर पतंग उड़ाने में व्यस्त थे।

नितिन और उसका भाई जतिन भी अपने घर की छत पर पतंग उड़ा रहे थे।

'नितिन तुम वो लाल वाली पतंग देख रहे हो?' 'हां उस पतंग ने अभी तक चार पतंगें काट दी हैं।' 'मैं अभी उस पतंग से पेंच लड़ाकर उसे काट देता हूं।' जतिन बोला और लाल पतंग से पेंच लड़ाने लगा। लेकिन लाल पतंग ने उसकी पतंग को काट दिया। 'ये लाल पतंग उड़ाने वाला तो बहुत ही अच्छा पेंच लड़ाता है! इसकी पतंग को काटना बेहद मुश्किल है।' जतिन ने अपनी डोर को लपेटते हुए कहा। 'मैं कोशिश करता हूं, इस पतंग को काटने की,' नितिन बोला और वो लाल पतंग से पेंच लड़ाने लगा। मगर उसकी पतंग भी कट गई। 'चलो हम फिर से पतंग उड़ाकर लाल पतंग से पेच

'मैं तो पहले से ही तैयार हूं।' जतिन दूसरी पतंग उड़ाते हुए बोला। नितिन भी दूसरी पतंग उड़ाने लगा। लेकिन इससे पहले कि उन दोनों में से किसी की भी पतंग लाल पतंग तक पहुंच पाती, एक अन्य पतंग ने लाल पतंग को काट दिया। लाल पतंग कटकर लहराती हुई नितिन और जतिन के घर के पीछे स्थित बगीचे के एक पेड़ में जाकर अटक गई।

'लाल पतंग तो कट गई, अब या किया जाए?'

'करना या है, हम किसी दूसरी पतंग से पेंच लड़ाते हैं,' नितिन ने जवाब दिया। फिर दोनों दूसरी पतंगों से पेंच लड़ाने में व्यस्त हो गए। लगभग एक घण्टे के दौरान उन दोनों ने अनेक पतंगें काटी और उनकी भी पतंगें कटती रहीं। अंत में जतिन के पास केवल एक पतंग बची।

'नितिन मेरी तो यह आखिरी पतंग है। तुहारे पास कितनी पतंगें बची?'

'मेरी पतंगें तो पहले ही समाप्त हो गई हैं। तुम पेंच लड़ाओ और मैं तुहें पेंच लड़ाते देखूंगा,' नितिन ने कहा तो जतिन पतंग उड़ाने लगा। कुछ देर में जतिन की पतंग आकाश में थी। और वो एक पतंग से पेंच लड़ा रहा था। जतिन ने उस पतंग को काट दिया और एक अन्य पतंग से पेंच लड़ाने लगा। लेकिन इस बार उसकी पतंग कट गई।

'अब या करें, हमारे पास तो एक भी पतंग नहीं बची?' जतिन ने डोर लपेटते हुए पूछा। 'जतिन तुम भूल रहे हो कि पीछे बाग में लाल पतंग अटकी हुई है,' नितिन ने याद दिलाया। 'अरे हां, यह बात तो मैं भूल ही गया था। चलो, चलकर उस पतंग को ले आएं।' जतिन उत्साहपूर्वक बोला और दोनों बगीचे में जा पहुंचे।

'पतंग तो बहुत ऊपर की डाली में अटकी हुई है, इसे नीचे कैसे उतारें?' जतिन ने डाली पर अटकी पतंग को देखते हुए पूछा। इससे पहले कि नितिन उसकी बात का कोई जवाब देता, हवा का एक झोंका आया तो पतंग थोड़ी नीचे आई।

'जतिन देखो हवा के साथ-साथ पतंग नीचे आ रही है, मुझे लगता है कि थोड़ी देर में पतंग नीचे आ

कहानी

'मुझे भी ऐसा ही लगता है,' जतिन ने कहा और दोनों पतंग के नीचे आने का इंतजार करने लगे। इंतजार करते-करते दस मिनट बीत गए। इसी बीच कई बार हवा के झोंके आये और पतंग धीरे-धीरे नीचे आती रही। लेकिन इतनी नीचे फिर भी नहीं हुई कि नितिन या जतिन उसे ले सकें।

'ऐसे भला कब तक हम दोनों इंतजार करते रहेंगे, रुको मैं एक काम करता हूं, पत्थर मारकर उस डाली को ही तोड़ देता हूं, जिस पर यह पतंग अटकी हुई है। डाली टूटते ही पतंग नीचे आ जाएगी,' जतिन अधीर होते हुए बोला।

'ऐसा मत करो, कहीं पत्थर पतंग पर लग गया तो पतंग फट जाएगी।'

'अब जो होना है होगा, इस प्रकार आखिर कब तक हम यहां खड़े रहेंगे,' जतिन ने कहा और एक पत्थर उठाकर उसे डाली की ओर फेंका। लेकिन पत्थर डाली पर नहीं लगा तो जतिन ने दूसरा पत्थर उठाकर उसे फिर डाली की ओर फेंका। उसी समय हवा का झोंका आया और पतंग अपने स्थान से हिल गई। जिससे पतंग पत्थर और डाली के बीच में आ गई और पत्थर लगने के कारण फट गई।

'इतना व□त फालतू ही गया और हमें पतंग भी नहीं मिली,' पतंग फटने से नाराज जतिन गुस्से से बोला। 'अगर तुम थोड़ा धैर्य से काम लेते तो शायद हमें वो पतंग मिल जाती।' 'अरे छोड़ो भी, यह पतंग इतनी बुरी तरह से डाली से उलझी हुई थी कि नीचे नहीं आती,' नितिन की बात सुनकर जतिन ने चिढ़कर कहा। दोनों वापस अपने घर की छत पर आकर अन्य पतंगों के पेंच देखने लगे।

कुछ देर बाद एक नीली पतंग कट गई और नितिन व जतिन के घर के पीछे स्थित बगीचे के पेड़ों में जाकर अटक गई। 'जतिन देखो, एक पतंग जाकर बगीचे के पेड़ों में उलझ गई है। चलो, उसे लेने चलें,' नितिन ने उत्साह से कहा।

'छोड़ो भी जाना बेकार है, पतंग-वतंग मिलेगी नहीं और व□त बेकार होगा सो अलग।' 'तु□हें नहीं जाना तो मत जाओ, मैं तो जा रहा हूं।' 'नितिन तु□हें मूर्खों की तरह पतंग के इंतजार में पेड़ के नीचे खड़े रहना है, तो तुम अवश्य जाओ। □या तुमने देखा नहीं कि डाली में उलझी पतंग नीचे नहीं आती है,' जतिन बोला। लेकिन नितिन नहीं रुका और बगीचे में चला गया। नितिन ने पेड़ के पास जाकर देखा कि डाली पर अटकी पतंग हवा के प्रत्येक झोंके के साथ नीचे आ रही है।

नितिन धैर्य के साथ पतंग के नीचे आने का इंतजार करने लगा। इंतजार करते-करते पन्द्रह मिनट बीत गये। लेकिन पतंग फिर भी नीचे नहीं आई। नितिन ने अपना धैर्य नहीं खोया और सब्र के साथ इंतजार करता रहा। आखिर पच्चीस मिनट बाद हवा के एक तेज झोंके के साथ पतंग डाली से छूटकर नीचे आ गिरी।

पतंग के नीचे गिरते ही नितिन ने पतंग को उठाया और उत्साह के साथ घर की ओर दौड़ा। नितिन पतंग लेकर अपने घर की छत पर पहुंचा तो तो जतिन हैरान रह गया। 'तु□हें यह पतंग कहां से मिली, □या तुम इसे खरीदकर लाए हो?' जतिन ने हैरान होकर पूछा।

'नहीं मेरे पास तो जितने भी पैसे थे, वो सब मैंने पहले ही पतंग और डोर खरीदने में खर्च कर दिये। ये तो वही पतंग है, जो अभी कुछ देर पूर्व बगीचे के पेड़ में जा उलझी थी,' कहकर नितिन से सारी बात बता दी।

'काश मैंने अपना धैर्य न

-विवेक चक्रवर्ती

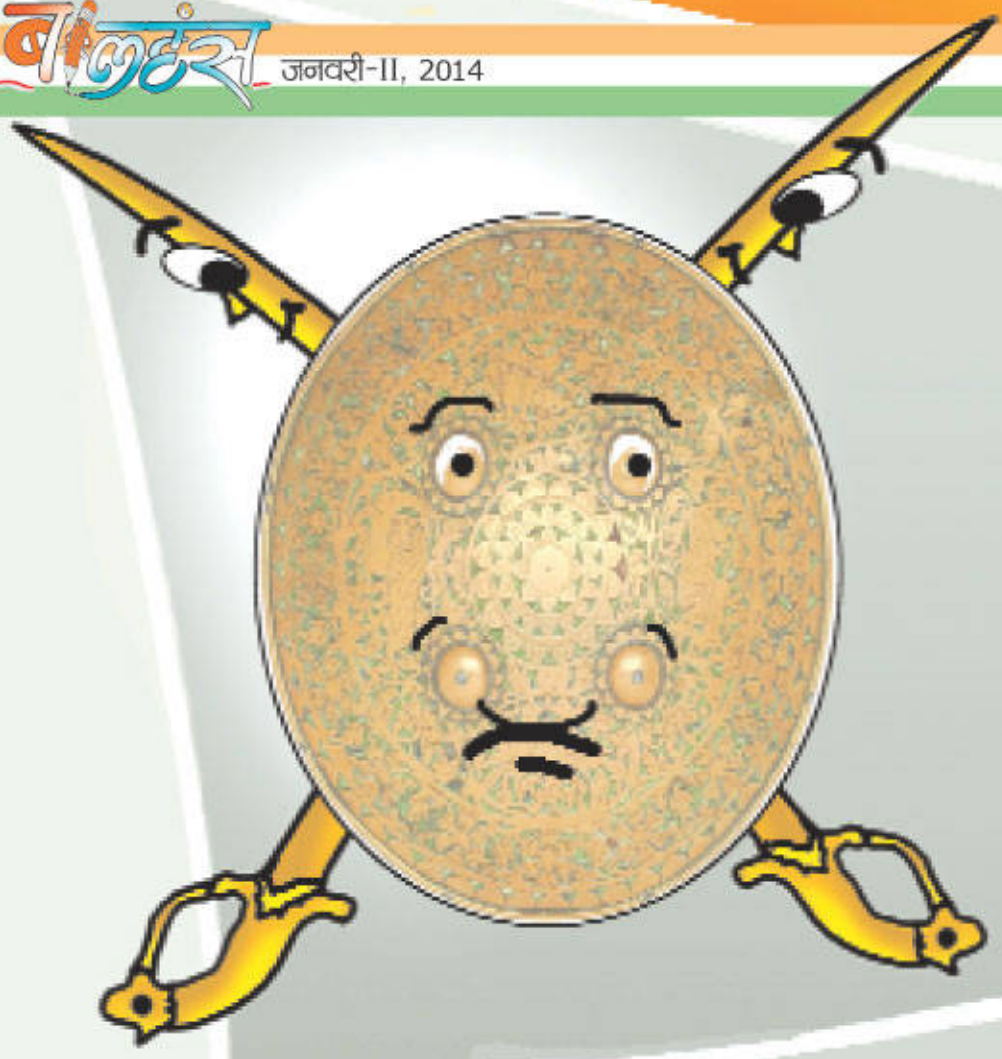

'ढाल बहिन क्यों ताने मार रही हो.... मेरा तो अंग-भंग हो गया। मुझे ठीक करवाने के बजाय राजा ने मुझे एक कोने में रोने के लिए छोड़ दिया।' तलवार ने दर्द भरे शब्दों में कहा।

ढाल-कमाल

राजा विश्वजीत विश्व-विजय का सपना देख रहा था। वह अपने नाम के अर्थ को सार्थक करना चाहता था। उसके पास एक ऐसी शुभ तलवार और ढाल थी कि वह जो भी युद्ध लड़ता सफलता अवश्य ही मिलती। इसलिए वह अपनी तलवार को जी-जान से चाहता था। विश्वजीत सुबह-शाम अपनी तलवार की पूजा करता और उसे माथे से लगाकर □यान में रखता।

किंतु वह अपनी ढाल का स□मान इतना नहीं करता था, जितना कि वह तलवार को इज्जत देता था। एक रात तलवार और ढाल को नींद नहीं आ रही थी। तलवार ने घमण्ड में ढाल से कहा, 'देखो ढाल, राजा विश्वजीत मुझ से अधिक प्रेम करते हैं और मुझे ज्यादा स□मान देते हैं। तु□हारा तो वे ध्यान भी नहीं रखते। जबकि युद्ध मैदान में एक हाथ में तुम रहती हो और एक हाथ में मैं रहती हूं। इसका अर्थ यह हुआ कि तुमसे ज्यादा मेरा मह□व है।'

ढाल ने बड़ी सहजता से उ□र दिया, 'तलवार बहिन तु□हारा काम है लोगों को मारना उनकी जान लेना, जबकि मेरा काम है जान बचाना। किसका कितना मह□व है ये तो समय ही बतायेगा।'

एक बार राजा विश्वजीत को एक बड़ा युद्ध लड़ना पड़ा। युद्ध भूमि में शत्रु सेना के कुछ सैनिकों ने राजा विश्वजीत को घेर लिया। वे राजा पर प्रहार पर प्रहार किये जा रहे थे। राजा विश्वजीत भी बड़ी बहादुरी से ढाल को सामने करके उनके प्रहारों को रोक रहे थे। अचानक एक भाले के प्रहार से राजा की तलवार के दो टुकड़े हो गये। राजा घबरा गये, किंतु बड़े साहस के साथ ढाल से प्रहारों को रोकते हुए वे युद्ध मैदान से भाग निकले।

राजा को पराजय का मुंह देखना पड़ा। उन्होंने हार का कारण तलवार को माना, □योंकि वह युद्ध के दौरान टूट गयी थी। किन्तु ढाल की उन्होंने बड़ी सराहना और प्रशंसा की। वे जानते थे कि यदि आज ढाल नहीं होती तो निश्चित रूप से

प्रहारों के कारण ढाल को खरोंचे आ गयी थी। उसी रात तलवार दर्द के मारे कराह रही थी तो ढाल ने चुटकी लेते हुए कहा, 'तलवार बहिन □या हुआ।'

राजा ने आज तु□हें एक कोने में तड़पने के लिए □यों छोड़ दिया। आज तु□हें पता भी चल गया कि युद्ध के समय कौन मह□वपूर्ण होता है?'

'ढाल बहिन □यों ताने मार रही हो.... मेरा तो अंग-भंग हो गया। मुझे ठीक करवाने के बजाय राजा ने मुझे एक कोने में रोने के लिए छोड़ दिया।' तलवार ने दर्द भरे श□दों में कहा।

'मैं तु□हें ताने नहीं मार रही हूं बहिन। सीख दे रही हूं। युद्ध में तलवार और ढाल दोनों का बराबर का मह□व होता है। जैसे आज तु□हारे दो टुकड़े हो गये तो राजा की जान मेरे कारण बची। मैं नहीं होती तो उनके प्राण चले गये होते। और पहले भी मैंने कहा था कि तुम प्राण हरने का काम करती रही हो सदा, और मैं प्राण बचाने का काम करती रही, और किसी ने कहा भी है....।'

'हां.... मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है.... ढाल बहिन तु□हारी सीख मुझे समझ में आ गयी। मुझे क्षमा कर देना, उस दिन मैंने घमण्ड में तु□हें भला-बुरा कह दिया था। उस घमण्ड के कारण ही मेरा ये हाल हुआ है।' तलवार ने ढाल की बात काटते हुए कहा।

कहानी

इस प्रकार राजा विश्वजीत विश्वविजेता बनने से चूक गया और तलवार का घमण्ड भी चूर-चूर हो गया। किन्तु

–गोविन्द भारद्वाज

अचानक एक भाले के प्रहार से राजा की तलवार के दो टुकड़े हो गये। राजा घबरा गये, किंतु बड़े साहस के साथ ढाल से प्रहारों को रोकते हुए वे युद्ध मैदान से भाग निकले।

स्वतंत्रता का प्रभाव

एक दिन बादशाह अकबर ने सोचा, 'जब तानसेन इतना अच्छा गाते हैं तो भला इनके गुरु में कैसी विलक्षण प्रतिभा होगी? वह कैसा अद्‌भुत गाते होंगे?' उन्होंने तानसेन के सामने अपनी जिज्ञासा प्रकट की।

तानसेन ने कहा, 'महाराज, वह संन्यासी हैं। राजपाट से कोई लेना-देना नहीं। यमुना के किनारे एक पर्ण कुटीर में रहते हैं और अपने भक्ति-संगीत से जंगल की अंतरात्मा को जगाते रहते हैं। क्या पेड़, क्या पक्षी; उनकी आवाज सुने बिना कोई चैन नहीं पाता है।'

बादशाह अकबर ने कहा, 'ठीक है, अगर वह नहीं आ सकते तो मैं ही उनके दर्शन के लिये वन जाऊंगा। तुम भी चलने की तैयारी करो।'

तानसेन बादशाह को लेकर वृन्दावन के उस जंगल में गए, जहां स्वामी हरिदास रहते थे। कुटिया के बाहर वे ध्यानमग्न थे। उनके चेहरे पर अपूर्व शांति थी। पूरे शरीर से तेज निकल रहा था। एक दुतारा वहां रखा था। बादशाह ने दर्शन कर तो लिये, पर बिना संगीत सुने उनका मन नहीं मान रहा था। सच्चाई तो यह भी थी कि ऐसे आनंदलोक में उन्होंने कभी कदम ही नहीं रखा था, लग रहा था कि बस वहीं रह जाएं। पर बादशाह तो बादशाह ही थे, ऐसी इच्छा वो किसी को बता भी नहीं सकते थे। उन्होंने तानसेन से कहा, 'क्या यमुना तट पर आकर भी हम प्यासे रह जायेंगे? कोई ऐसा उपाय करो कि स्वामी जी गाने लगें।' तानसेन ने कहा, 'अच्छा मैं प्रयत्न करता हूं।'

तानसेन ने कुछ सोचा, फिर अपनी सितार उठा कर बजाना शुरू किया। पहले थोड़ा ठीक बजाया, फिर जान-बूझकर गलत बजाने लगे। स्वामी हरिदास ने आंखें खोलीं और झुंझला कर कहा, 'गलत बजा रहे हो तुम तानसेन! सुनो, मैं बजाता हूं।' अपना दुतारा उठाकर उन्होंने बजाना आरंभ किया और साथ में गाने भी लगे। सारा वन उनके गाने से गूंज उठा। पेड़-पौधे झूमने लगे। पंछियों का कोलाहल बंद हो गया। नदियां रुक गयीं। जंगल के हिरन स्वामी जी के कदमों पर आ कर बैठ गए।

ऐसे नजारे की तो बादशाह ने कल्पना भी नहीं की थी। बादशाह ने आंखें मूंद लीं। कितनी देर...., उन्हें पता भी नहीं चला। अंततः जब स्वामीजी ने गाना बंद किया तब उनकी आंखें खुलीं। बादशाह ने उन्हें प्रणाम कर उनके कदमों पर झुक कर महल में चलने का अनुरोध किया। पर स्वामीजी ने कहा, 'मैं ईश्वर का सेवक हूं, भला महल में मेरा क्या काम?' अकबर को पता था कि उनके सामने जिद करना बेकार है।

तानसेन और अकबर महल की ओर लौट पड़े। रास्तेभर बादशाह के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। लगता था कि उस अभूतपूर्व स्थिति से अब तक वह बाहर नहीं निकले हैं।

कुछ दिनों पश्चात बादशाह अकबर तानसेन के साथ अपने बाग में टहल रहे थे। उन्होंने कहा, 'तानसेन, तुम भारतवर्ष के सर्वश्रेष्ठ गायक हो। फिर भी तुम्हारे गाने में वह रस, वह मस्ती क्यों नहीं, जो स्वामी हरिदास के गाने में है?'

स्वतंत्रता का प्रभाव

एक दिन बादशाह अकबर ने सोचा, 'जब तानसेन इतना अच्छा गाते हैं तो भला इनके गुरु में कैसी विलक्षण प्रतिभा होगी? वह कैसा अद्भुत गाते होंगे?'

उन्होंने तानसेन के सामने अपनी जिज्ञासा प्रकट की।

तानसेन ने कहा, 'महाराज, वह संन्यासी हैं। राजपाट से कोई लेना-देना नहीं। यमुना के किनारे एक पर्ण कुटीर में रहते हैं और अपने भ□त-संगीत से जंगल की अंतरात्मा को जगाते रहते हैं। □या पेड़, □या पक्षी; उनकी आवाज सुने बिना कोई चैन नहीं पाता है।'

बादशाह अकबर ने कहा, 'ठीक है, अगर वह नहीं आ सकते तो मैं ही उनके दर्शन के लिये वन जाऊंगा। तुम भी चलने की तैयारी करो।'

तानसेन बादशाह को लेकर वृन्दावन के उस जंगल में गए, जहां स्वामी हरिदास रहते थे। कुटिया के बाहर वे ध्यानमग्न थे। उनके चेहरे पर अपूर्व शांति थी। पूरे शरीर से तेज निकल रहा था। एक दुतारा वहां रखा था। बादशाह ने दर्शन कर तो लिये, पर बिना संगीत सुने उनका मन नहीं मान रहा था। सच्चाई तो यह भी थी कि ऐसे आनंदलोक में उन्होंने कभी कदम ही नहीं रखा था, लग रहा था कि बस वहीं रह जाएं। पर बादशाह तो बादशाह ही थे, ऐसी इच्छा वो किसी को बता भी नहीं सकते थे। उन्होंने तानसेन से कहा, '□या यमुना तट पर आकर भी हम प्यासे रह जायेंगे? कोई ऐसा उपाय करो कि स्वामी जी गाने लगें।' तानसेन ने कहा, 'अच्छा मैं प्रयत्न करता हूं।'

तानसेन ने कुछ सोचा, फिर अपनी सितार उठा कर बजाना शुरू किया। पहले थोड़ा ठीक बजाया, फिर जान-बूझकर गलत बजाने लगे। स्वामी हरिदास ने आंखें खोलीं और झुंझला कर कहा, 'गलत बजा रहे हो तुम तानसेन! सुनो, मैं बजाता हूं।' अपना दुतारा उठाकर उन्होंने बजाना आर□भ किया और साथ में गाने भी लगे। सारा वन उनके गाने से गूंज उठा। पेड़-पौधे झूमने लगे। पंछियों का कोलाहल बंद हो गया। नदियां रुक गयीं। जंगल के हिरन स्वामी जी के कदमों पर आ कर बैठ गए।

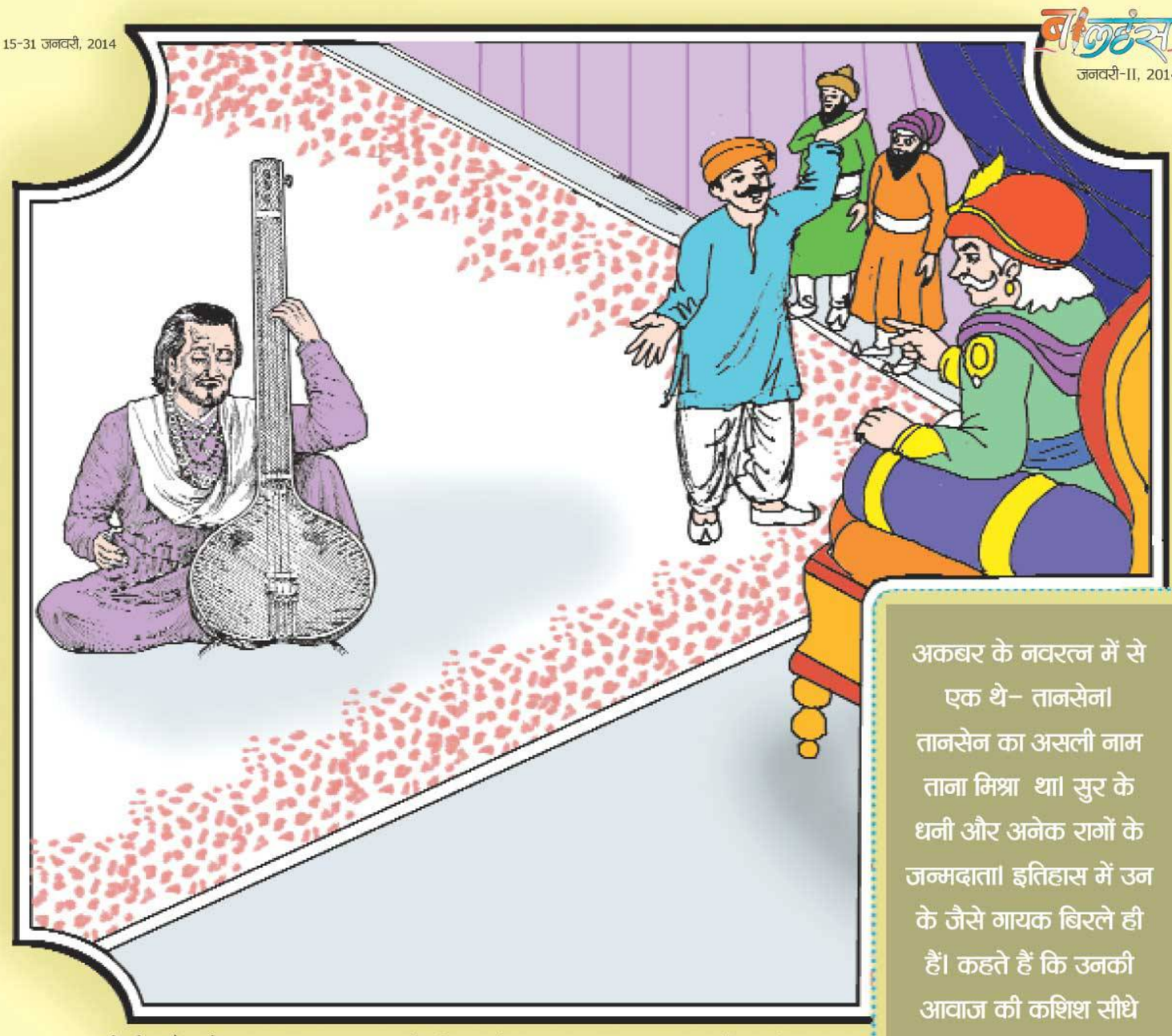

ऐसे नजारे की तो बादशाह ने कल्पना भी नहीं की थी। बादशाह ने आंखें मूंद लीं। कितनी देर...., उन्हें पता भी नहीं चला। अंतत: जब स्वामीजी ने गाना बंद किया तब उनकी आंखें खुलीं। बादशाह ने उन्हें प्रणाम कर उनके कदमों पर झुक कर महल में चलने का अनुरोध किया। पर स्वामीजी ने कहा, 'मैं ईश्वर का सेवक हूं, भला महल में मेरा □या काम?' अकबर को पता था कि उनके सामने जिद करना बेकार है।

तानसेन और अकबर महल की ओर लौट पड़े। रास्तेभर बादशाह के मुंह से एक श□द भी नहीं निकला। लगता था कि उस अभूतपूर्व स्थिति से अब तक वह बाहर नहीं निकले हैं।

कुछ दिनों पश्चात बादशाह अकबर तानसेन के साथ अपने बाग में टहल रहे थे। उन्होंने कहा, 'तानसेन, तुम भारतवर्ष के सर्वश्रेष्ठ गायक हो। फिर भी तु□हारे गाने में वह रस, वह मस्ती □यों नहीं, जो स्वामी हरिदास के गाने में है?'

तानसेन ने हाथ जोड़ कर जवाब दिया, 'शहंशाह! मैं दिल्लीपति का सेवक हूं। एक गवैया जो अपने महाराज के लिए गाता है। मैं एक बंधन में हूं, जबकि स्वामी हरिदास जगतपति के लिए गाते हैं। वह जगतपति जो अनगिनत दिल्लीपतियों का भी पति है। वह ईश्वर के लिए गाते हैं, मु□त हो कर गाते हैं।'

अकबर ज्ञानी था। बिन बोले ही समझ गया कि जो भगवान के गुण गाता है, उसकी वाणी में रस होगा ही। जिसके ऊपर कोई दबाव और चिंता नहीं है उसकी वाणी का प्रभाव अद्भुत और सर्वव्यापी होगा। स्वछन्द पंछी और पिंजरे के पंछी के शोर में भी यह अंतर महसूस किया जा सकता है, फिर आदमी तो आदमी है, यह अंतर तो

-कविता विकास

अकबर के नवरत्न में से एक थे- तानसेन। तानसेन का असली नाम ताना मिश्रा था। सुर के धनी और अनेक रागों के जन्मदाता। इतिहास में उन के जैसे गायक बिरले ही हैं। कहते हैं कि उनकी आवाज की कशिश सीधे ईश्वर तक जाती थी। जब वह राग मल्हार गाते तो मेघ बरस पड़ते थे, और जब दीपक राग गाते तो दीपक जल उठते।

चांग और वांग

कहानी

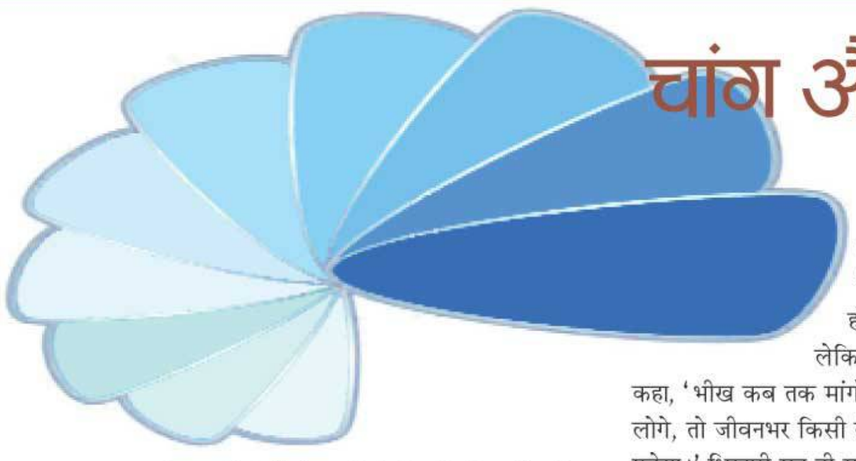

चीन की सि□यांग नदी के किनारे दो भाई रहते थे- चांग और वांग। दोनों भाई दिनभर मछली पकड़ते और उन्हें बेचकर होने वाली आमदनी से अपना परिवार चलाते। एक दिन उनके घर एक भिखारी आया। चांग ने दरवाजा खोला, तो भिखारी ने भिक्षा के लिए निवेदन किया। चांग ने उसे दो मछलियां दे दीं। भिखारी दुआ देता हुआ चला गया।

अगले दिन सुबह वही भिखारी फिर उनके घर आ गया। आज दरवाजा वांग ने खोला। उसने भिखारी को फटकारते हुए कहा, 'शर्म नहीं आती? तुम पूरी तरह स्वस्थ हो, भले-चंगे हो, कुछ काम □यों नहीं करते?' भिखारी ने कहा, 'बाबूजी! मुझे कोई काम करना आता ही नहीं।' वांग बोला, 'चलो, मैं सिखाता हूं काम।' कहकर उसने मछली पकड़ने वाले दो कांटे ले लिए और भिखारी को अपने साथ नदी के किनारे ले गया।

भिखारी ने पिंड छुड़ाने के लिए कहा, 'यह सब मुझसे नहीं होगा। मुझे जाने दो।' लेकिन वांग ने उसे डपटकर कहा, 'भीख कब तक मांगोगे? यह काम सीख लोगे, तो जीवनभर किसी के आगे हाथ नहीं पसारना पड़ेगा।' भिखारी मन ही मन बुदबुदाया, 'तुम से अच्छा तो तु□हारा भाई था, उसने दो मछलियां दे दी थीं, जिनसे मेरा पेट भर गया....मैं भी कहां तु□हारे च□कर में फंस गया।' लेकिन वांग के आगे उसकी एक न चली।

भिखारी कांटा पकड़कर वांग के साथ नदी के किनारे बैठ गया। वांग ने उसे सब कुछ बारीकी से समझा दिया था। देखते ही देखते भिखारी ने एक घंटे में ही चार बड़ी मछलियां पकड़ लीं। वांग ने कहा, 'आज तु□हारे लिए इतनी मेहनत ही काफी है। कल कम से कम तीन घंटे यहां मछली पकड़ना। यह कांटा तुम ही रखो।' वांग अपने घर चला गया।

घर आने पर चांग ने वांग को खूब डांटा और उसे म□खीचूस बताते हुए दो चांटे मार दिए। उसने कहा, 'द्वार पर आए गरीब की मदद करने के बजाय तुम ने उसे सताया है।' वांग ने सिर झुकाकर रहा, 'मैंने तो उसकी सच्ची मदद करने की कोशिश की थी। भिखारी अपनी पकड़ी चारों मछलियां लेकर चल पड़ा।

रास्ते में उसने सोचा कि मेरे लिए तो एक ही मछली काफी है, □यों न बाकी तीन मछलियां बेच

वहां एक तरफ खड़ा होकर वह आवाज लगाने लगा, 'ताजा मछलियां...ताजा मछलियां...।' देखते ही देखते कुछ ही देर में उसकी मछलियां बिक गईं।

हाथ में इतने पैसे देख, भिखारी खुश हो गया। उसने बाजार से खाने-पीने की ढेर सारी चीजें खरीदीं और कई दिनों बाद छक कर अपनी पसंद का भोजन किया। आज उसे सचमुच बड़ा मजा आया। भीख में उसे न तो इतनी मात्रा में ताजा भोजन मिलता था और ना ही मनपसंद पकवान।

अगले दिन भिखारी सुबह-सवेरे ही नदी किनारे चल पड़ा। आज उसने दोपहर तक मछलियां पकड़ीं। ढेर सारी मछलियों को एक टोकरे में लादकर उसने हाट में बेच दिया। आज तो उसके पास पैसों का ढेर लग गया। भिखारी की खुशी का ठिकाना न रहा। अब तो वह रोज मछलियां पकड़ता और उन्हें बाजार में बेच आता।

समय बीता। अब भिखारी मछलियों का बड़ा व्यापारी बन गया था। उसका खुद का मकान था, नौकर-चाकर थे। एक दिन वांग और चांग अपनी मछलियां बेचने उसके पास आ पहुंचे। भिखारी ने उन्हें पहचान लिया। उसने उनकी मछलियों के दोगुने दाम दिए, फिर वांग के पैर छुए। वांग आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा कि इस रईस व्यापारी ने उसके पैर □यों छुए और मछलियों की कीमत बाजार दर से दो गुना कैसे दे दी?

व्यापारी बोला, 'साहब! मैं वही भिखारी हूं, जिसे आपने जबरदस्ती मछली पकड़ने की कला सिखाई। आपने मेरी सच्ची मदद की और सही राह दिखाई, तभी आज मैं इस योग्य हुआ हूं।' चांग का सिर झुक गया। उसने वांग से उस दिन के दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगी।

-अंजू जैन

CMYK Farm 1 C

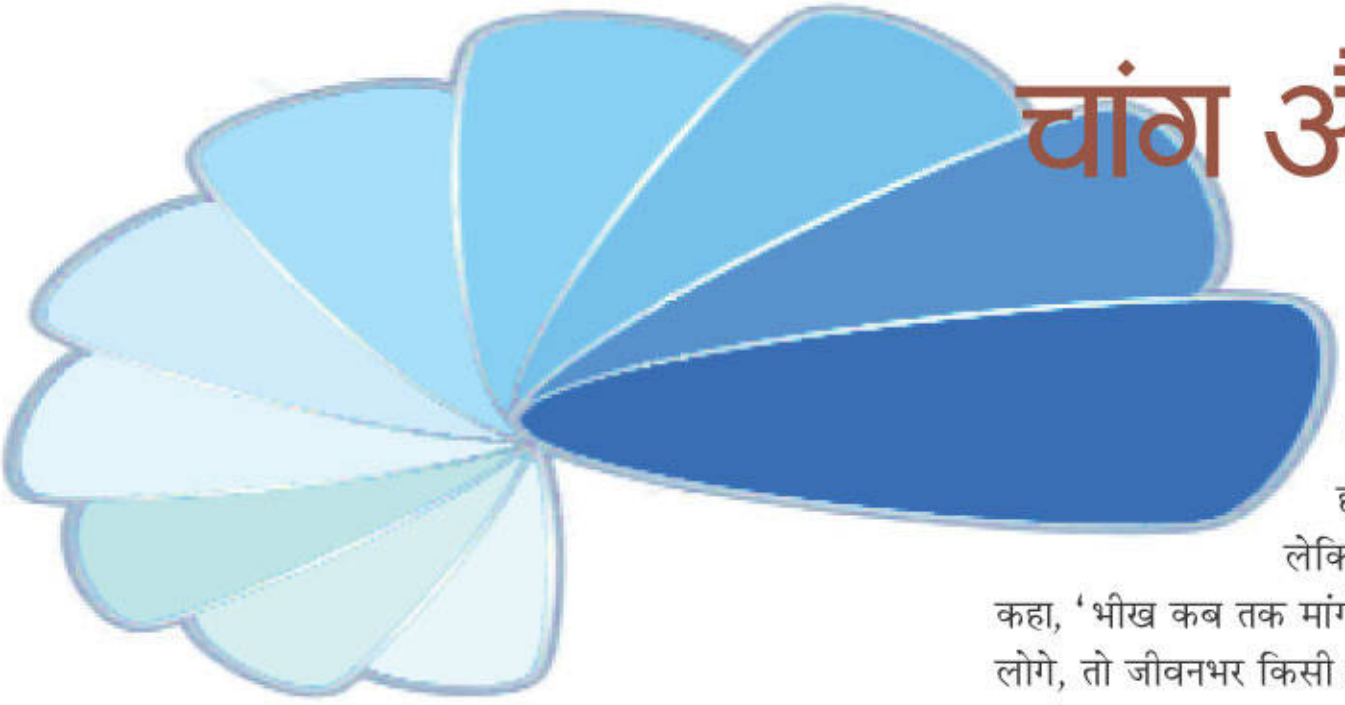

चांग और वांग

कहानी

चीन की सि□यांग नदी के किनारे दो भाई रहते थे- चांग और वांग। दोनों भाई दिनभर मछली पकड़ते और उन्हें बेचकर होने वाली आमदनी से अपना परिवार चलाते। एक दिन उनके घर एक भिखारी आया। चांग ने दरवाजा खोला, तो भिखारी ने भिक्षा के लिए निवेदन किया। चांग ने उसे दो मछलियां दे दीं। भिखारी दुआ देता हुआ चला गया।

अगले दिन सुबह वही भिखारी फिर उनके घर आ गया। आज दरवाजा वांग ने खोला। उसने भिखारी को फटकारते हुए कहा, 'शर्म नहीं आती? तुम पूरी तरह स्वस्थ हो, भले-चंगे हो, कुछ काम □यों नहीं करते?' भिखारी ने कहा, 'बाबूजी! मुझे कोई काम करना आता ही नहीं।' वांग बोला, 'चलो, मैं सिखाता हूं काम।' कहकर उसने मछली पकड़ने वाले दो कांटे ले लिए और भिखारी को अपने साथ नदी के किनारे ले गया।

भिखारी ने पिंड छुड़ाने के लिए कहा, 'यह सब मुझसे नहीं होगा। मुझे जाने दो।' लेकिन वांग ने उसे डपटकर कहा, 'भीख कब तक मांगोगे? यह काम सीख लोगे, तो जीवनभर किसी के आगे हाथ नहीं पसारना पड़ेगा।' भिखारी मन ही मन बुदबुदाया, 'तुम से अच्छा तो तु□हारा भाई था, उसने दो मछलियां दे दी थीं, जिनसे मेरा पेट भर गया....मैं भी कहां तु□हारे च□कर में फंस गया।' लेकिन वांग के आगे उसकी एक न चली।

भिखारी कांटा पकड़कर वांग के साथ नदी के किनारे बैठ गया। वांग ने उसे सब कुछ बारीकी से समझा दिया था। देखते ही देखते भिखारी ने एक घंटे में ही चार बड़ी मछलियां पकड़ लीं। वांग ने कहा, 'आज तु□हारे लिए इतनी मेहनत ही काफी है। कल कम से कम तीन घंटे यहां मछली पकड़ना। यह कांटा तुम ही रखो।' वांग अपने घर चला गया।

घर आने पर चांग ने वांग को खूब डांटा और उसे म□खीचूस बताते हुए दो चांटे मार दिए। उसने कहा, 'द्वार पर आए गरीब की मदद करने के बजाय तुम ने उसे सताया है।' वांग ने सिर झुकाकर रहा, 'मैंने तो उसकी सच्ची मदद करने की कोशिश की थी। भिखारी अपनी पकड़ी चारों मछलियां लेकर चल पड़ा।

रास्ते में उसने सोचा कि मेरे लिए तो एक ही मछली काफी है, □यों न बाकी तीन मछलियां बेच

वहां एक तरफ खड़ा होकर वह आवाज लगाने लगा, 'ताजा मछलियां...ताजा मछलियां...।' देखते ही देखते कुछ ही देर में उसकी मछलियां बिक गईं।

हाथ में इतने पैसे देख, भिखारी खुश हो गया। उसने बाजार से खाने-पीने की ढेर सारी चीजें खरीदीं और कई दिनों बाद छक कर अपनी पसंद का भोजन किया। आज उसे सचमुच बड़ा मजा आया। भीख में उसे न तो इतनी मात्रा में ताजा भोजन मिलता था और ना ही मनपसंद पकवान।

अगले दिन भिखारी सुबह-सवेरे ही नदी किनारे चल पड़ा। आज उसने दोपहर तक मछलियां पकड़ीं। ढेर सारी मछलियों को एक टोकरे में लादकर उसने हाट में बेच दिया। आज तो उसके पास पैसों का ढेर लग गया। भिखारी की खुशी का ठिकाना न रहा। अब तो वह रोज मछलियां पकड़ता और उन्हें बाजार में बेच आता।

समय बीता। अब भिखारी मछलियों का बड़ा व्यापारी बन गया था। उसका खुद का मकान था, नौकर-चाकर थे। एक दिन वांग और चांग अपनी मछलियां बेचने उसके पास आ पहुंचे। भिखारी ने उन्हें पहचान लिया। उसने उनकी मछलियों के दोगुने दाम दिए, फिर वांग के पैर छुए। वांग आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगा कि इस रईस व्यापारी ने उसके पैर □यों छुए और मछलियों की कीमत बाजार दर से दो गुना कैसे दे दी?

व्यापारी बोला, 'साहब! मैं वही भिखारी हूं, जिसे आपने जबरदस्ती मछली पकड़ने की कला सिखाई। आपने मेरी सच्ची मदद की और सही राह दिखाई, तभी आज मैं इस योग्य हुआ हूं।' चांग का सिर झुक गया। उसने वांग से उस दिन के दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगी।

–अंजू जैन

मन का आराम

मतंग ऋषि पशु-पक्षियों के प्रति काफी स्नेह रखते थे। अक्सर वह अध्ययन और ईश्वर उपासना के बाद पक्षियों के साथ खेलने लग जाते थे। गोरैया और कौवे उनके इशारे पर जमीन पर उतर आते और उनके कंधों व हाथों पर बैठ जाते थे।

एक दिन जब वे पक्षियों के बीच चहक रहे थे तभी अनंग ऋषि वहां आए। वह मतंग ऋषि का बहुत सम्मान करते थे। उन्हें पक्षियों के साथ खेलते देख वह बोले, 'महाराज, आप इतने बड़े विद्वान होकर बच्चों की तरह चिड़ियों के साथ खेल रहे हैं। इससे आपका मूल्यवान समय नष्ट नहीं होता?'

अनंग ऋषि के इस प्रश्न को सुनकर मतंग ऋषि मुस्करा दिये और उन्होंने अपने एक शिष्य को धनुष लेकर आने के लिए कहा। शिष्य कुछ ही देर में धनुष लेकर आ गया। मतंग ऋषि ने धनुष लिया और उसकी डोरी ढीली करके रख दी।

अनंग ऋषि हैरानी से मतंग ऋषि को देखकर बोले, 'आपने धनुष की डोरी ढीली करके क्यों रखी? आप इसके माध्यम से क्या कहना चाहते हैं?' मतंग ऋषि बोले, 'मैंने तुम्हारे प्रश्न का जवाब दिया है। अब मैं इसे विस्तार से बताता हूं। हमारा मन धनुष की तरह है। अगर धनुष पर डोरी हमेशा चढ़ी रहे तो उसकी मजबूती कुछ ही समय में चली जाती है और वह जल्दी टूट जाता है, किंतु यदि काम पड़ने पर ही इस पर डोरी चढ़ाई जाए तो वह न सिर्फ अधिक समय तक टिकता है, बल्कि उससे काम भी अच्छे तरीके से होता है। इसी प्रकार काम करने पर ही मन को एकाग्र करना चाहिए। काम के बाद यदि उसे आराम मिलता रहे तो मन और अधिक मजबूत होगा। उसे स्फूर्ति मिलेगी। इससे वह लंबे समय तक स्वस्थ रहता है।'

मतंग ऋषि का जवाब सुनकर अनंग ऋषि हाथ जोड़कर बोले, 'मैं आपकी बात समझ गया। अब पता चला कि आप क्यों लगातार हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रहे हैं।' यह कहकर वह वहां से चले गए।

सीख : भागदौड़ की जिंदगी में अच्छे परिणामों के लिए तन, मन और मस्तिष्क को आराम जरूर दें।

सीख सुहानी

महात्मा ने दिया दान

सिंहगढ़ राज्य की सीमा के पास एक गांव सोनपुर में एक महात्मा अपने दो शिष्यों के साथ आ पहुंचे। वहां की शांति और हरियाली देख कुछ दिन वे वहीं ठहर गए।

एक दिन महात्मा जब भिक्षा मांगने जा रहे थे, उन्हें सड़क पर एक सिक्का दिखा, जिसे उठाकर उन्होंने झोली में रख लिया। दोनों शिष्य इससे हैरान थे। वे मन में सोच रहे थे कि काश सिक्का उन्हें मिलता, तो वे बाजार से मिठाई ले आते। महात्मा जी भांप गए। बोले- यह साधारण सिक्का नहीं है। मैं इसे किसी सुपात्र को दूंगा। पर कई दिन बीत जाने के बाद भी उन्होंने सिक्का किसी को नहीं दिया।

एक दिन महात्मा जी को खबर मिली कि सिंहगढ़ के महाराज अपनी विशाल सेना के साथ उधर से गुजर रहे हैं। महात्मा ने शिष्यों से कहा, वत्स! सोनपुर छोड़ने की घड़ी आ गई। शिष्यों के साथ महात्मा जी चल पड़े। तभी राजा की सवारी आ गई। मंत्री ने राजा को बताया कि ये महात्मा जा रहे हैं। बड़े ज्ञानी हैं। राजा ने हाथी से उतर कर महात्मा जी को प्रणाम किया और कहा, 'कृपया मुझे आशीर्वाद दें।'

महात्मा जी ने झोले से सिक्का निकाला और राजा की हथेली पर उसे रखते हुए कहा, 'हे सिंहगढ़ नरेश, तुम्हारा राज्य धन-धान्य से सम्पन्न है। फिर भी तुम्हारे लालच का अंत नहीं है। तुम और पाने की लालसा में युद्ध करने जा रहे हो। मेरे विचार में तुम सबसे बड़े दरिद्र हो। इसलिए मैंने तुम्हें यह सिक्का दिया है।' राजा इस बात का मतलब समझ गए। उन्होंने सेना को वापस चलने आदेश दिया।

सीख : जरूरतें पूरी हो सकती हैं, लेकिन लालच का कभी अंत नहीं होता।

भीखू

जितना दम उतना दिखाओ

कॉन्सेप्ट- **उन्नी**
ड्रॉइंग- **सिमि मुहम्मा**

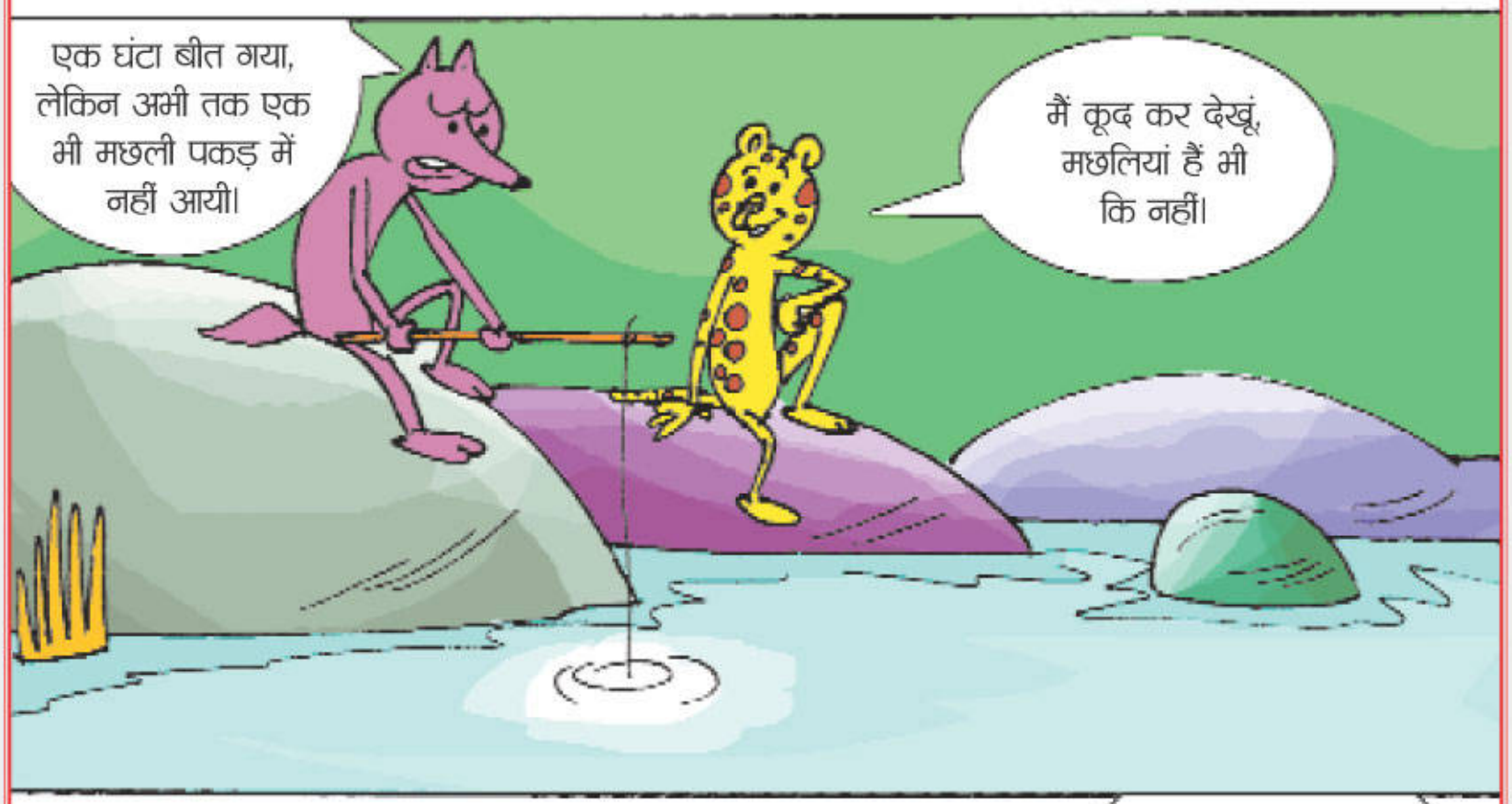

मन का आराम

मतंग ऋषि पशु-पक्षियों के प्रति काफी स्नेह रखते थे। अक्सर वह अध्ययन और ईश्वर उपासना के बाद पक्षियों के साथ खेलने लग जाते थे। गोरैया और कौवे उनके इशारे पर जमीन पर उतर आते और उनके कंधों व हाथों पर बैठ जाते थे।

एक दिन जब वे पक्षियों के बीच चहक रहे थे तभी अनंग ऋषि वहां आए। वह मतंग ऋषि का बहुत सम्मान करते थे। उन्हें पक्षियों के साथ खेलते देख वह बोले, 'महाराज, आप इतने बड़े विद्वान होकर बच्चों की तरह चिड़ियों के साथ खेल रहे हैं। इससे आपका मूल्यवान समय नष्ट नहीं होता?'

अनंग ऋषि के इस प्रश्न को सुनकर मतंग ऋषि मुस्करा दिये और उन्होंने अपने एक शिष्य को धनुष लेकर आने के लिए कहा। शिष्य कुछ ही देर में धनुष लेकर आ गया। मतंग ऋषि ने धनुष लिया और उसकी डोरी ढीली करके रख दी।

अनंग ऋषि हैरानी से मतंग ऋषि को देखकर बोले, 'आपने धनुष की डोरी ढीली करके क्यों रखी? आप इसके माध्यम से क्या कहना चाहते हैं?' मतंग ऋषि बोले, 'मैंने तुम्हारे प्रश्न का जवाब दिया है। अब मैं इसे विस्तार से बताता हूं। हमारा मन धनुष की तरह है। अगर धनुष पर डोरी हमेशा चढ़ी रहे तो उसकी मजबूती कुछ ही समय में चली जाती है और वह जल्दी टूट जाता है, किंतु यदि काम पड़ने पर ही इस पर डोरी चढ़ाई जाए तो वह न सिर्फ अधिक समय तक टिकता है, बल्कि उससे काम भी अच्छे तरीके से होता है। इसी प्रकार काम करने पर ही मन को एकाग्र करना चाहिए। काम के बाद यदि उसे आराम मिलता रहे तो मन और अधिक मजबूत होगा। उसे स्फूर्ति मिलेगी। इससे वह लंबे समय तक स्वस्थ रहता है।'

मतंग ऋषि का जवाब सुनकर अनंग ऋषि हाथ जोड़कर बोले, 'मैं आपकी बात समझ गया। अब पता चला कि आप क्यों लगातार हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रहे हैं।' यह कहकर वह वहां से चले गए।

सीख : भागदौड़ की जिंदगी में अच्छे परिणामों के लिए तन, मन और मस्तिष्क को आराम जरूर दें।

सीख सुहानी

महात्मा ने दिया दान

सिंहगढ़ राज्य की सीमा के पास एक गांव सोनपुर में एक महात्मा अपने दो शिष्यों के साथ आ पहुंचे। वहां की शांति और हरियाली देख कुछ दिन वे वहीं ठहर गए।

एक दिन महात्मा जब भिक्षा मांगने जा रहे थे, उन्हें सड़क पर एक सिक्का दिखा, जिसे उठाकर उन्होंने झोली में रख लिया। दोनों शिष्य इससे हैरान थे। वे मन में सोच रहे थे कि काश सिक्का उन्हें मिलता, तो वे बाजार से मिठाई ले आते। महात्मा जी भांप गए। बोले- यह साधारण सिक्का नहीं है। मैं इसे किसी सुपात्र को दूंगा। पर कई दिन बीत जाने के बाद भी उन्होंने सिक्का किसी को नहीं दिया।

एक दिन महात्मा जी को खबर मिली कि सिंहगढ़ के महाराज अपनी विशाल सेना के साथ उधर से गुजर रहे हैं। महात्मा ने शिष्यों से कहा, वत्स! सोनपुर छोड़ने की घड़ी आ गई। शिष्यों के साथ महात्मा जी चल पड़े। तभी राजा की सवारी आ गई। मंत्री ने राजा को बताया कि ये महात्मा जा रहे हैं। बड़े ज्ञानी हैं। राजा ने हाथी से उतर कर महात्मा जी को प्रणाम किया और कहा, 'कृपया मुझे आशीर्वाद दें।'

महात्मा जी ने झोले से सिक्का निकाला और राजा की हथेली पर उसे रखते हुए कहा, 'हे सिंहगढ़ नरेश, तुम्हारा राज्य धन-धान्य से सम्पन्न है। फिर भी तुम्हारे लालच का अंत नहीं है। तुम और पाने की लालसा में युद्ध करने जा रहे हो। मेरे विचार में तुम सबसे बड़े दरिद्र हो। इसलिए मैंने तुम्हें यह सिक्का दिया है।' राजा इस बात का मतलब समझ गए। उन्होंने सेना को वापस चलने आदेश दिया।

सीख : जरूरतें पूरी हो सकती हैं, लेकिन लालच का कभी अंत नहीं होता।

जितना दम उतना दिखाओ

कॉन्सेप्ट- उन्नी
ड्रॉइंग- सिमि मुहम्मा

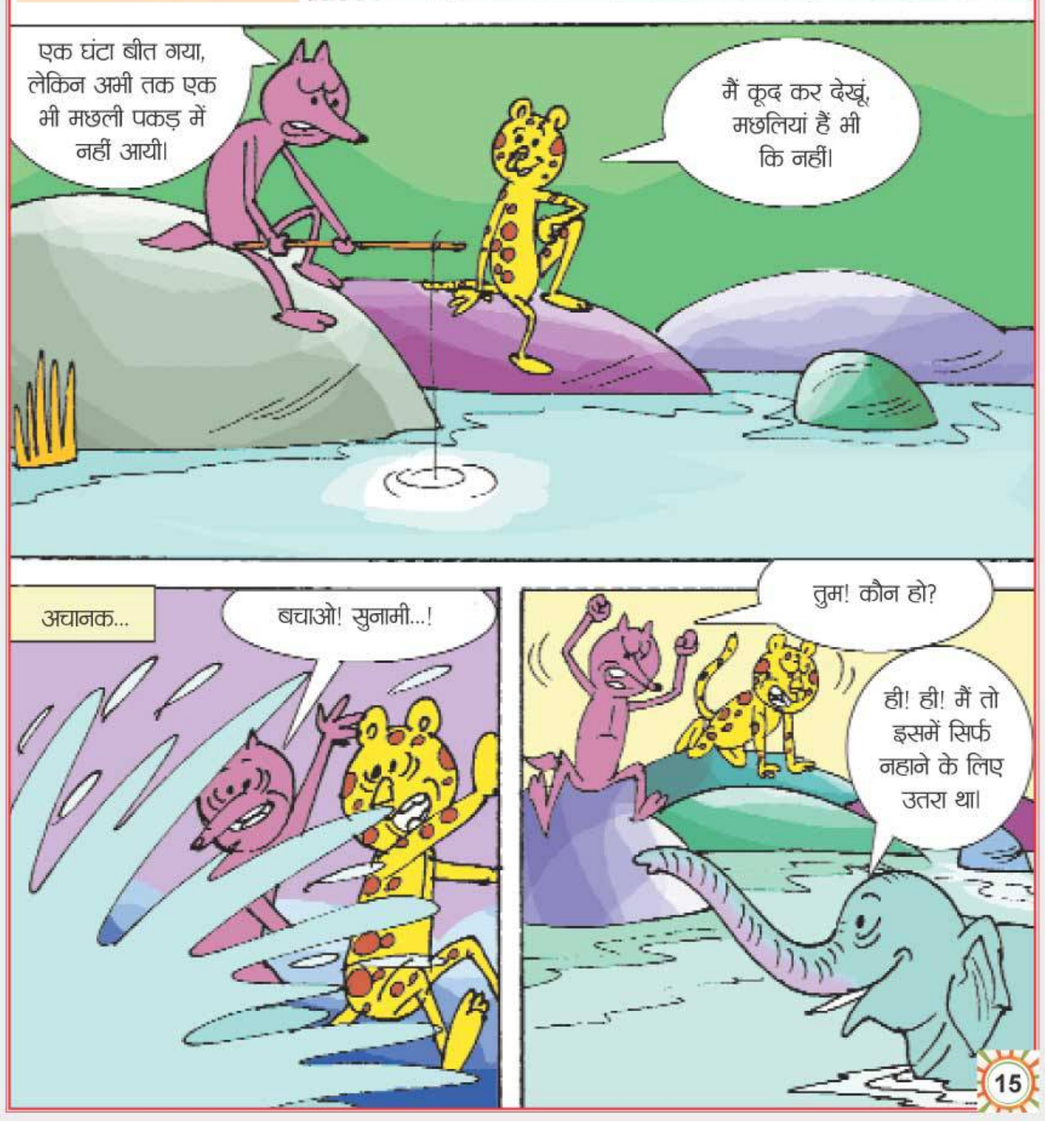

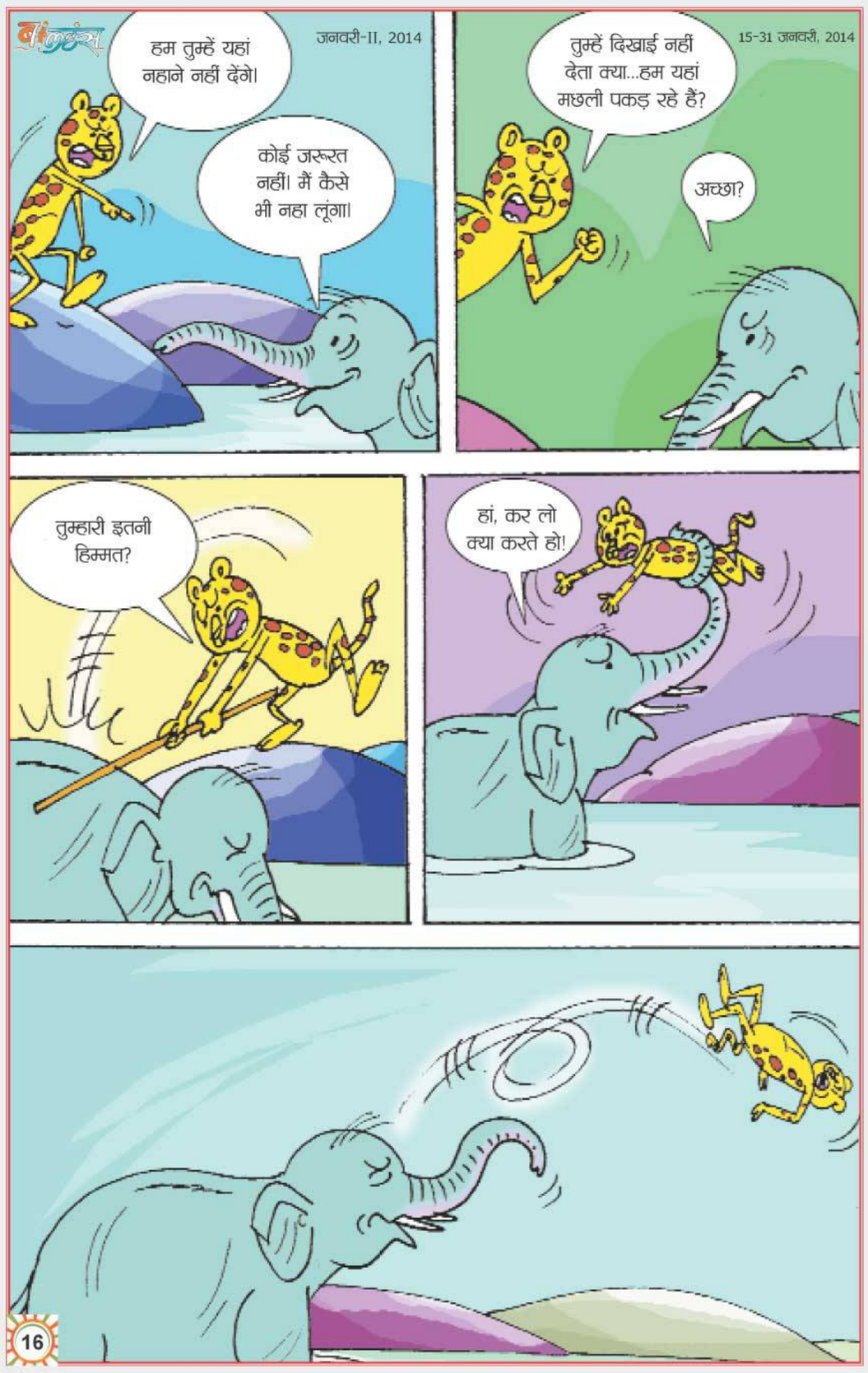

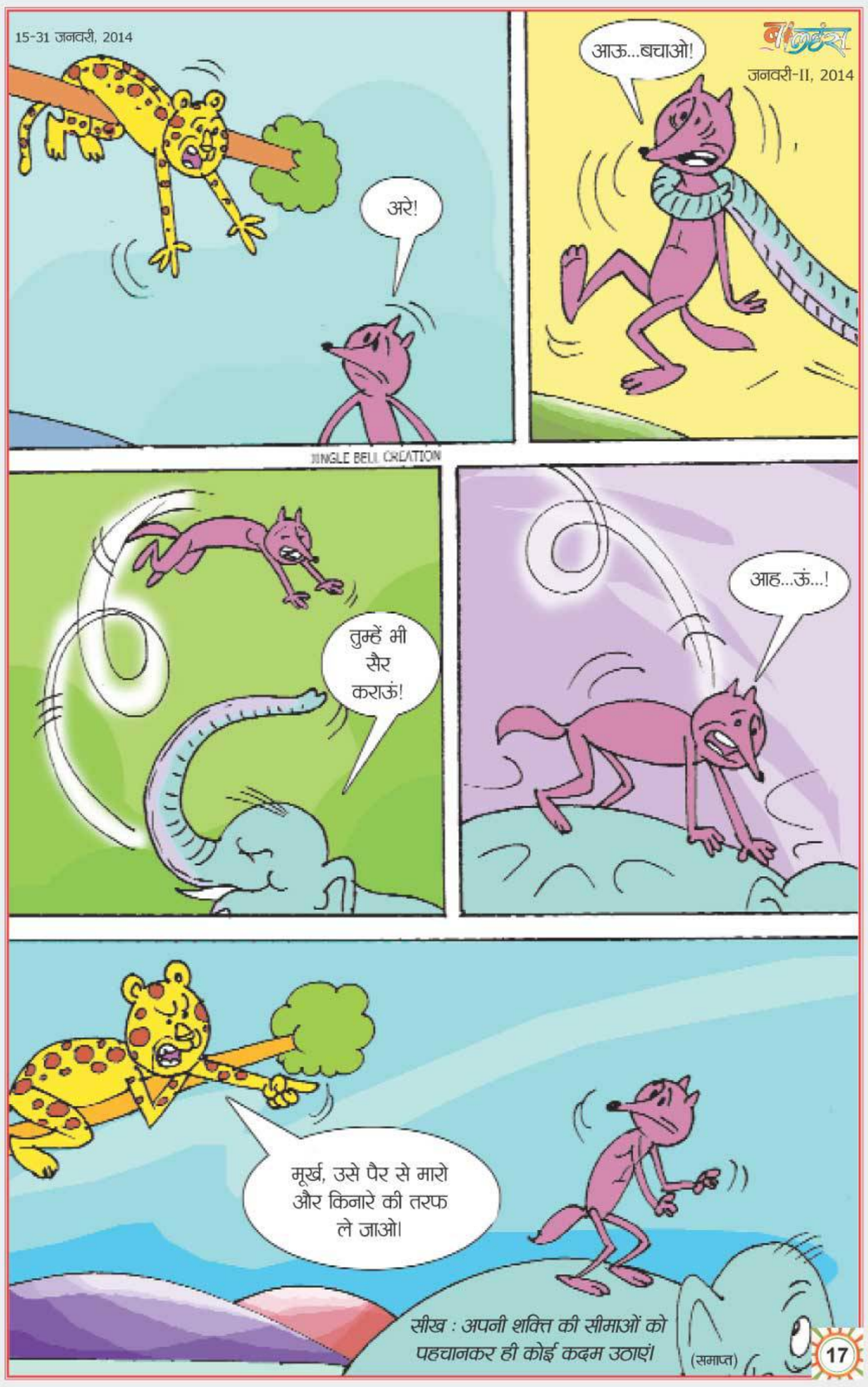

सीख : अपनी शक्ति की सीमाओं को पहचानकर ही कोई कदम उठाएं।

(समाप्त)

CMYK Farm 1 D

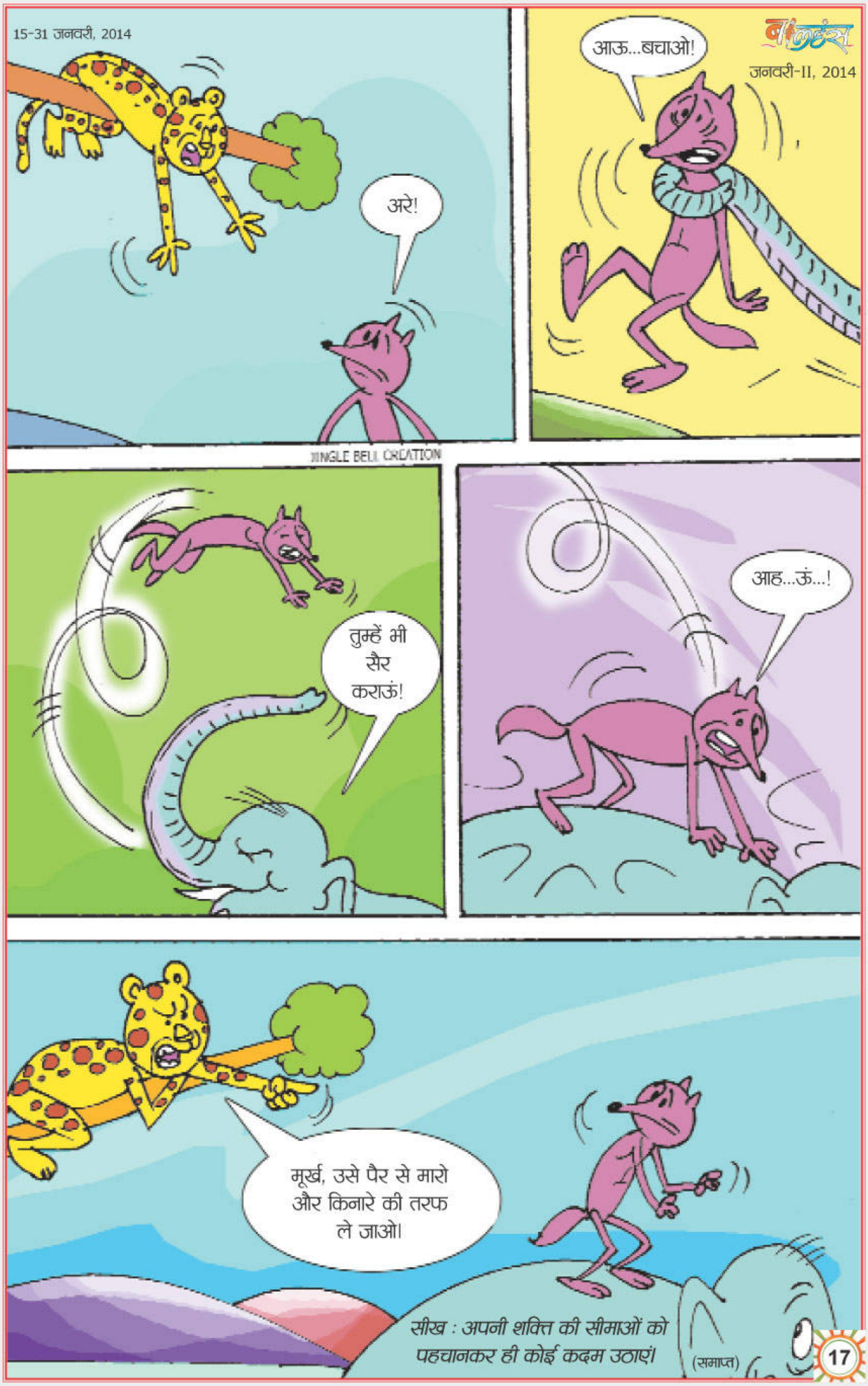
अरे!
आऊ...बचाओ!
JINGLE BELL CREATION
तुम्हें भी सैर कराऊं!
आह...ऊं...!
मूर्ख, उसे पैर से मारो और किनारे की तरफ ले जाओ।
सीख : अपनी शक्ति की सीमाओं को पहचानकर ही कोई कदम उठाएं।
(समाप्त)

नंबर wheel

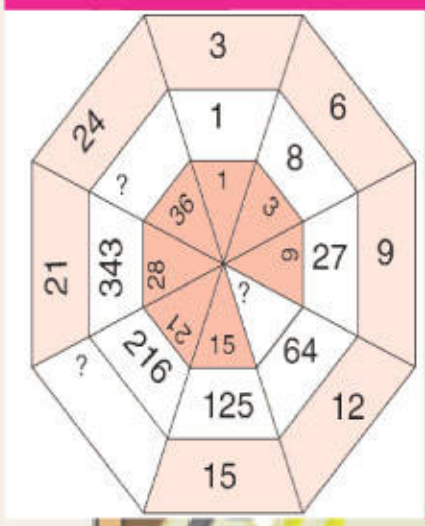

कैसे खेलें

नंबर व्हील को हल करने के लिए अपनी तर्क शक्ति का प्रयोग करें। यहां एक संख्या शृंखला दी गई है जो एक ही सिद्धांत के आधार पर क्रमबद्ध बढ़ती है। आपको उस शृंखला की लापता संख्या लिखनी है।

वर्ड web

कैसे खेलें

वर्ड वेब में उन दस देशों के नाम ढूंढिए, जहां मुस्लिम आबादी सर्वाधिक है। नाम ऊपर से नीचे और तिरछे भी हो सकते हैं।

भा	क	श	त	रं	ज	के	खि	ला	ड़ी	र
र	च	ल	प	व	जी	ग	द	इ	मा	ली
त	र	र्म	ल	र	छ	पु	रा	ट	ह	क
क	स	ज	कु	ह	व	न	लू	ल	म	क
क	क	दो	र्वा	म	लं	रि	तू	ग	कि	क
जी	क	ल	नी	कि	झ	पू	श	ण	सी	को
ती	ज	मा	न	त	प	दे	श	र	से	ल
क	ता	दा	ई	से	र	क	फ	लो	क	न
ने	बा	चे	न्न	प	जी	ल	री	ग	म	स्ता
द	पा	ल	श	व	दा	दा	ऐ	वें	न	शो
क	क	दे	प	ची	न	रा	बा	द	हीं	ले

नंबर pyramid

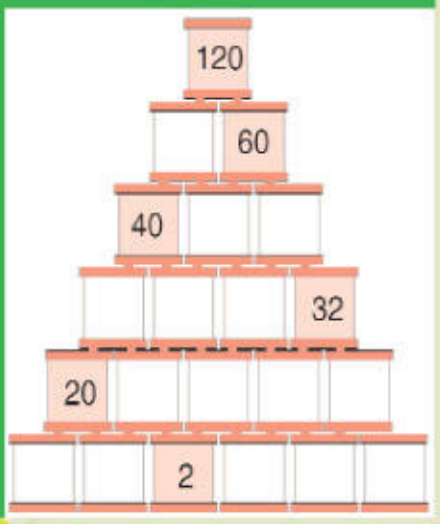

कैसे खेलें

नंबर पिरामिड बनाने के लिए प्रत्येक दो वर्गों की संख्या का योग उन दोनों वर्गों के ठीक ऊपर के वर्ग की संख्या से मेल खाना चाहिए।

180-degree

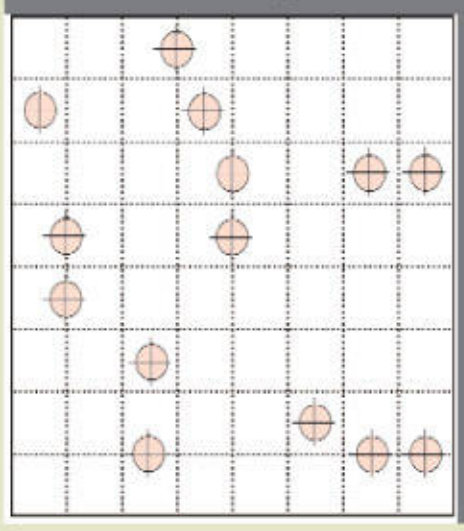

कैसे खेलें

पहेली को हल करने के लिए आप को ऐसी विभिन्न आकृतियां बनानी हैं जो गोलों के केंद्र बिंदु ऊपर से नीचे व दाएं से बाएं देखने पर एक जैसी ही नजर आएं। ध्यान यह रखना है कि गोले का एक ही बार प्रयोग हो व आकृतियां प्रत्येक वर्ग में भर जाएं।

नंबर wheel

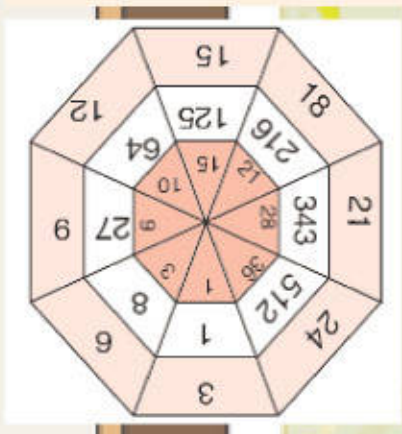

वर्ड web

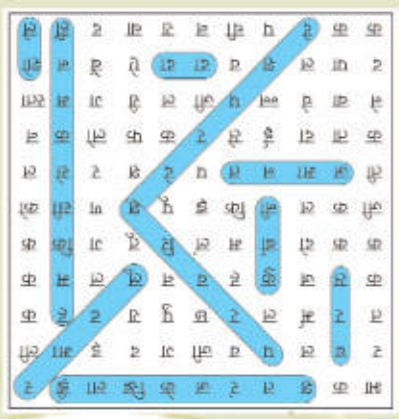

नंबर pyramid

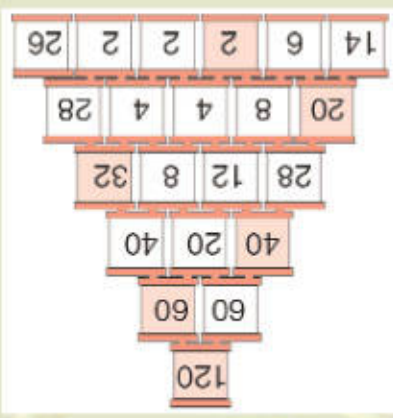

180-degree

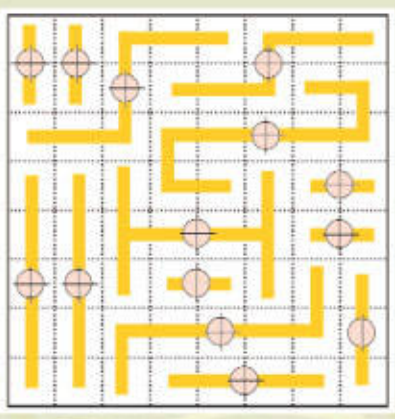

बूझो तो...!

1. जल से भरा एक
मटका
जो है सबसे ऊंचे लटका।
पी लो पानी है मीठा
जरा नहीं है खट्टा।

2. एक आंख पर जीव
नहीं हूं लंबी हूं पर सींक
नहीं हूं।
मेरे पीछे लंबी कतार
लेती हूं मैं चढ़ाव उतार।

3. फूल भी हूं, फल भी हूं।
और हूं मिठाई,
तो बताओ क्या हूं मैं भाई।

4. चौकी पर बैठी एक रानी,
सिर पर आग बदन में पानी।

5. अंत कटे तो नग बन जाऊं,
आदि कटे तो गर,
कट जाए यदि मध्य तो बन
जाता हूं नर।

6. लाल हूं, खाती हूं मैं
सूखी घास
पानी पीकर मर जाऊं।
जल जाए जो आए मेरे पास।

7. कान घुमाए बंद हो जाऊं
कान घुमाए खुल जाता हूं।
रखता हूं, मैं घर का खयाल
आता हूं मैं सब के काम,
कोई बताए मेरी नाम।

उत्तर 1. नारियल, 2. सूई, 3. गुलाबजामुन, 4. मोमबत्ती 5. नाहर, 6. अंगार 7. ताला

Illusion

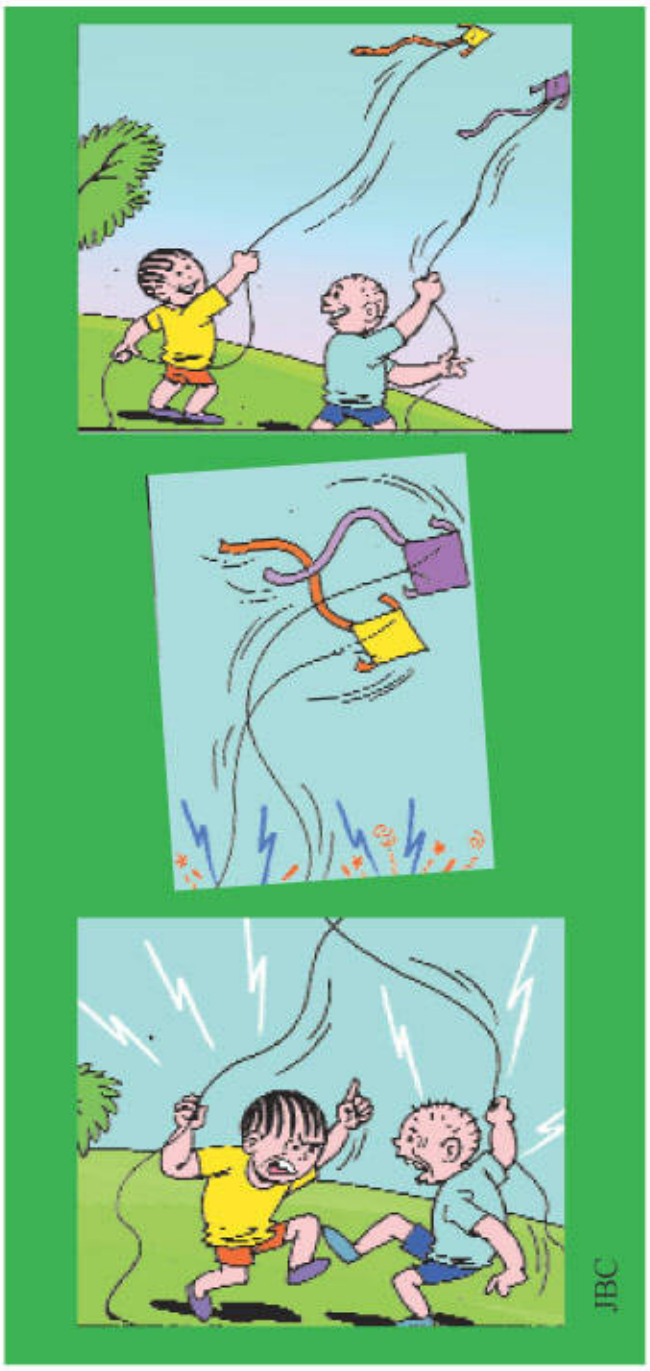

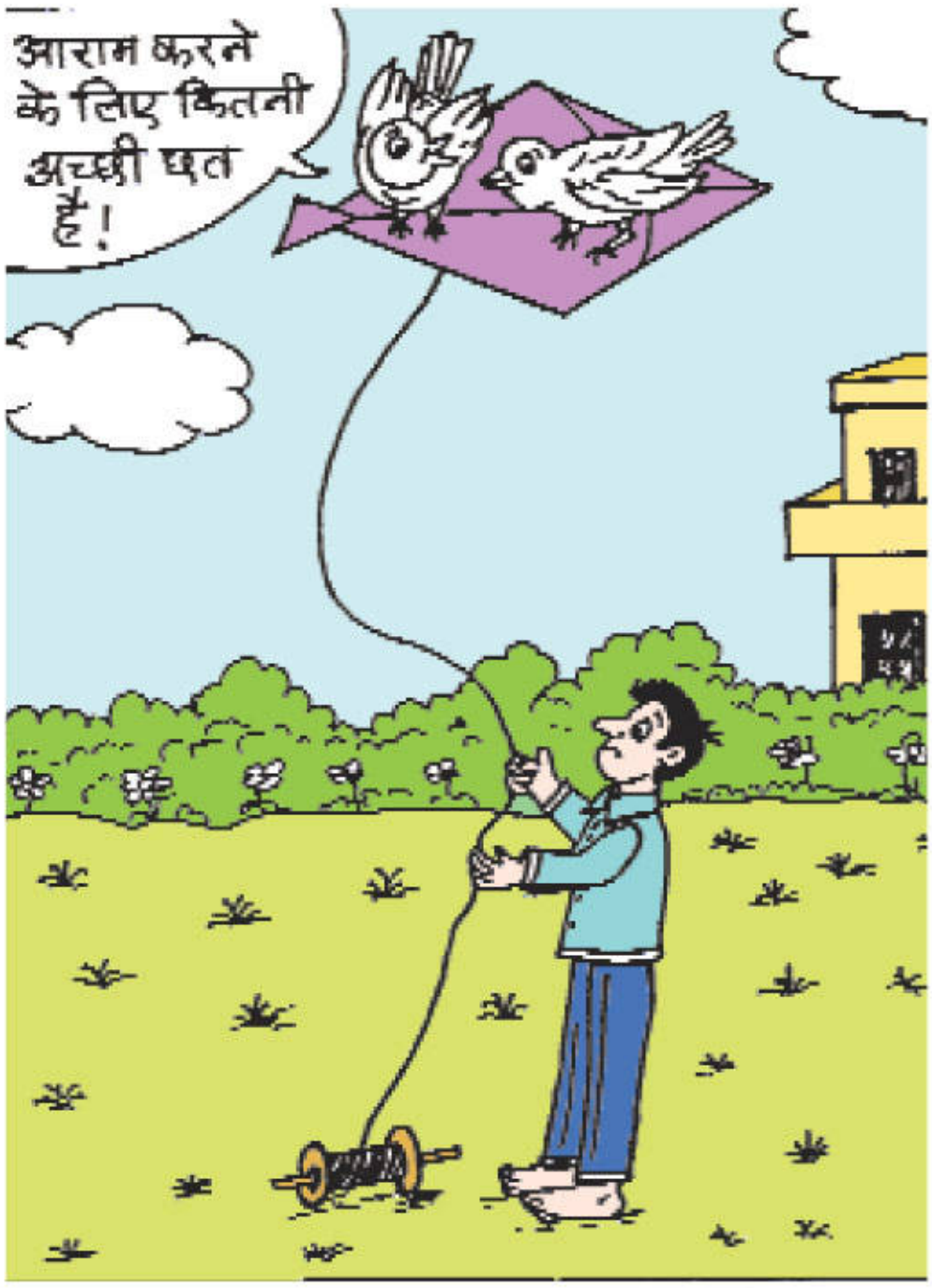

ऐसे भी उड़ी पतंग...

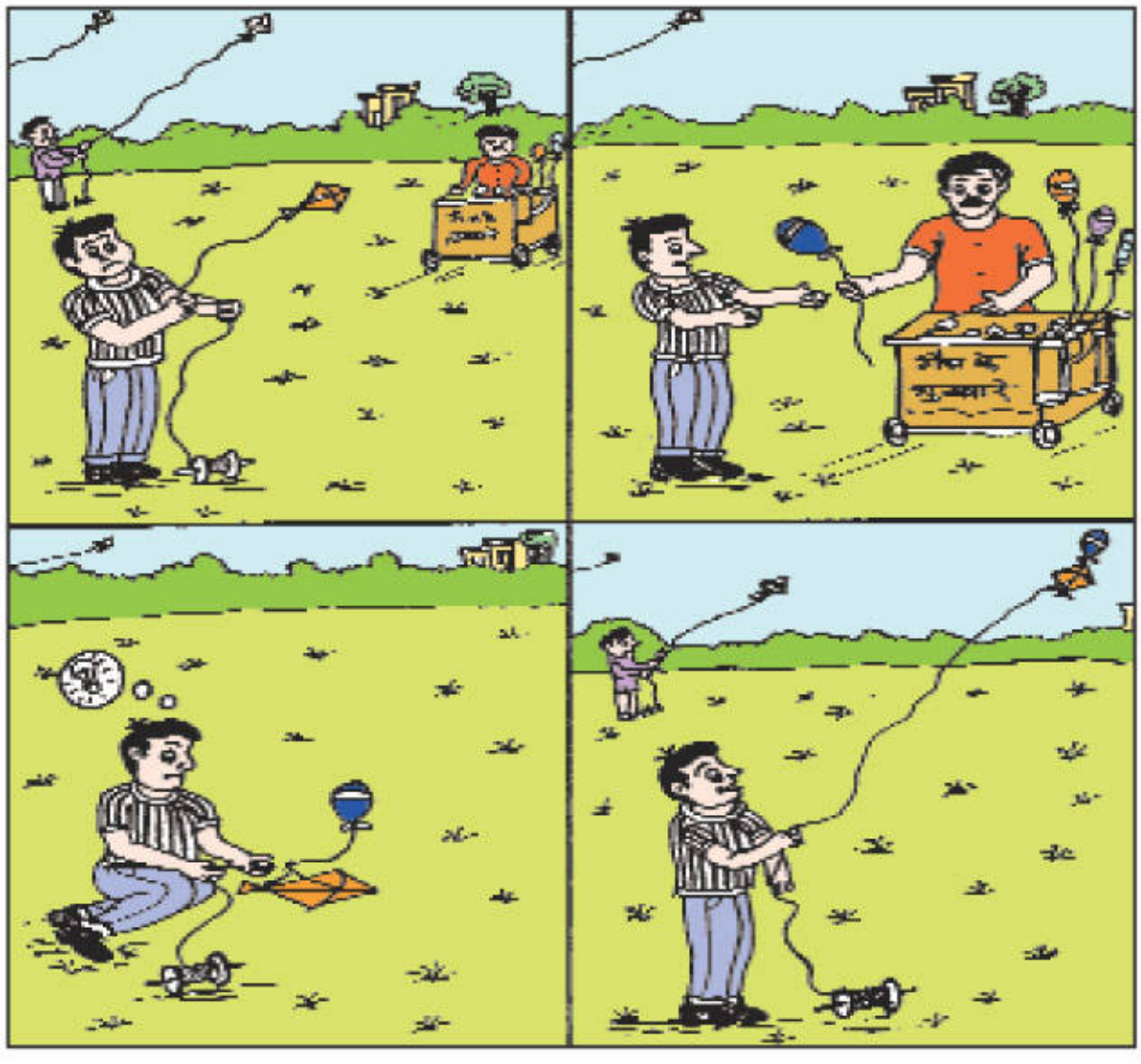

–राजेश गुजर

पतंग

चीन में माना जाता है कि ऊंची उड़ती पतंग को देखने से नजर अच्छी बनी रहती है।

जापान के पतंगबाज ने एक ही लाइन में सबसे ज्यादा 11,284 पतंगों को उड़ाने का रिकार्ड बना रखा है।

हर वीकेंड पर दुनिया के किसी न किसी भाग में 'काइट फेस्टिवल' होता रहता है।

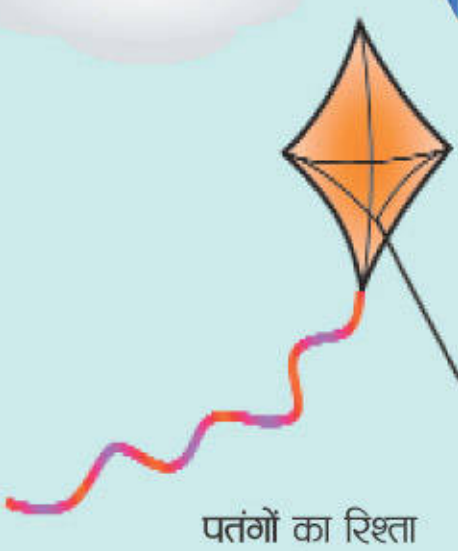

सबसे देर तक ऊंचाई पर पतंग उड़ाने का विश्व रिकॉर्ड है- 180 घंटे।

थाइलैंड में पतंगबाजी के दौरान 78 तरह के नियमों का पालन किया जाता है।

सर्वाधिक गति से पतंग उड़ाने का रिकॉर्ड है- 120 मील प्रतिघंटा।

बर्लिन की दीवार हटने से पहले पूर्वी जर्मनी में बड़ी पतंग उड़ाने पर बैन था। इससे शंका रहती थी कि कहीं उनके सहारे बर्लिन की दीवार पर कोई चढ़ न जाये।

पतंगों का रिश्ता हमारे देश के साथ बेहद खास है। चाहे 15 अगस्त हो या 14 जनवरी यानी कि मकर संक्रांति, हम भारतवासी पतंग उड़ाना नहीं भूलते। इन दो दिनों में तो इतनी पतंगें उड़ाई जाती है कि आकाश भी पतंगों से अट जाता है।

ईसा पूर्व चीन में पतंग उड़ाने की शुरुआत हुई थी। पहले संदेश आदान-प्रदान के लिए इसे उड़ाया जाता था। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि लगभग उसी काल में यूनान के एक व्यक्ति आरकाइट्स ने दुनिया की सबसे पहली पतंग का निर्माण किया था और इसी कारण पतंग को अंग्रेजी में काइट कहते हैं।

पतंगों का संबंध कई आविष्कारों से भी है। तुम्हें यह जानकर बेहद हैरानी होगी कि ऐरोप्लेन के आविष्कारक राइट ब्रदर्स ने पतंगों से काफी कुछ सीखा था। इतना ही नहीं बेंजामिन फ्रेंकलिन और मारकोनी ने भी पतंगों की प्रेरणा से बहुत कुछ आविष्कार किये। सन् 1883 में इंग्लैण्ड के डगसल आकिवेल्ड ने पतंगों के जरिए 1200 फीट की ऊंचाई पर बहती हवा की गति भी मालूम की थी।

पतंगें हल्की-भारी सभी तरह की होती हैं। वैसे तो पूरे देश में ही पतंगों का बोलबाला है, पर दिल्ली, लखनऊ, बनारस, पटना, आरा, जयपुर, अहमदाबाद व हैदराबाद की पतंगबाजी अधिक मशहूर है।

कागज की खोज होने से एक हजार साल पहले से पतंगें उड़ाई जा रही हैं।

दुनियाभर में बड़े बच्चों से अधिक पतंग उड़ाते हैं।

हमें तो पत्थर चाहिये

कोरमा सेनन बहुत ही दिखावा करने वाला और अहंकारी राजा था।
मंत्रीजी! मैं अपने राज्य के गरीबों को धन और कपड़े बाटूंगा।
यह तो बहुत ही अच्छा कार्य है, महाराज।
अब तुम जाकर इसकी घोषणा करवा दो।
क्या घोषणा करवाऊं महाराज?
यह घोषणा करवाओ कि बहुत ही धार्मिक-गुणी राजा कोरमा सेनन राज्य के गरीबों को जरूरत की वस्तुएं दान करेंगे।
...और इस प्रकार पूरे राज्य में घोषणा करवा दी गई।
महाराज! गरीब लोग महल के बाहर एकत्र हो गये हैं।
मैं उनके सामने जाता हूं।

मंत्रीजी! जब मैं गरीबों को दान देता रहूं, तब तुम हर बार मेरी जय-जयकार करवाते रहोगे।
आह...दान देने के कारण मैं बहुत थक गया।
फिर...
महाराज कोरमा सेनन की जय हो!
मेरी दानशीलता के बारे में पास के राजा-महाराओं ने भी सुना होगा। मैं सही कह रहा हूं ना मंत्री?
बिल्कुल सही है, महाराज!

हर गांव में मेरी दानशीलता के बारे में लिखकर पत्थर लगाना चाहिए।
जिससे आने वाली पीढ़ी को इसके बारे में पता चल सके।
हां, यह सही तरीका है।
इस तरह से...
पत्थर-शिलाएं तैयार हैं, महाराज।
कहां हैं, मुझे देखने हैं।
बहुत बढ़िया!
राजा कोरमा सेनन बहुत बड़े विद्वान थे।
उनका हर कोई बहुत सम्मान करता था।
राजा कोरमा सेनन बहुत ही दानशील थे।

और उसी समय पास के राज्य का एक दूत वहां आया।
महाराज! यदि आप इसकी आज्ञा दे तो हमारे महाराज आपके इन पत्थरों को खरीदने के लिए तैयार हैं।
देखो मंत्रीजी, मेरी प्रसिद्धि पास के राज्य में भी फैल गई।
अन्यथा दूसरे राज्य का राजा इनको क्यों खरीदता।
ऐसी बात नहीं है महाराज, हमारे राज्य में पत्थरों की सख्त कमी हो गई है।
हमें अस्तबल बनाने के लिए कुछ और पत्थरों की आवश्यकता है।
आऊ... क्या!?
(समाप्त)

देखने में यह अंडे की तरह है। पर ३.१ मीटर ऊंचा, १ मीटर चौड़ा और करीब चार टन वजन का दुनिया का सबसे बड़ा ईस्टर एग है। इस विशाल ईस्टर एग को बनाने में ख्त्र बेकरियों को दो ह□ते तक लगातार मेहनत करनी पड़ी। और करीब ७ किलोग्राम चॉकलेट का इस्तेमाल किया गया। इस विशालकाय चॉकलेट एग को बनाने के लिए लकड़ी के सांचे का इस्तेमाल किया गया। अंडाकार सांचे को आधार बनाकर उस पर चॉकलेट की मोटी परत चढ़ाई गई। इसे अर्जेन्टीना में बनाया गया।

पियानो मास्टर बिल्ली

जानवरों को अब तक हमने सर्कस में ही करतब दिखाते देखा है। मगर अब उन्होंने भी अपना दायरा बढ़ा लिया है। अमेरिका में नोरा नाम की एक बिल्ली पियानो बजाती है। वह भी एक ए□सपर्ट पियानोवादक के अंदाज में। पियानो को अपने पंजों से दबाने के दौरान कब तक सिर हिलाते रहना है, कब स्थिर करना है, यह सब उसे पता है। वह हॉलिवुड सेलिब्रिटी की तरह जिंदगी जी रही

घर घूमता है सूरज के साथ

सर्द मौसम में तन को गरमाहट देने वाली गुनगुनी धूप का आनंद ही कुछ और है। लेकिन हर घर का मुंह सूर्य की तरफ नहीं होता और जो घर सूर्य की तरफ होते भी हैं, वहां भी धूप कुछ ही घंटों बाद साथ छोड़ देती है। तब □ायाल आता है...कितना अच्छा होता यदि घर भी सूर्य की दिशा में घूमता जाता। ऐसे ही किसी □ायाल ने आस्ट्रेलिया के एक दंपती ने एक ऐसा घर बनाया है, जो सूरज के साथ-साथ घूमता है। ल्यूक और डेबी एवरिंगम नामक इस दंपती का विंघाम, न्यू साउथ वेल्स का घर पूरा च□कर घूम जाता है। घर को घूमने का काम करता है, घूम-च□कर (टर्न-टेबिल)। जिसके ऊपर घर बना है। इस अष्टकोणीय विशिष्ट इमारत के कमरे औसत से ज्यादा खुले-खुले हैं। इस घर को डिजाइन करने और बनाने में चार लाख पौंड का खर्चा आया

पहली महिला ट्रक ड्राइवर

देश और दुनिया में कई ऐसी महिलाएं हैं, जिन्होंने अपनी ताकत और हौसले के दम पर अपनी अलग पहचान बनायी है। इन्हीं नामचीन महिलाओं में से एक हैं एशिया की पहली महिला ट्रक चालक। पैंसठ वर्षीय पार्वती आर्य ने पहली ट्रक ड्राइवर बन कर अपने साथ प्रदेश का भी नाम रोशन किया है। इस जज्बे के लिए पार्वती आर्य को भोपाल समारोह में स□मानित किया गया। महिला ट्रक चालक के रूप में पार्वती का नाम गिनीज बुक विश्व रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है। इसके अलावा पार्वती दो बार पंचायत की सदस्य और मंदसौर जिला पंचायत की

गिनीज रिकॉर्ड्स

आपने करतब करने वालों को रस्सी पर चलते देखा होगा, लेकिन ये कुत्ता भी कम करामाती नहीं है। जनाब साढ़े तीन मीटर लंबी रस्सी को 18 सेकंड में पार कर लेते हैं।

ये है दुनिया की सबसे छोटी कार। साढ़े 63 सेंटीमीटर लंबी और 65.4 सेंटीमीटर ऊंची इस कार को एरिजोना के ऑस्टिन कॉलसन ने बनाया है।

नार्वे में खिंची गई यह तस्वीर एक मरे हुए मेढक की है, जो गिरते तापमान की वजह से जम गया है।

सन् 1769 में दुनिया में पहली बार कोई वाहन दुर्घटनाग्रस्त हुआ था। उसके पहले दुनिया में कोई भी वाहन दुर्घटना दर्ज नहीं की गई थी। आज भी उस कार को पेरिस में एक म्यूजियम में सुरक्षित रखा गया है।

जोहांसबर्ग

हीरे और सोने की खानों के लिए प्रसिद्ध जोहांसबर्ग दक्षिण अफ्रीका का सबसे बड़ा शहर है। क्षेत्रफल में बड़ा होने के साथ-साथ यह दक्षिण अफ्रीका का सबसे अधिक जनसंख्या वाला शहर भी है। अफ्रीका के सबसे विकसित इस शहर को नजदीक से देखने के लिए बहुत बड़ी संख्या में पर्यटक यहां आते हैं। यहां म्यूजियम बहुत हैं। जिनमें अपारथिद म्यूजियम, हेक्टर पीटरसन म्यूजियम, गोल्ड रीफ सिटी, जोहांसबर्ग आर्ट गैलरी मुख्य हैं। इसके अलावा भी यहां बहुत कुछ है पर्यटकों के लिए।

अपारथिद □यूजियम– यह □यूजियम जोहांसबर्ग में गोल्ड रीफ सिटी के पास स्थित है। इस □यूजियम में बीसवीं शता□दी के दक्षिण अफ्रीका के इतिहास को चित्रों के माध्यम से समझाया गया है।

हे□टर पीटरसन □यूजियम– यह जोहांसबर्ग का सबसे बड़ा □यूजियम है। यह □यूजियम औरलैंडो वेस्ट में स्थित है। यहीं पर हे□टर पीटरसन की हत्या की गई थी। इन्हीं के नाम पर बाद में इस □यूजियम का नाम हे□टर पीटरसन □यूजियम रखा गया था।

गोल्ड रीफ सिटी– गोल्ड रीफ सिटी जोहांसबर्ग में मनोरंजन का एक बहुत बड़ा केंद्र है। यह जोहांसबर्ग के सेंट्रल बिजनेस डिस्टि□ट में सोने की खान के पास स्थित है। यह पार्क सोने की खान थीम पर आधारित है।

यहां की सभी इमारतें तत्कालीन समय के अनुसार डिजाइन की गई हैं। इस पार्क में पर्यटक खदान से धातु निकाल कर सोना बनाने की प्रक्रिया देख सकते हैं।

सैर सपाटा

http://aida.ucoz.ru

जोहांसबर्ग जू- यह जोहांसबर्ग का सबसे बड़ा जू है। इस जू की स्थापना वर्ष क-ब में की गई थी। इस जू में जानवरों की करीब तीन हजार प्रकार की प्रजातियां हैं। यह जू विश्व के उन गिने-चुने जगहों में है, जहां सफेद शेर पाए जाते हैं। इस जू में साइबेरियन बाघ भी पाए जाते हैं। इस जू में जानवरों के लिए चिकित्सालय

जोहांसबर्ग आर्ट गैलरी- यह गैलरी जोहांसबर्ग के सेंट्रल बिजनेस डिस्टि□ट के जोबर्ट पार्क के पास स्थित है। इस आर्ट गैलरी की इमारत का डिजाइन एडवर्ड लुटियंस ने बनाया था। इस गैलरी में पन्द्रह प्रदर्शनी हॉल और एक हस्तशिल्प गार्डन है। इस गैलरी में क्त्रवीं शता□दी की डच पेंटिंग्स, क्त वीं और क-वीं शता□दी की ब्रिटिश पेंटिंग्स व क-वीं शता□दी की अफ्रीकन पेंटिंग्स रखी हुई हैं। इसके अलावा इस गैलरी में अन्य विभिन्न प्रकार की शैलियों की पेंटिंग्स भी रखी हुई हैं।

□यूजियम अफ्रीका- इसे अफ्रीकन □यूजियम के नाम से भी जाना जाता है। यह जोहांसबर्ग में स्थित एक ऐतिहासिक □यूजियम है। यह □यूजियम मार्केट थियेटर के पास स्थित है। इस □यूजियम की स्थापना वर्ष क-फ्फ ईस्वी में की गई थी। इस □यूजियम में प्राचीन अफ्रीकन संस्कृति से संबंधित वस्तुएं रखी हुई हैं। इस वस्तुओं में टोकने, संगीत यंत्र, बर्तन, कपाल आदि प्रमुख हैं।

मार्केट थियेटर- यह थियेटर जोहांसबर्ग के निचले भाग में एडवर्डियन बिल्डिंग में स्थित है। इस थियेटर की स्थापना वर्ष क-स्त्रम ईस्वी में हुई थी। यह जोहांसबर्ग का पहला ऐसा थियेटर था, जहां नस्लवाद नहीं था। इस बिल्डिंग में बाजार भी था। इसलिए इस थियेटर का नाम मार्केट थियेटर पड़ा। इसी थियेटर में पहली बार अश्वेत कलाकारों ने अपनी लोक कला का प्रदर्शन किया था।

नेल्सन मंडेला नेशनल □यूजियम- यह जोहांसबर्ग में आने वाले पर्यटकों का सबसे पसंदीदा स्थान है। यह पहले नेल्सन मंडेला का घर हुआ करता था। इसे ही बाद में □यूजियम में त□दील कर दिया गया। इस □यूजियम में नेल्सन मंडेला से संबंधित वस्तुओं को रखा गया है।

द साउथ अफ्रीकन □यूजियम ऑफ रॉक आर्ट- इस □यूजियम में पत्थर की न□काशीदार वस्तुओं को रखा गया है। इसमें से कुछ वस्तुएं तो आदिमानवों की हैं। यह □यूजियम येल रोड पर स्थित है।

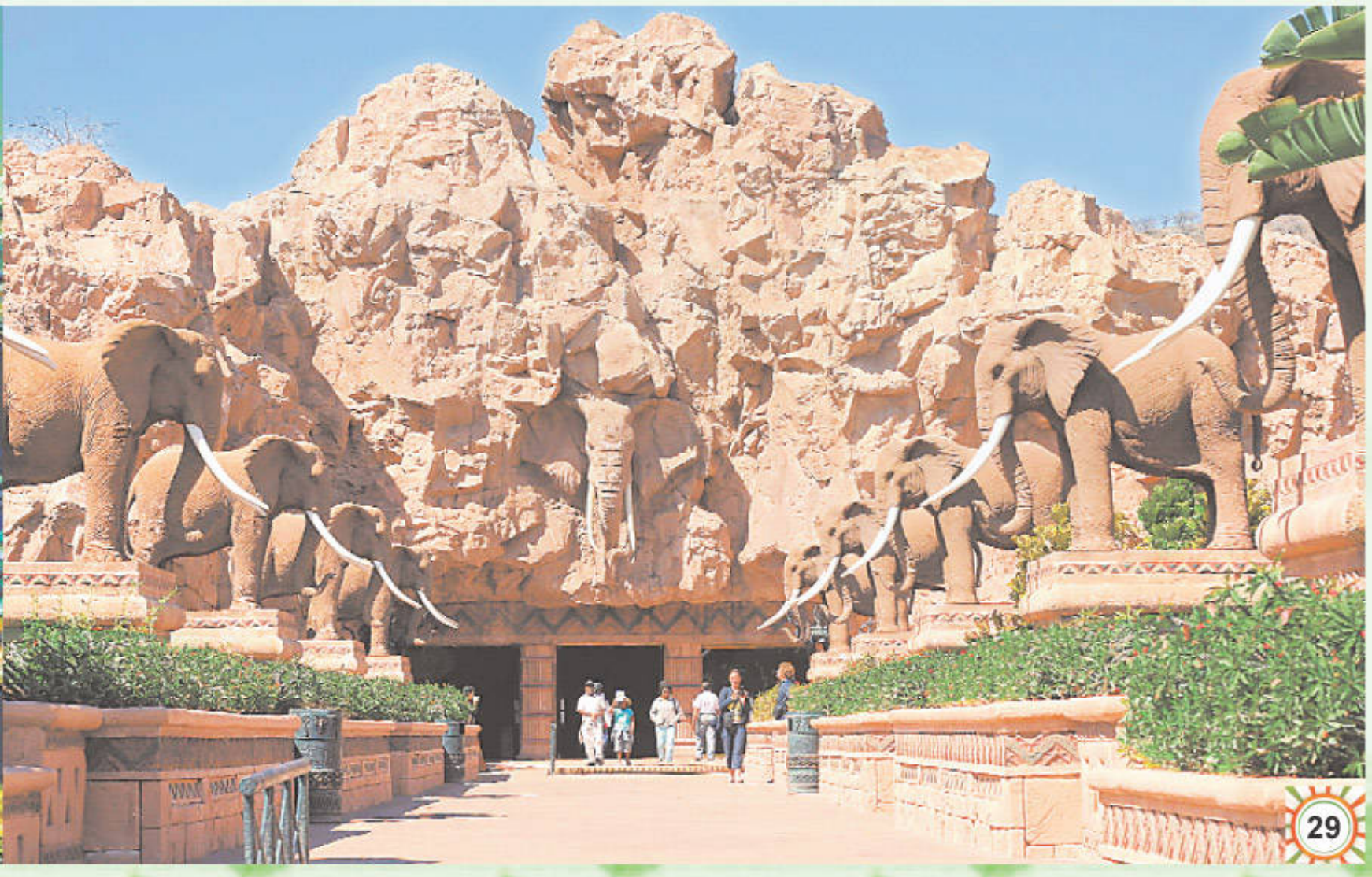

बालहंस के सितम्बर प्रथम, 2013 के अंक में हमने बालक-बालिकाओं के लिए विजन-2025 एक्टिविटी किट दिया था। हमें खुशी है कि कई प्रतियोगियों ने पूरे जोरशोर से इस किट को बहुत अच्छे तरीके से हल कर हमें भेजा है। चयनित दस प्रविष्टियों के विजेताओं को शीघ्र ही उनका पुरस्कार भेजा जाएगा।

किट के श्रेष्ठ जवाबों को संक्षिप्त रूप से यहां हम दे रहे हैं, जिससे अन्य बच्चे भी इससे लाभ उठा सकें। विजेताओं के अलावा जिन प्रविष्टियों में हमें उपयुक्त उत्तर मिले हैं, उन सबको मिले-जुले रूप में दिया जा रहा है।

विजन 2025- बालक और बालिकाओं का एक्टिविटी किट

विज़न 2025
जागो, जुड़ो देश गढ़ो
पत्रिका समूह

क *घर पर ये चीजें खाने को मिलती हैं, तो सबसे ज्यादा खुशी होती है?*

इस प्रश्न के जवाब में बच्चों ने घर पर बने पार□परिक खाने यथा, रोटी, चावल-दाल, खीर-पूड़ी, आलू-परांठा, हरी स□जयां, गाजर-मूली, अंकुरित अनाज, फल, सूखे मेवे, मिठाई, घी-दूध सहित अन्य पौष्टिक खाने को प्राथमिकता दी है। हालांकि बच्चों ने कभी कभार फास्ट फूड यानी मोमो, चाट, नूडल्स, केक, पिज्जा, चाऊमिन खाने के प्रति भी इच्छा जताई।

कल □या हो : भविष्य के लिए बच्चों ने शुद्ध, पौष्टिक,

ख *मुझे अपने दोस्तों के साथ सबसे ज्यादा मजा कब आता है?*

बच्चों को सबसे ज्यादा मजा स्कूल मध्यान्तर में खेलने, छुट्टियों में घूमने, मूवी देखने जाने, दोस्तों के साथ खेलने, पार्टी करने, कहानियां पढ़ने, क□प्यूटर चलाने, नई-नई जानकारियां जुटाने, दूसरों की सहायता करने, दोस्तों की आपस में अच्छाई-बुराई बताने में आनंद आता है।

कल □या हो : बच्चे चाहते हैं कि वे अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करें।

ज्यादा पढ़ाई करें और अपने कैरियर के बारे में सचेत रहने के साथ-साथ, सामाजिक सहयोग और भलाई के कार्य करते रहना चाहते हैं।

फ *मुझे अपने दोस्तों की ये आदतें बिल्कुल अच्छी नहीं लगतीं?*

अपश□द बोलना, चिढ़ाना, झूठ बोलना, एक-दूसरे की बुराई करना, निंदा करना, नकल करना, अस□य भाषा बोलना, चोरी करना, ज्यादा दिखावा करना, शेखी बघारना, अनावश्यक परेशान करना, बुरा बर्ताव करना, लड़ाई-झगड़ा करना, समय बर्बाद करना और ज्यादा टी.वी. देखना जैसी आदतें अच्छी नहीं लगतीं।

कल □या हो : भविष्य में हम एक-दूसरे की भावनाओं का स□मान करें। एक-दूसरे की कमियां बताएं। ईमानदार, सत्यवादी और निष्ठावान बनें।

स्वस्थ हंसी-मजाक करें, किसी को दुख नहीं पहुंचाएं, अच्छा व्यवहार करें, परेशानी में दोस्तों की सहायता करें और अपनी हॉबी को भी समय दें।

ढ *मौज-मस्ती के लिए मैं यह करता/करती हूं?*

इसके लिए हम मूवी, टी.वी. देखते हैं, गाने सुनते हैं, कहानियां-चुटकुले सुनाते हैं, गे□स खेलते हैं, परिवार के साथ घूमने जाते हैं, पापा-म□मी के साथ खेलते हैं, डांस से लेकर मनोरंजक पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते हैं।

कल □या हो : मौजमस्ती के लिए भविष्य की बात पर बच्चों को शॉपिंग मॉल से खरीदारी, रेस्टोरेंट में खाने-पीने में दिलचस्पी दिखी। कुछ बच्चों ने बड़ों-बुजुर्गों की सेवा में ही मौजमस्ती ढूंढना बताया।

भ *मुझे किन-किन बीमारियों से डर लगता है?*

खांसी-बुखार, जुकाम, मलेरिया, एनीमिया, कैंसर, एड्स, टी.बी., डायबिटीज, स्वाइन □लू, पीलिया, थैलीसीमिया, डायरिया, चिकनपॉ□स, स्किन, नेत्र संबंधी बीमारियों से डर लगता है।

कल □या हो : इस सवाल के जवाब में बच्चों ने कल के लिए कहा कि ऐसी दवा, स्प्रे आदि की खोज हो जिससे बीमारी जड़ से चली जाये। नकली दवाओं पर अंकुश लगे। दवाएं सस्ती मिलें और गांवों में भी सुलभ हों। योग, मेडिटेशन आदि करते हुए स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें।

म. मैं पढ़ाई करता/करती हूं, □योंकि? मैं बड़े होकर □या बनना चाहता हूं/ चाहती हूं?

अधिकांश बच्चों ने कहा कि वे टीचर, डॉ□टर, इंजीनियर, आईएएस बनकर देश की सेवा करना चाहते हैं। आत्मनिर्भर होने व जागरूक नागरिक बनने के लिए भी उन्होंने पढ़ाई को आवश्यक बताया।

कल □या हो : पढ़ाई नैतिकतापूर्ण हो। सभी को समान अवसर मिले। शिक्षा में टे□नोलॉजी का प्रयोग हो। शिक्षा सस्ती और सर्व-सुलभ हो।

स्र. मुझे स्कूल जाना □यों अच्छा लगता है?

□योंकि हम जाति-धर्म को भूलकर एक साथ पढ़ते, खेलते, खाते हैं। शिक्षक ज्ञानवर्द्धक जानकारी देते हैं। मित्रों से हम अपने विचार साझा करते हैं। ज्ञान, सद्गुण, नैतिकता, मित्रता बढ़ती है।

नवीन शैक्षणिक, खेल प्रतियोगिताओं-गतिविधियों में भाग लेते हैं। अच्छाई-बुराई की जानकारी मिलती है। अनुशासन का पाठ सीखते हैं। विद्यालय में ही संस्कारों की नींव मजबूत होती है।

कल □या हो : स्कूल में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दें। ऐसे विषय और पढ़ाई हो कि ज्ञान, नैतिकता, सद्गुणों को बढ़ावा मिले। नवीन शैक्षणिक गतिविधियों को बढ़ावा मिले। समय का सदुपयोग और जि□मेदारी का भाव बढ़े। गुरु के प्रति स□मान उ□रोतर बढ़ता रहे।

द. मुझे अपने स्कूल में □या कमियां लगती हैं?

बच्चों की रुचि के अनुसार कार्यक्रम नहीं होते। कुछ शिक्षकों की योग्यता कम होना। कई शिक्षक अपनेआप को समय व युग के हिसाब से अपटेड नहीं करते। स्कूल में सफाई नियमित नहीं होती। हवा-प्रकाश पानी की उचित व्यवस्था नहीं रहती। खेल के मैदान विकसित नहीं हैं। बच्चों की शिक्षकों द्वारा पिटाई करना भी ठीक नहीं लगता।

कल □या हो : मूलभूत सुविधाएं मिलनी चाहिए। प्रत्येक सप्ताह ऐसा होना चाहिए कि सीनियर बच्चे जूनियर बच्चों से आपसी चर्चा कर उनकी समस्याओं को सुनें। छात्र परिषद् का गठन हो।

योग्य शिक्षक हों। निर्धन बच्चों को मु□त शिक्षा मिले। स्कूलों में घुड़सवारी, एं□टंग आदि की कक्षाएं भी हों।

-. अगर मेरे स्कूल को दस हजार रुपए का पुरस्कार मिले, तो मैं इन पैसों को किस काम में लगाना चाहूंगा/चाहूंगी?

स्कूल के पुस्तकालय के लिए पुस्तकें खरीदेंगे। वृक्षारोपण करेंगे। स्कूल के रास्ते ठीक करवाएंगे। प्रतिभाशाली छात्रों के लिए सहायक पुस्तकें और अन्य सहायक सामग्री खरीदेंगे। क□यूटर-सीडी खरीदने में काम लेंगे। विकलांग बच्चों की सहायता में लगाएंगे। दरी-पट्टी, कुर्सी-मेज और स्कूल में जल-प्रबंधन में काम में लेंगे। गरीब बच्चों के यूनिफॉर्म, किताबें खरीदने और स्कूल में दाखिला दिलवाएंगे।

कल □या हो : पुस्तकालय में पुस्तकें बढ़ें। बच्चों के मानसिक के साथ शारीरिक व्यि□तत्व का विकास भी हो। □लॉक स्तर पर सामान्य ज्ञान, खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं। विद्यालय में बच्चों और शिक्षकों के लिए बैठने की उचित व्यवस्था हो। हर बच्चे को उसका हक मिले।

क. मेरे घर के आस-पास खेलने की जगह (मैदान/पार्क) आदि में □या कमियां हैं?

आवारा पशु चरते रहते हैं। मैदान में गंदगी रहती है। मैदान में कंकर-पत्थर, कांटे हैं। असामाजिक त□वों का जमावड़ा लगा रहता है। मैदान में खरपतवार उगी हुई है। पानी की कोई व्यवस्था नहीं है। खेलने की जगह बहुत कम है। मैदान में लड़के खेलते रहते हैं, लड़कियों के खेलने के लिए जगह नहीं होती। खेल उपकरण व झूले वगैरह नहीं हैं। गांवों में तो खेल के मैदान-पार्क ही नहीं हैं। मजबूरी में खेतों में खेलना पड़ता है।

कल □या हो : खेलने के लिए पार्क-मैदान विकसित किये जाएं। खेल मैदान में चारदीवारी बने। मैदान समतल-साफ हो। बच्चों को खेलने की पूरी सुविधा मिले। खेल-सामग्री उपल□ध हो।

क्क. स्मार्ट फोन और इंटरनेट के बारे में कुछ जानते हैं? यदि हां तो ऐसे □या उपकरण-गैजेट्स हैं जो मुझे भी चाहिए और □यों?

कई बच्चों के पास टैबलेट, स्मार्ट फोन, लैपटॉप और क□प्यूटर हैं। ये उनके लिए अध्ययन एवं जानकारी देने में सहायक हैं। साथ ही ऐसे भी विद्यार्थी हैं जिनको इनके बारे में अधिक जानकारी नहीं है। कई बच्चों को स्कूल में क□प्यूटर-इंटरनेट के बारे में सिखाया जाता है, लेकिन उनके स्वयं के पास या घर पर कोई भी गैजेट नहीं है।

कल □या हो : बच्चों को प्रारं□भक शिक्षा से ही क□प्यूटर का ज्ञान देना चाहिए। संभव हो तो बालक-बालिकाओं को नि:शुल्क क□प्यूटर-लैपटाप आदि उपल□ध कराएं। अपडेट रहने के लिए ये आवश्यक हैं। लेकिन पूरी तरह से इन पर आश्रित होना भी उचित नहीं है।

पृष्ठ फ्ब-फ्म पर जारी...

क्ख *मैं पढ़ने के लिए इन-इन गैजेट्स को काम में लेता/लेती हूं?*

इंटरनेट, कैलकुलेटर, लैपटॉप, क□प्यूटर, प्रोजे□टर से अध्ययन में सहायता लेते हैं। हालांकि कई बच्चे केवल पुस्तकें ही पढ़ते हैं, उनके पास इनकी सुविधाएं नहीं हैं।

कल □या हो : बच्चों के पास आधुनिक शैक्षिक उपकरण अवश्य हों। प्रत्येक सरकार की जि□मेदारी बनती है कि

क्फ *मेरी कक्षा में लड़के ज्यादा हैं या लड़कियां? (अगर लड़कियां कम हैं तो ऐसा होने की वजह □या है)*

लड़कों की सं□या ज्यादा है। ग्रामीण परिवेश में कई माता-पिता अपनी लड़कियों को अधिक नहीं पढ़ाते। स्कूल दूर होना भी एक प्रमुख कारण है। लड़कियों के प्रति नकारात्मक रवैया व नारी शिक्षा के प्रति उदासीनता रहती है। कई स्कूलों के बच्चों का कहना है कि हमारे यहां लड़के-लड़कियां बराबर हैं।

कल □या हो : हर लड़की को पढ़ने स्कूल भेजें। उन्हें भी लड़कों के बराबर ही दर्जा दें। स्त्री शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़े। स्त्री-पुरुष का भेद मिटे। लड़कियों के लिए अधिक से

क्ब *मेरे रोल मॉडल्स या आदर्श और उनकी खास बातें?*

ज्यादातर बच्चों ने महात्मा गांधी, विवेकानंद, मदर टेरेसा, डॉ. अ□दुल कलाम, किरण बेदी... जैसी शा□सयतों को अपना आदर्श बताया। वे इनकी ईमानदारी, काम के प्रति समर्पण, सच्चाई, दूरदर्शिता, अनुशासन आदि गुणों से प्रेरित थे। कई बच्चों ने अपने दादा-दादी, माता-पिता को भी अपना रोल मॉडल बताया।

कल □या हो : हर व्या□ित ईमानदार, परिश्रमी हो। दूसरों की मदद करें। नि:स्वार्थ भाव से सबकी सेवा-सहायता करें। सत्य-अहिंसा के मार्ग पर चलें, जिससे देश का भविष्य उज्ज्वल बनें। पर-हित में ही अपना जीवन लगाएं।

क्फ *मेरे घर और आसपास गंदा पानी, नदी-नाले और कचरे आदि की □या हालत है?*

सड़कें टूटी हुई हैं, गड्ढ़ों में पानी भरा रहता है। आवारा पशु गंदगी फैलाते रहते हैं। कूड़ेदान नहीं हैं। रोजाना सफाई कर्मचारी नहीं आते। पीने का पानी दूषित है। गंदगी के कारण क्षेत्र में बीमारियां बढ़ रही हैं। नियमित कचरा नहीं उठाया जाता।

कल □या हो : घरों के आसपास सफाई रखें। नदी-नालों की नियमित सफाई हो। शुद्ध पानी की व्यवस्था हो। कचरे का निस्तारण और गंदे पानी की निकास की सही व्यवस्था हो। उचित सीवरेज व्यवस्था हो। संबंधित व्या□ित-विभाग जि□मेदारी से काम करें।

क्म *कई सरकारी विभाग/सरकार में काम करने वाले लोग बालक-बालिकाओं और किशोर-किशोरियों के स्वास्थ्य/शिक्षा/ सुरक्षा विकास के लिए हैं। इनमें से किसके बारे में जानते हैं?*

बच्चों ने मु□य रूप से सर्व शिक्षा अभियान, स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, आंगनबाड़ी केन्द्र, समाज कल्याण विभाग, यूनिसेफ, पुलिस, बालश्रम विभागों के नाम गिनाए।

कल □या हो : देश का हर बच्चा सरकारी विभागों की योजनाओं की जानकारी रखे। बच्चों को यदि इनके बारे में जानकारी नहीं हो तो स्कूलों में शिक्षकों द्वारा बताया जाना चाहिए।

स्वयं सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों को उनके हित में किये जा रहे कार्यों को अंजाम देने वाले विभागों की जानकारी हो।

क्न *ट्यूशन और कोचिंग का प्रचलन □यों बढ़ता जा रहा है?*

इसलिये कि शिक्षक अपने कर्तव्य का पालन ईमानदारी से नहीं कर रहे हैं। स्कूलों में गुणव□ापूर्ण पढ़ाई नहीं हो रही है, जिसके चलते बच्चे परीक्षा में अच्छे अंक नहीं ला पाते और वे ट्यूशन-कोचिंग की शरण में जाते हैं। माता-पिता के पास पढ़ाने का समय नहीं होता। स्कूलों की तुलना में ट्यूशन-कोचिंग में अच्छी और वैज्ञानिक तरीके से पढ़ाई करवाई जाती है।

कल □या हो : स्कूलों में शिक्षा की गुणव□ा पर ध्यान दिया जाए। शिक्षक ईमानदारी से पढ़ाएं। ट्यूशन-कोचिंग पर पाबंदी लगे।

क्प *ईश्वर से आपको कोई एक बात कहनी या पूछनी हो तो वो □या होगी?*

इतनी अच्छी दुनिया बनाई तो फिर सभी लोगों में सच्चाई-ईमानदारी □यों नहीं डाली। समाज से चोरी, डकैती, भ्रष्टाचार, अपहरण, गंदे कृत्य, गरीबी को जड़ से समाप्त कर दें। मुझे एक अच्छा इंसान बनने की शा□ित दे। ईमानदार व्या□ित को अधिक परेशानियों □यों उठानी पड़ती हैं!

कल □या हो : लड़के-लड़कियों में समानता का भाव हो। दहेज प्रथा पूरी तरह से बंद हो। सभी के दिलों में प्यार हो। ईर्ष्या, घृणा, द्वेष से बचें। देश की बड़ी समस्याओं से निजात मिले। लोगों का जीवन खुशहाल हो। रिश्वतखोरी मिटे, महिलाएं समाज में सुरक्षित रहें।

क-. *मेरे आसपास ऐसी कौनसी जगहें, सुविधाएं, सेवाएं या चीजें हैं जो मेरे इलाके में खास हैं। जो यहां की पहचान भी हैं?*

बाग-बगीचे, रेलवे स्टेशन, स्कूल, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, ऑडिटोरियम, बावड़ी, गढ़, पैलेस, सागर, चित्रशाला, फैक्ट्रियां, मंदिर, ऐतिहासिक धरोहरें।

कल क्या हो : रेल आवागमन बढ़े। गांवों-शहरों में उच्च शैक्षणिक संस्थान खुलें। गांवों में बैंक, अस्पताल, कॉलेज, कारखाने खुलें। शहरों में पर्यटकों के लिए सुविधाएं बढ़े। हवाई अड्डे बनें। शहरी यातायात आसानी से उपलब्ध हो।

विज़न 2025
जागो, जुड़ो देश गढ़ो
पत्रिका समूह

ख *मैं आने-जाने के लिए किस पब्लिक ट्रांसपोर्ट/सार्वजनिक वाहन का उपयोग करता हूं/ करती हूं?*

साइकल, बाइक, ऑटो रिक्शा, स्कूल बस, निजी-सरकारी बस, रेलगाड़ी।

कल क्या हो : वाहनों का प्रयोग कम करें, साइकल का प्रयोग करें। पैसा भी बचेगा और प्रदूषण भी नहीं होगा। स्वास्थ्य भी बना रहेगा। पैदल चलने को प्राथमिकता दें। बैटरी से चलने वाले वाहनों का प्रयोग शुरू हो।

ख्क *मेरा पसंदीदा मनोरंजन का साधन (पसंद के मुताबिक इन्हें क से क्क तक अंक दें)।*

इसमें अधिकतर बच्चों ने कविता कहानी की किताब, अखबार पढ़ना, खेल, रेडियो, टीवी, फिल्म, संगीत, कम्प्यूटर, मोबाइल, नृत्य, थियेटर-नाटक के क्रम को प्राथमिकता दी है।

कल क्या हो : महान व्यक्तियों से प्रेरणा लें। अखबार नियमित पढ़ें। अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ें। बुद्धिजीवी व्यक्तियों से मिलकर ज्ञान प्राप्त करें। खेल भी खेलें। जीवन में अच्छा आचरण करें।

ख्ख आपका प्रश्न :

बच्चों ने कई प्रश्नों की झड़ी लगा दी है। देश में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया है इसकी वजह क्या है? कोई ज्यादा खाने से मर रहा है तो कोई भूख से क्यों? पर्यावरण संरक्षण के लिए हम क्या कर रहे हैं? गंदी राजनीति से देश के नेता कब ऊपर उठेंगे? महंगाई, भ्रष्टाचार, बलात्कार के लिए सख्त कानून क्यों नहीं बनाए जा रहे? बड़े-बूढ़ों का हम उचित सम्मान क्यों नहीं करते? हम स्वार्थी-धोखेबाज क्यों होते जा रहे हैं? लड़कियों-महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार क्यों कर रहे हैं? हमारे देश में पुलिस इतनी सुस्त क्यों है? बच्चों में नैतिक मूल्य कम क्यों हो रहे हैं?

कल क्या हो : बच्चों को कॉलेज शिक्षा की जानकारी भी स्कूल में ही दी जानी चाहिए। हमें अपने नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए। देश के युवाओं को शिक्षित-संस्कारित होना चाहिए। नारी-सम्मान को बढ़ावा दें और शिक्षित करें। हमें एक बेहतर संस्कारित, शांतिपूर्ण समाज के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। भ्रष्ट नेताओं-अधिकारियों को सख्त से सख्त सजा दी जानी चाहिए। सुखद भविष्य के लिए पर्यावरण संरक्षण करें। धनी लोग गरीब लोगों की मदद

आपका स्पेस- आपकी जगह :

जो कुछ रह गया- वो यहां अपनी तरह से लिख, बना सकते हैं। अपने सपने, चाहतें, जरूरतें आदि। अपने आस-पास की दुनिया में बदलाव और उसे अच्छा बनाने के आइडियाज भी शामिल कर सकते हैं।

-समाज में ऊंच-नीच न हो। शासन-सत्ता ईमानदार हो। सभी को शिक्षा मिले। सकारात्मक सोच रखें। साफ-सुथरा समाज हो।

-प्रशंसा का गुण रखें। देश-समाज को प्रदूषणमुक्त रखें। समाज में भाईचारे को बढ़ावा दें। युवा अपने कर्तव्य को समझें। अनावश्यक समय नष्ट न करें। समाज में साम्प्रदायिकता की कोई जगह न हो। आरक्षण समाप्त हो। सभी योग्यजनों को समान अवसर मिलें। रिश्वत से दूर रहें। कर्मठ बनें।

-माता-पिता का सहारा बनें। खुशहाल समाज का निर्माण करें। देश में भ्रष्टाचार, भय, भेदभाव, चोरी, डकैती न हो।

-देश की धरोहरों-विरासतों का संरक्षण हो। सभी को समान अधिकार मिले। सभी अपने कर्तव्यों व दायित्वों के प्रति ईमानदार रहें। प्रेम, भाईचारा, नैतिक गुणों में इजाफा हो।

-देश-समाज की उन्नति के लिए हमेशा भरसक प्रयास करते रहें। धरती को हरा-भरा बनाएं। विज्ञान का सदुपयोग करें।

-तेल, पानी, खाद्य सामग्री व्यर्थ न गंवाएं। जीवन में हमेशा ज्ञान प्राप्त करते

विजेता

क. प्रेम कुमार कमल, सरसौल, कानपुर देहात (उ.प्र.)
ख. अंकिता वर्मा, वाराणसी (उ.प्र.)
फ. जरीन फातिमा, मुड़िला सिद्धार्थ नगर (उ.प्र.)
ब. भव्य गुप्ता, अबोहर (पंजाब)
भ. वैभव गुप्ता, पाली मारवाड़ (राज.)
म. मनीषा सुथार, संघर, सूरतगढ़(राज.)
स्र. विकास शर्मा, हुड़िना, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)
त्त. स्वप्निल शर्मा, बूंदी (राज.)
-. दीपिका गौड़, अलवर (राज.)
क. चारूता गुप्ता, पिथरिया पोखरी, (उ.प्र.)

प्यारी

उड़ी-उड़ी रे लाल पतंग
खुशियों की टकसाल पतंग।
घर से निकली जैसे गुड़िया
बिना परों के उड़ती चिड़िया।
चले मटकती चाल पतंग
खुशियों की टकसाल पतंग।
लगे पास से थाली जैसी
ऊपर जाकर प्याली जैसी।
फिर मसूर की दाल पतंग

आसमान में चली पतंग

आसमान में चली पतंग
कितनी है मनचली पतंग।
बांध गले में अपने डोर
नाचा हम सबका मन मोर।
किया सभी ने मिल हुड़दंग
आसमान में चली पतंग।
पीली, नीली, लाल, सफेद
बस रंगों का ही है भेद।
आसमान में करने छेद
आसमान में चली पतंग।
चन्दा मामा का कुछ हाल
लेने भेज रहे तत्काल,
बड़ी पतंगें संध्या काल।
हम बच्चे हैं, बड़े दबंग
आसमान में चली पतंग।

–डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

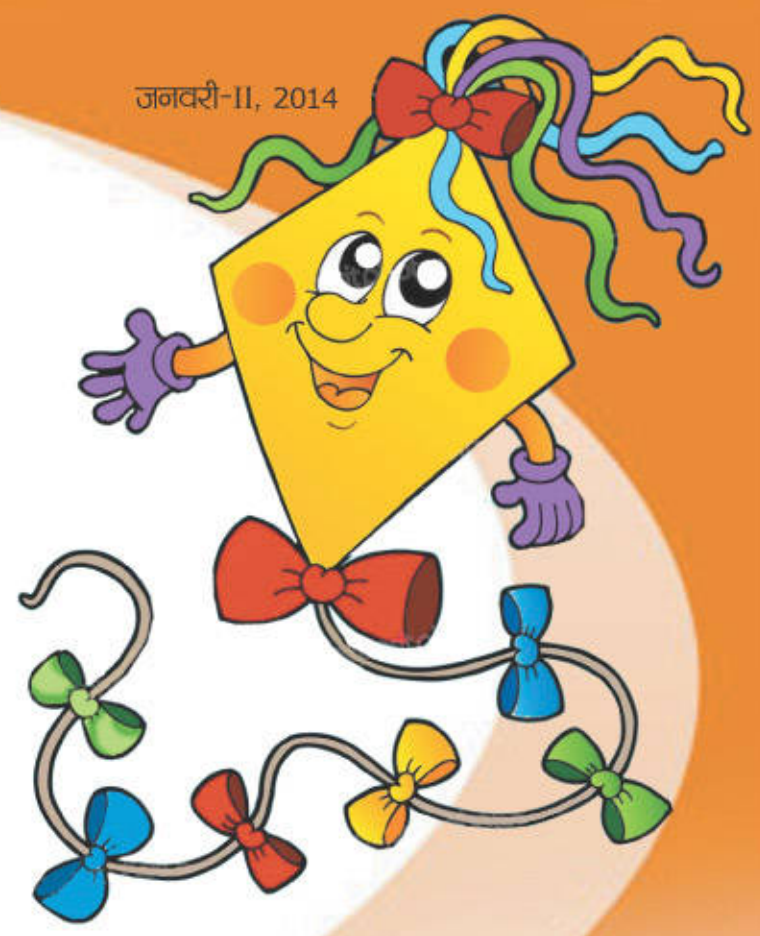

पतंग

खुशियों की टकसाल पतंग।
किरण उसे गहने पहनाये
और हवा घुंघरू दे जाये।
नाचे दे दे ताल पतंग
खुशियों की टकसाल पतंग।
भूल गये सब खाना-पीना
इसके बिना कहां का जीना।
करती कैसा हाल पतंग
खुशियों की टकसाल पतंग।

–अब्दुल मलिक खान

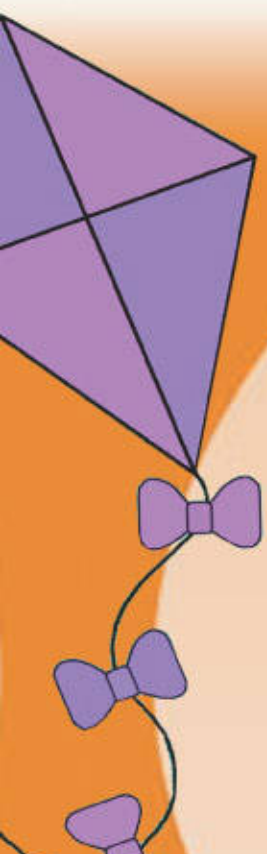

मुझको पतंग बहुत भाती है

रंग-बिरंगी चिड़िया जैसी,
लहर-लहर लहराती है।।

कलाबाजियां करती है जब,
मुझको बहुत लुभाती है।।

इसे देखकर मुन्नी-माला,
फूली नहीं समाती है।।

पाकर कोई सहेली अपनी,
दांव-पेंच दिखलाती है।।

बहुत कष्ट होता तब मुझको।
जब पतंग कट जाती है।।

–डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

क्रैजी किया है

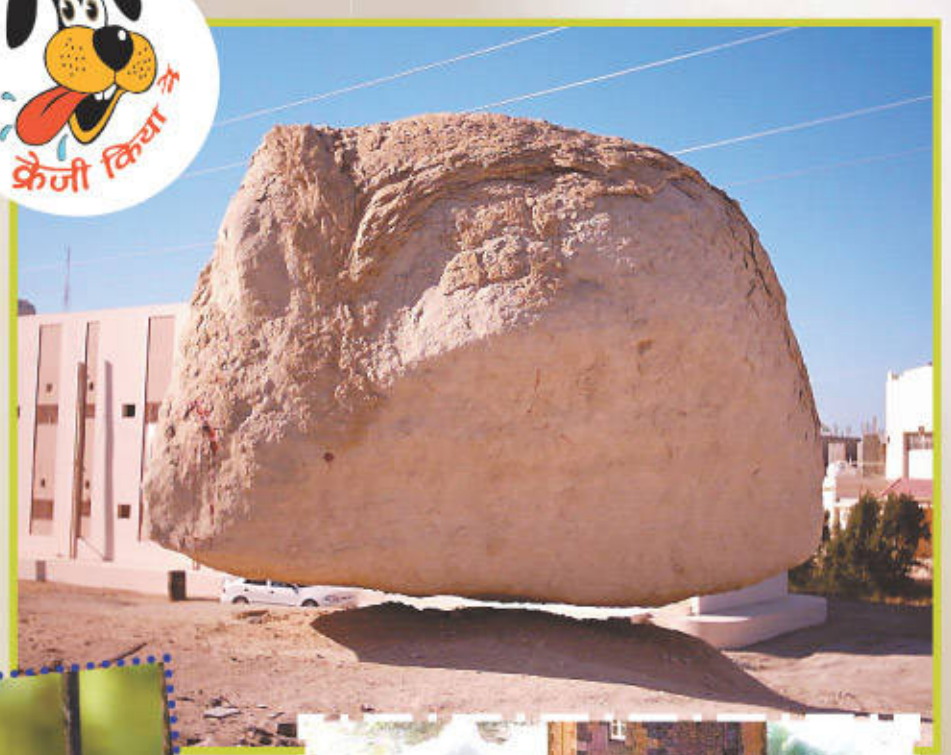

सुविचार

किसी भी टूटी चप्पल और फटे-गंदे कपड़े पहने इंसान को गरीब न समझें, वो इंजीनियर भी हो सकता है।

जनहित में जारी

Rishta Joke

एक आदमी– "तुम्हारा इस लड़के से क्या रिश्ता है?"
लड़का– "जी! बहुत दूर का रिश्ता है।"
आदमी– "फिर भी क्या रिश्ता है?"
लड़का– "जी! वह मेरा सगा भाई है।"
आदमी– "तो तुम इसे दूर का रिश्ता क्यों बताते हो?"
लड़का– "क्योंकि इसके और मेरे बीच सात भाई और है।"

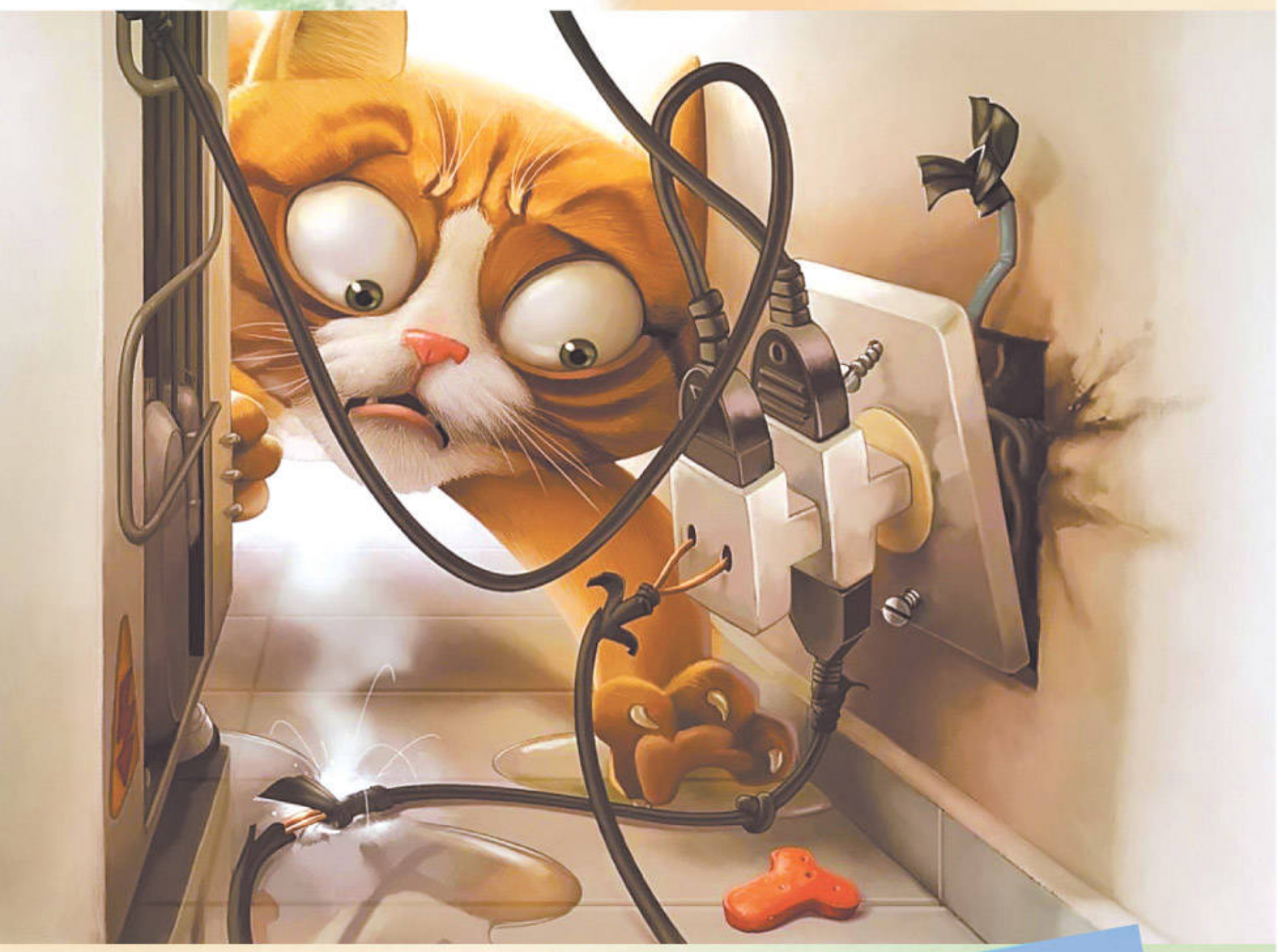

पप्पू ने चैलेंज किया कि वह ताजमहल को अपने सिर पर उठाकर दिल्ली जा सकता है।

यह सुनकर हजारों लोग इकट्ठा हो गए।

पप्पू बोला : बस इसे उठाकर मेरे सिर पर रख दो...!

"IMAGINATION IS THE HIGHEST KITE ONE CAN FLY."

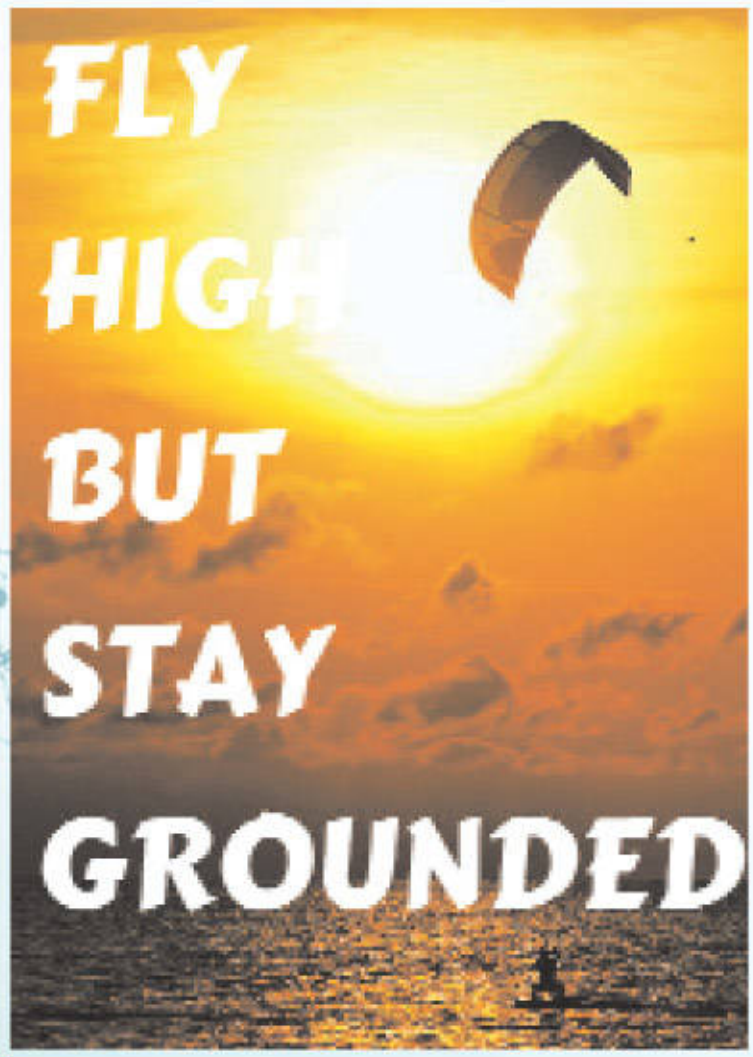

Kites

Five little kites flying high in the sky
Said, "Hi!" to the cloud as it passed by,
Said, "Hi!" to the birds, said "Hi!" to the sun,
Said, "Hi!" to an airplane--oh what fun!
Then whish went the wind,
And they all took a dive:
One, Two, Three, Four, Five.

On many spring days I wish that I
Could be a kite flying in the sky.
I would climb high toward the sun
And chase the clouds. Oh, what fun!
Whichever way the wind chanced to blow
Is the way that I would go.
I'd fly up, up, up. I'd fly down, down, down.
Then I'd spin round and round and round.
Finally I'd float softly to the ground.

Corner Quote Don't ignore the small things the kite flies because of its tail.

बच्चो, तुहें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तुहारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तुहें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वाय दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और अयास करें।

क. या आपको बुरा लगेगा अगर मैं यह खिड़की खोलूं तो?
Do you mind, if I open the window?
डू यू माइंड, इफ आइ ओपन द विंडो?

ख. हम अभी राजस्थान की ओर बढ़ रहे हैं।
We are now approaching to Rajasthan.
वी आर नाउ अप्रोचिंग टु राजस्थान।

फ. यह ट्रेन यहां समाप्त होती है।
This train terminates here.
दिस ट्रेन टर्मिनेट्स हियर।

ब. कृपया अपना सामान और अपनी वस्तुएं अपने साथ ले जाएं।
Please take all your luggage and personal belongings with you.
प्लीज टेक ऑल योर लगेज एंड पर्सनल बिलोंगिंग्स विद यू।

भ. भूमिगत के लिए नशा कहां है?
Where's map of the underground?
व्हेअर्स मैप ऑफ दी अंडरग्राउंड?

म. कृपया, मैं एक दिन की यात्रा का कार्ड लेना चाहूंगा।
I would like a day travel card, please.
आई वुड लाइक अ डे ट्रेवल कार्ड, प्लीज।

स्त्र. मैं अपना टिकट लेने आया हूं।
I have come to collect my ticket.
आई हैव कम टु कलेट माइ टिकट।

त. मैंने इंटरनेट पर आरक्षित किया था।
I booked on the internet.
आइ बुड ऑन दी इंटरनेट।

-. या आपके पास आरक्षण संदर्भ है?
Do you have your booking reference?
डू यू हैव योर बुकिंग रेफरेंस?

क. कृपया, आपका पासपोर्ट और टिकट।
Your passport and ticket, please.
योर पासपोर्ट एंड टिकट, प्लीज।

Antonyms

Serious-गंभीर	Funny-हास्यमय
Servant-सेवक	Master-मालिक
To set free-मुत करना	To arrest-गिरतार करना
Shallow-छिछला	Deep-गहरा
Sharp-तेज धार	Blunt-भोंथरा
Shelter-आवरण	Exposure-अनावरण

Word-Power

- Badly — बुरी तरह से
- Glamorous — आकर्षक
- Bake — पकाना
- Glorious — शानदार
- Glow — चमक
- Bashful — लज्जाशील

English-Hindi Phrases

Both days inclusive- दोनों दिन शामिल।

Boarding and lodging- आवास और भोजन।

Bound to accept- स्वीकार करने के लिए बाध्य।

Board note please- कृपया बोर्ड नोट प्रस्तुत करें।

Brief for the meeting- बैठक के लिए पक्ष-कथन।

Bill may please be paid- कृपया बिल का

Synonyms

Bizarre- अजीब, अनोखा, विचित्र।
Definitio, Eccentric, Freakish, Flaky Freaky, Off-the-wall, Outlandish.

(अगले अंक में जारी)

एक छात्र ने गणित के अध्यापक से कहा- सर, अंग्रेजी के अध्यापक तो अंग्रेजी में बातें करते है। आप भी गणित में बात क्यों नहीं करतें?
गणित अध्यापक- ज्यादा तीन पांच न कर, फौरन नौ-दो ग्यारह हो जा, नहीं तो चार-पांच रख दूंगा तो छठी का दूध याद आ जाएगा।

अध्यापक- तुम बड़े मूर्ख हो बालक, मैं तुम्हारी उम्र में अच्छी तरह किताब पढ़ लेता था।
छात्र- श्रीमान, आपको अच्छा मास्टर मिल गया होगा?

अध्यापक ने कपिल से कहा- जो काम तुमने नहीं किया, उसके लिए तुम्हें सजा नहीं दी जाएगी।
कपिल- धन्यवाद सर, आज में होमवर्क करना भूल गया हूं।

अध्यापक (छात्रों से)- अगर न्यूटन पेड़ के नीचे नहीं बैठते और उनके सिर के ऊपर सेब नहीं गिरता तो गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत हमें कैसे पता चलता।
छात्र- सर, बिल्कुल सही कहा आपने। अगर न्यूटन हमारी तरह क्लास में बैठकर इसी तरह किताब पढ़ रहे होते तो वो भी कोई आविष्कार नहीं कर पाते।

टिंकू (बुद्धू से)- बुद्धू, किसी चीज का लंबा-सा नाम बताओ।
बुद्धू- रबड़।
टिंकू- यह तो बहुत छोटा है।
बुद्धू- लेकिन इसे खींचकर जितना चाहे लंबा कर सकते हैं।

संगीत के अध्यापक ने अपने एक छात्र से पूछा- तुम किस ताल के विषय में अधिक जानते हो? छात्र ने तुरंत उत्तर दिया- सर, में हड़ताल के विषय में अधिक जानता हूं।

शिक्षक ने क्लास में लड़के की कॉपी जांचते हुए उससे कहा- मुझे आश्चर्य होता है कि तुम अकेले इतनी सारी गलतियां करते हो?
लड़के ने खड़े होकर कहा- यह सब गलतियां मैंने अकेले नहीं की हैं, मेरे पिता जी ने भी इसमें मुझे मदद दी है।

अध्यापक- बोलो बच्चो, गंगा नदी पटियाला से निकलती है।
भावना- सर नहीं गंगा नदी पटियाला से नहीं निकलती।
प्रिंसिपल- महोदय आप भी कैसे अध्यापक हैं, गंगा नदी पटियाला से नहीं गंगोत्री से निकलती है।
अध्यापक - प्रिंसिपल महोदय, गंगा नदी पटियाला से ही निकलती है और तब तक निकलती रहेगी, जब तक मेरी सात महीने की तनखाह नहीं मिल जाती।

अध्यापक ने परीक्षा में चार पृष्ठों का निबन्ध लिखने को दिया- विषय था- आलस्य क्या है?
एक विद्यार्थी ने तीन पृष्ठों को खाली छोड़ दिया और चौथे पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा- यही आलस्य है।

अध्यापक- चिंटू तुम कल स्कूल क्यों नहीं आए?
चिंटू- सर, कल मैं सपने में अमरीका चला गया था।
अध्यापक-ठीक है! पिन्टू तुम क्यों नहीं आए?
पिन्टू- सर, मैं चिंटू को एयरपोर्ट छोड़ने गया था।

अध्यापक ने छात्र से पूछा- बताओ बच्चो! दिन में तारे किस समय दिखाई देते है ?
एक छात्र ने उत्तर दिया- जब तमाचे पड़ते हैं।

एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से पूछा– क्या तुम चीनी भाषा पढ़ सकते हो?
दूसरे बच्चे ने कहा– हां, अगर वह हिंदी या अंग्रेजी में लिखी हो तो....

दो महिलाएं कुछ समय बाद मिलीं तो एक ने पूछा- बहन आपने राजू बेटे का उंगली चूसना कैसे छुड़ाया?
दूसरी महिला- कुछ खास नहीं उसकी नेकर ढीली सिल दी है, वह उसे ही पकड़े रहता है।

अध्यापक- तुम कैसे सिद्ध करोगे कि साग-पात खाने वाले की निगाहें तेज होती हैं।
छात्र- सर, आज तक किसी ने बकरे या घोड़े को चश्मा लगाते देखा है क्या?

छोटी-सी लड़की ने अपनी मां से पूछा- मम्मी, तुमने कहा था न कि परियों के पंख होते हैं और वह उड़ सकती हैं ना?
मम्मी- हां बेटी, कहा था।
लड़की- कल रात डैडी आया को कह रहे थे कि वह तो परी है। वह कब उड़ेगी मम्मी?
मम्मी (छोटी सी लड़की से)- सुबह होते ही उड़ जाएगी बेटी।

बच्चा- मम्मा क्या मैं भगवान की तरह दिखता हूं?
मम्मी- नहीं, पर तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो बेटा?
बच्चा- क्योंकि मम्मा मैं कहीं भी जाता हूं तो सब यही कहते हैं कि हे भगवान फिर आ गया।

रेल के डिब्बे में चिंटू की मां ने चिंटू से कहा- चुपचाप बैठे रहो। शरारत की तो मारूंगी।
चिंटू- तुमने मुझे मारा, तो मैं टिकट-चेकर को अपनी उम्र बता दूंगा।

एक तोता एक कार से टकरा गया, तो उस कार वाले ने उसे उठा कर पिंजरे में डाल दिया। दूसरे दिन जब तोते को होश आया। वह बोला, 'आईला! जेल, कार वाला मर गया क्या।'

छोटा बच्चा अपना रिजल्ट लेकर आया और पिता से बोला, 'पापा आप बहुत किस्मत वाले हैं।'
पिता- कैसे बेटा?
बच्चा- 'क्योंकि मैं फेल हो गया हूं। आपको मेरे लिए नई किताबें नहीं खरीदनी पड़ेगी।'

पिंक सिटी

जयपुर को पिंक सिटी यानी गुलाबी शहर भी कहते हैं दोस्तो। जयपुर की स्थापना वर्ष क्त्रख्त्र में महाराज सवाई जयसिंह द्वितीय ने की थी। उनकी राजधानी पहले आमेर में थी, जो इस शहर से करीब दस किलोमीटर दूर उ□ार दिशा में है। इस शहर की स्थापना ऐसे दौर में हुई जब भारत में नगर नियोजन एक नया विषय रहा होगा। इसकी स्थापना में ज्यामितीय सूत्र और गणित की कसौटी का ध्यान रखा गया था। लेकिन शुरू में यह शहर गुलाबी नहीं था। इसे गुलाबी रंग मिला, सवाई रामसिंह द्वितीय के शासन काल में। इंग्लैण्ड के प्रिंस ऑफ वेल्स के स्वागत में वर्ष क्त्भ्प में शहर को गुलाबी रंग से रंगा गया। यह शहर हवाहमल, किले, महल, दरवाजों, वास्तुकला, स्थापत्य कला, कला-संस्कृति के लिए विश्व-प्रसिद्ध है। यहां हर वर्ष लाखों देशी-विदेशी पर्यटक आते हैं।

क्या है क्रिस्टल

क्रिस्टल को हिन्दी में स्फटिक कहते हैं। स्फटिक एक रंगहीन, पारदर्शी, निर्मल और शीत प्रभाव वाला उपरत्न है। इसको कई नामों से जाना जाता है। जैसे-सफेद बिल्लौर, अंग्रेजी में रॉक क्रिस्टल, संस्कृत में सितोपल, शिवप्रिय, कांचमणि और फिटक सहित अन्य। क्रिस्टल हमें कई रूप में मिलते हैं। जैसे नमक, चीनी और फिटकरी। पर हम जिस क्रिस्टल की बात कर रहे हैं, वह कांच जैसा प्रतीत होता है। परंतु यह कांच की अपेक्षा अधिक दीर्घजीवी होता है।

स्फटिक को नग के बजाय माला के रूप में पहना जाता है। स्फटिक की रासायनिक संरचना सिलिकॉन डाइऑ□साइड है। तमाम क्रिस्टलों में यह सबसे अधिक साफ और ताकतवर है। इसकी प्रतिमाएं भी बनती हैं। इसे ऊर्जा का स्रोत माना जाता है। स्फटिक चिकित्सा एक अलग चिकित्सा पद्धति के रूप में फैलती जा रही है। यह कुदरती पदार्थ दो प्राकृतिक त□वों ऑ□सीजन व सिलिकॉन के मिश्रण से बना है। जब यह दोनों त□व गर्मी और भारी दबाव के साथ भूगर्भ में एक साथ जुड़ते हैं तो कुदरती स्फटिक का निर्माण होता है। प्राकृतिक स्फटिक के निर्माण में कई सौ वर्ष लग जाते हैं।

बाल फिल्म सोसायटी

बच्चों को स्वस्थ मनोरंजन और ज्ञान प्रदान करने के लिए बाल फिल्म सोसायटी बनाई गई थी दोस्तो। इसका काम फिल्में बनाना, वितरित करना और दिखाने की व्यवस्था करने के साथ भी अन्य कार्य भी थे। वर्ष क्क मई क-भ्भ को इसकी स्थापना हुई थी। इसके पहले अध्यक्ष पं. हृदयनाथ कुंजरू थे। सोसायटी के साथ केदार शर्मा, सत्येन बोस, मोहन कौल, राजेन्द्र शर्मा, मृणाल सेन, श्याम बेनेगल, साई परांजपे और तपन सिन्हा जैसे प्रतिष्ठित फिल्मकार जुड़े रहे। यह सोसायटी वर्कशॉप और फिल्म समारोह भी करती है।

CHILDREN'S FILM SOCIETY INDIA
Promoting Every Child's Right to Entertainment

इसके साथ ही तु□हें यह भी बता दें कि हमारे देश में फिल्मों के राष्ट्रीय पुरस्कार वर्ष क-भ्ब में शुरू हुए थे। इनका उद्देश्य सार्थक और रचनात्मक सिनेमा को बढ़ावा देना था। वर्ष क-ख्त्रप में फिल्म समारोह निदेशालय की स्थापना होने के बाद से फिल्म पुरस्कार का काम भी निदेशालय के पास चला गया। राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का उद्देश्य देश की सभी भाषाओं के कथा और गैर-कथा चित्रों और उनके अभिनेताओं को पुरस्कृत करना है। हर साल दिल्ली में एक समारोह

कब आई कॉमिक्स

कॉमि□स से आपका आशय चित्रकथाओं से है, तो हजारों साल से बल्कि स□यताओं के जन्म के पहले से मनुष्य कहानियों को केन्द्र में रखकर चित्र बना रहा है। पुराने गुफा चित्रों में ऐसी कहानियां हैं। स□यता के जन्म के बाद मिस्र, चीन, मेसोपोटामिया और भारत में कथाचित्र मिलते हैं। अजंता-एलोरा की गुफाओं में बने चित्र कहानियां कहते हैं। पर यदि आप आधुनिक कथा चित्रों की बात कह रहे हैं, तो उन्नीसवीं सदी में कार्टून कला के विकसित होने के बाद कॉमि□स की शुरुआत भी हुई।

वर्ष क्त्ब्ब में शुरू हुई ब्रिटिश पत्रिका पंच ने पहली बार आधुनिक किस्म के कार्टून छापने शुरू किये। शुरू में एक तस्वीर होती थी, फिर यह स्ट्रिप बनी। उन्हीं दिनों स्विस कलाकार रोडोल्फे टॉफर ने चित्रकथाएं बनाना शुरू कर दिया था। सन् क्त्म्भ में जर्मन लेखक, कलाकार विल्हेम बुश ने 'मे□स एंड मॉरिट्ज' नाम के दो कॉमिक चरित्रों को तैयार किया। पर वर्ष क्त्-भ में रिचर्ड आउटकॉल्ट ने यलो किड नाम से कॉमिक स्ट्रिप शुरू की, जिन्हें पहले कॉमि□स कह सकते हैं।

उनमें चित्र में बैलून बनाकर पात्रों के संवाद लिखे गए थे। इसके बाद वॉल्ट डिजनी के मशहूर पात्र मिकी माउस और डोनाल्ड डक आए, सुपरमैन, फैंटम, मैनड्रेक, □लैश गार्डन आए।

पुर्तगाल

स्पेन ने पुर्तगाल पर सन् क्भ्त्क में अधिकार जमा लिया और अगले म वर्षों तक शासन किया। वर्ष क-क में यहां राजतंत्रीय प्रणाली को हटाकर गणराज्य की स्थापना की गई। सालाजार ने क-ख्त में यहां निरंकुश शासन की स्थापना की, जो क-म्त तक चला। वर्ष क-स्त्रब में हुए सैनिक विद्रोह के बाद राजनीतिक अव्यवस्था का दौर चला। जिसके परिणामस्वरूप क-स्त्रब-त्त के मध्य क्भ सरकारें बनी व गिरीं। वर्ष क-त्त में पुर्तगाल यूरोपीय संघ का सदस्य बन गया।

आधिकारिक नाम- रिप□लिका पुर्तगाल। **राजधानी**- लिस्बन। **मुद्रा**- यूरो। **मानक समय**- जी एम टी से क घंटा आगे।

भाषा- पुर्तगाली, मिरांडीज (दोनों आधिकारिक)।

कुल जनसं□या- क,भ,म,ख्क्ख

क्षेत्रफल- -ख,फ-क वर्ग किलोमीटर।

स्थिति- पुर्तगाल, दक्षिण पश्चिमी यूरोप में स्पेन के पश्चिम में उ□ारी अटलांटिक महासागर के तट पर स्थित है।

जलवायु- उ□ारी क्षेत्र में ठण्डी व आर्द्र और दक्षिण में गर्म तथा शुष्क है। मानचित्रानुसार यहां का उ□ारी भाग पर्वतीय है, दक्षिण में ढलवां मैदान है।

प्रमुख नदियां- गुआडिआना, डौरा, टेगस।

सर्वोच्च शिखर- पिको-ख्क्क्भ मीटर।

प्रमुख बड़े शहर- लिस्बन, ब्राग, कोयंबरा, कोविल्हा, फारो, बेजा।

निर्यात- कपड़े, फुटवियर, शराब, डि□बाबंद मछली, कार्क, लकड़ी का सामान।

आयात- मशीनरी, परिवहन उपकरण, रसायन, पेट्रोलियम, कृषि उत्पाद। **प्रमुख उद्योग**- कांच का सामान, रसायन, कपड़े, जूते, पेट्रोलियम शोधन, इस्पात। **प्रमुख फसलें**- गेहूं, म□का, चावल, जौ, आलू, जैतून, अंगूर।

प्रमुख खनिज- सोना, यूरेनियम, टिन, कोयला, चांदी, टंगस्टन, जिप्सम, नमक, तांबा।

शासन प्रणाली- संसदीय प्रजातंत्र। **संसद**- नेशनल असेंबली।

प्रमुख धर्म- ईसाई। **राष्ट्रीय ध्वज**- लाल और हरे रंग की पृष्ठभूमि के मध्य चिह्न। **स्वतंत्रता दिवस**- भ अ□टूबर क-भ

प्रमुख हवाई अड्डा- लिस्बन स्थित पोर्टेलो और कोए□बरा व फारो अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे। **प्रमुख बंदरगाह**- लिस्बन, ओपोर्टो।

इंटरनेट कोड- .pt

जन-गण-मन पहली बार वर्ष 1911 में कलकत्ता अधिवेशन में गाया गया था।

दक्षिण अफ्रीका के अंधेरे जंगल में लाल रंग के मेंढक होते हैं। उनकी आवाज घोड़े की हिनहिनाहट जैसी होती है।

थाइलैंड के मेढक संगीतप्रिय होते हैं। वे ऐसी तान छेड़ते हैं, जैसे कोई बांसुरी बजा रहा हो।

भारत विश्व का एकमात्र लोकतांत्रिक देश है, जहां इतने विविध धर्म हैं।

विश्व में सबसे ज्यादा वैज्ञानिक और आई.टी. एक्सपर्ट भारतीय मूल के हैं।

तथ्य निराले

खाने की वस्तुओं में कभी खराब न होने वाली एकमात्र चीज है- शहद।

औसतन हरेक दो सप्ताह में धरती पर से एक भाषा लुप्त होती जा रही है।

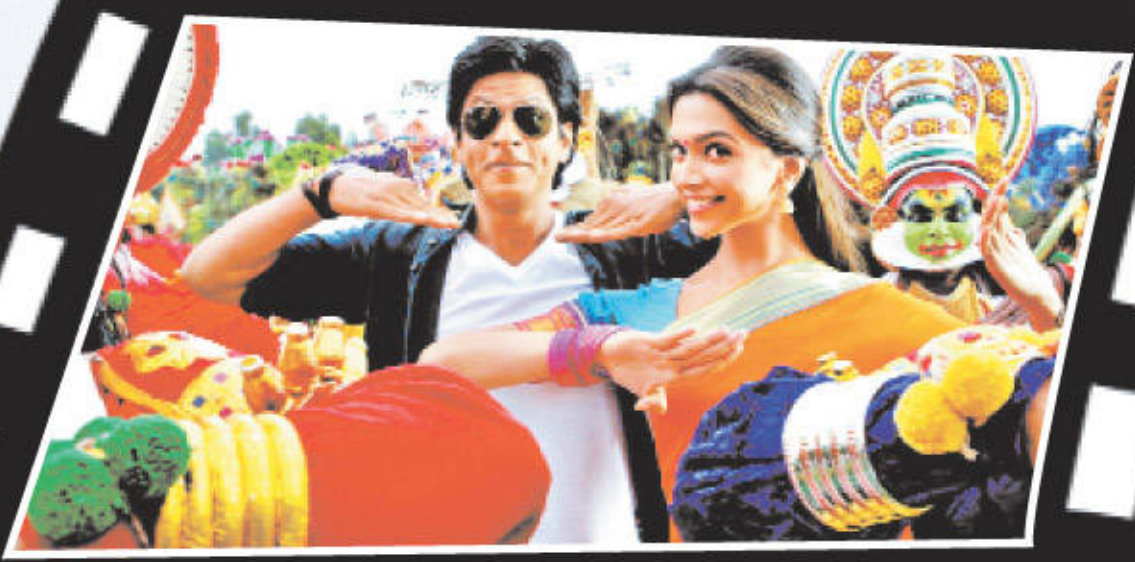

पूरे विश्व में सबसे ज्यादा फिल्में भारत में बनती हैं।

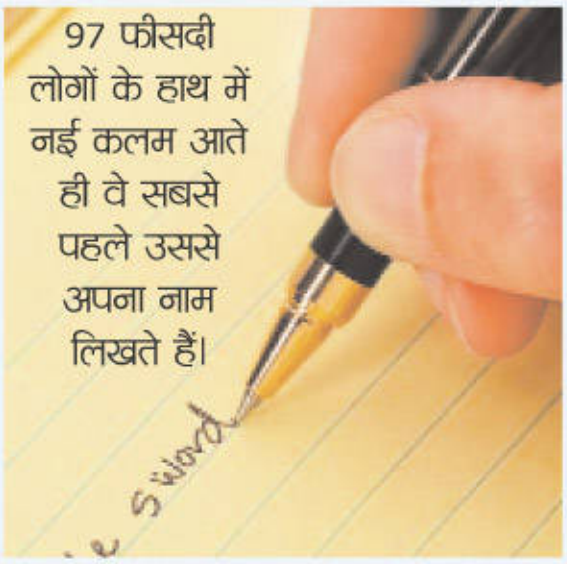

97 फीसदी लोगों के हाथ में नई कलम आते ही वे सबसे पहले उससे अपना नाम लिखते हैं।

नौकायन की कला का जन्म 6000 वर्ष पूर्व सिन्धु नदी में हुआ था।

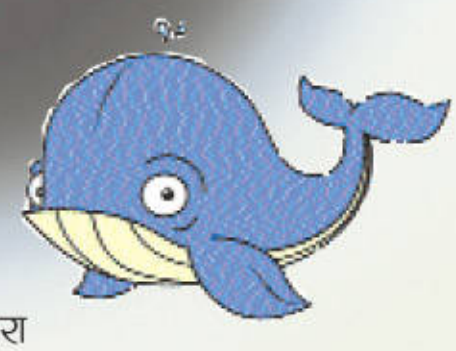

माचिस से पहले सिगरेट लाइटर का आविष्कार हुआ था।

पोस्कार्ड का उपयोग करने वाला पहला देश ऑस्ट्रेलिया था।

अगर आपने एक घंटे हैडफोन लगाया है, तो इसका मतलब यह है कि आपके कान में पहले से 700 गुणा अधिक बैक्टीरिया हो गए हैं।

नीली व्हेल द्वारा बजाई जाने वाली सीटी की आवाज 188 डेसीबल तक होती है।

24 कैरेट का सोना शुद्ध सोना नहीं होता है, इसमें कॉपर की कुछ मात्रा शामिल होती है।

अंगूरों को गलती से माइक्रोवेव में डाल दिया तो वे बम की तरह फट जायेंगे।

अरंडी के तेल का इस्तेमाल जेट विमानों में पुर्जों के बीच चिकनाई के रूप में किया गया।

सफेद हाथी का देश थाइलैंड को कहा जाता है।

प्रख्यात चित्रकार लियोनार्दो द विंची एक ही समय में एक हाथ से चित्र बनाने के साथ-साथ दूसरे हाथ से लिख भी सकते थे।

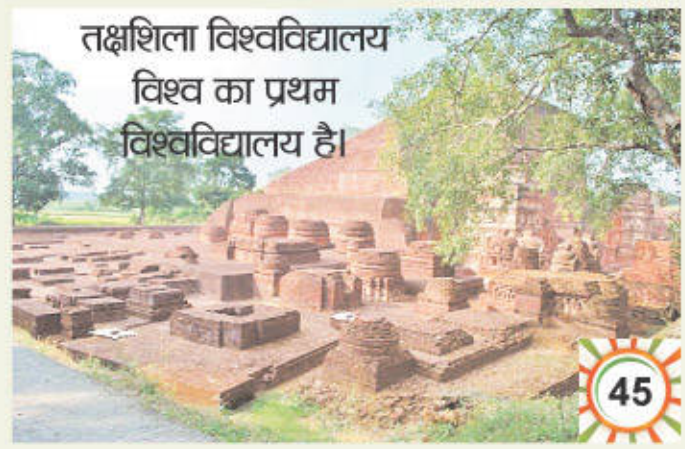

तक्षशिला विश्वविद्यालय विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय है।

ए.एम. और पी.एम.

यह तो आप सब जानते ही हैं कि जब समय का जिक्र किया जाता है तो प्रायः ए.एम. और पी.एम. का प्रयोग किया जाता है। ए.एम. व पी.एम. क्रमशः एन्टे मिरीडियन व पोस्ट

मिरीडियन का संक्षिप्त रूप है। चौबीस घंटे वाले पूरे दिन का दो बराबर भागों में बंटा- रात्रि 12 बजे से दोपहर बारह बजे तक का पहला भाग ए.एम. तथा दोपहर के बारह बजे से रात्रि 12 बजे तक का दूसरा भाग पी.एम. कहलाता है।

मिरीडियन वास्तव में मूलरूप से लैटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है मध्याह्न, यानी मिड-डे और इस तरह एन्टे मिरीडियन यानी ए.एम. का अर्थ हुआ मध्याह्न से पूर्व तथा पोस्ट मिरीडियन का अर्थ हुआ मध्याह्न के पश्चात।

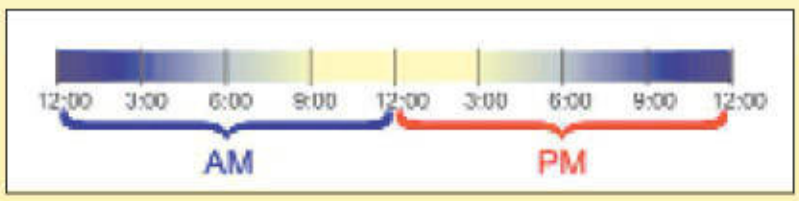

हथेली में छेद कैसे

सामग्री- धातु या कार्ड बोर्ड की एक इंच के लगभग व्यास वाली एक नली।

शुरू करो- अपने एक हाथ से नली को पकड़कर इसे उसी तरफ वाली आंख के ठीक सामने रखो। दूसरे हाथ को इस नली के आगे इस तरह से ले आओ ताकि हथेली ठीक तुहारी ओर रहे। अब जैसे

ही तुम सामने की ओर देखोगे, तुहें यह देखकर बहुत आश्चर्य होगा कि तुहारी हथेली पर एक बड़ा-सा छेद नजर आ रहा है।

कैसे होता है यह- यहां उत्पन्न की गई स्थिति के अनुसार तुहारी दोनों आंखें एक साथ दो अलग-अलग वस्तुएं देख रही होती हैं। एक तो यहां सिर्फ नली के अंदर का भाग ही देख सकती है। और दूसरी है, जिसे बाहर पूरी हथेली नजर आ रही होती है।

ऐसे में दोनों आंखों के माध्यम से मस्तिष्क को अलग-अलग तरह के जो संकेत मिलते हैं, उससे वहां संशय की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जिसके फलस्वरूप दोनों आंखों से मिले संकेतों का मिला-जुला परिणाम तुहारे सामने होता है। हथेली में बने

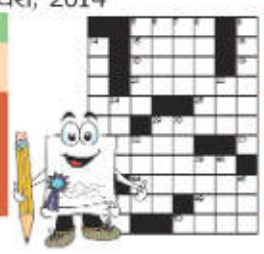

CrossWord PuzzLeS

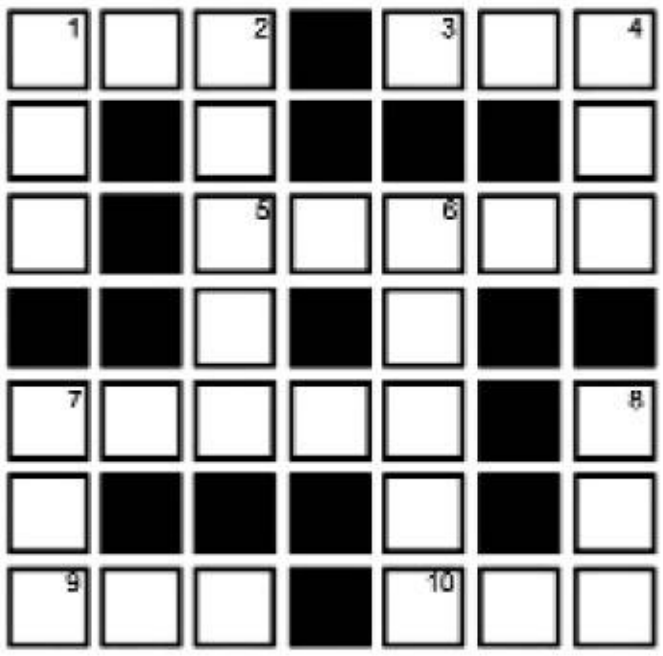

बाएं से दाएं

क. बिलख-बिलख कर रोने का मतलब...करना होता है (फ)।

फ. धान कूटने का एक उपकरण (फ)।

भ. नैतिक आचरण, चरित्र, व्यवहार के ढंग को यह भी कहते हैं (ख्फ)।

स्त्र. एक कहावत है-झूठ का झूठ और... (ख्क्ख)।

-. जोश, आवेश, तेजी (फ)।

क. कोमल या सुकुमार को यह भी कहेंगे (फ)।

ऊपर से नीचे

क. ठहरना, विश्राम करना, ...करना (फ)।

ख. सेवा करने वाली, एयर होस्टेस (भ)।

ब. नेपाल का एक प्रसिद्ध शहर (फ)।

म. चहकना (भ)।

स्त्र. चेतन यु□त, सावधान (फ)।

त्त. बिना मतलब का, व्यर्थ, बेवजह (फ)।

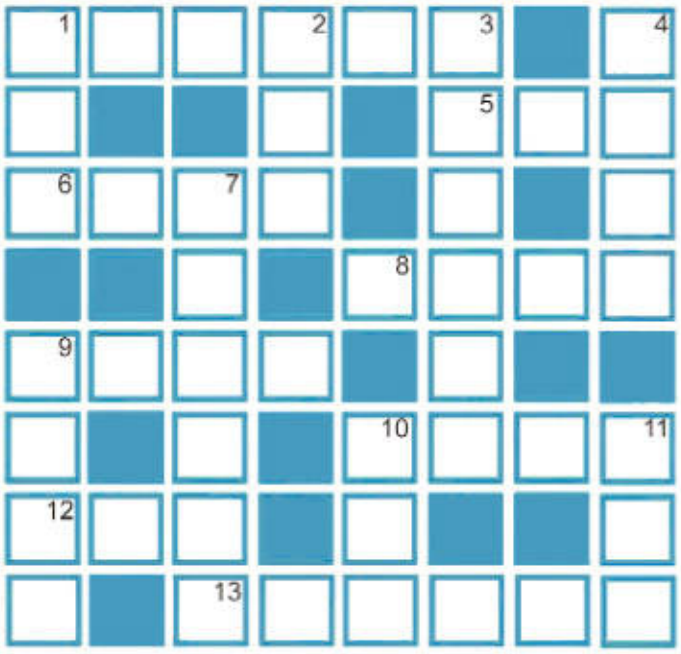

ACROSS

1. An inferior and cheap variety of cinnamon (6).
5. A canon, A musket (3).
6. Lay hold of (something) with one's hands (4).
8. A sheltered walk or promenade (4).
9. An alcoholic drink made from fermented grape juice (4).
10. Knock unconscious or into a semi-conscious state (4).
12. The fore-part of the hoof (3).
13. A layer of different material covering the inside surface of something (6).

DOWN

1. A small quadruped and carnivorous domestic animal (3).
2. Perceive with the eyes (3).
3. Filled with horror or shock (6).
4. Relating to or situated near the anus (4).
7. A small shelter for a dog (6).
9. In opposition to, By on the side of (4).
10. The star round which the earth orbits (3).
11. A pony, To find faut with somebody constantly (3).

Answer

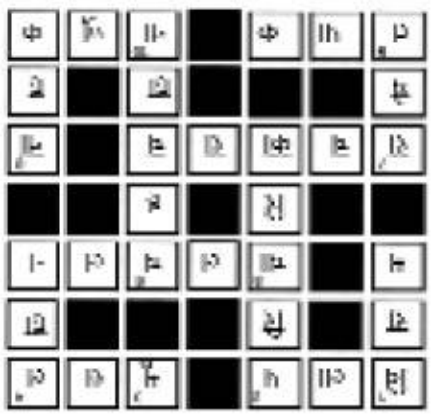

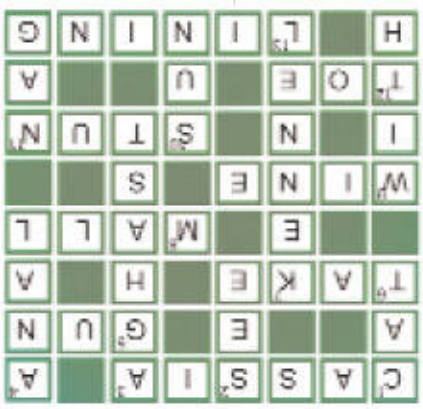

हमारा प्यारा भारत

देश हमारा प्यारा है
आंखों का यह तारा है।
इसको आगे ले जाना है
इसके लिए मर मिटना है।

हम दोस्तों को गले लगाएंगे
दुश्मन को मार भगाएंगे।
वीर शहीदों की गाथा
हम बार-बार गाएंगे।

देशवासियों में भेद नहीं है
जाति धर्म का अंतर नहीं है।
देश हमारा प्यारा है
आंखों का यह तारा है।

–**हिमांशु सिंह,** मुस्तकापुर, आलमपुर (उ.प्र.)

बालमंच

लिटिल स्टार

प्रतिभाशाली बाल अभिनेत्री श्रुति बिष्ट अपने आकर्षक अभिनय के माध्यम से लिटिल स्टार बन चुकी है। सीरियल 'हिटलर दीदी' में छोटी के हिटलर के किरदार में वाह-वाही लूटने में सबसे आगे है। टाइटल रोल के समकक्ष भूमिका निभाना इस नन्हीं बालिका के लिए किसी उपलब्धि से कतई कम नहीं है। वह कहती है, 'धारावाहिक में सैंकड़ों एपिसोड तक अपने एक्टिंग पक्ष को जानदार बनाए रखना मेरे लिए एक चुनौती थी। मगर मैंने इस विविधता को समाहित करते हुए इस रोल में जान फूंकने का काम जारी रखा। आज मेरा अभिनय स्वयं बोल रहा है। सिलेब्रिटी का दर्जा मिल रहा है। चीफ-गेस्ट बनायी जाती हूं।'

श्रुति बिष्ट

श्रुति बिष्ट को अभिनय पक्ष से जोड़ा उसकी मम्मी ने। मां के मार्गदर्शन में वह एक्टिंग वर्कशॉप, कोचिंग और डांसिंग क्लासेज में बराबर मेहनत करती रही। रंगमंच और स्कूल के सांस्कृतिक आयोजन में वह बतौर आर्टिस्ट अपने में निखार लाती रही। उसके उत्साह ने उसे छोटे पर्दे तक पहुंचाया। वह कहती है, 'जब मुझे पता चला कि सीरियल 'हिटलर दीदी' में ऑडिशन देना है, तो मैं बहुत गंभीर हो गयी थी। बड़े ही प्रसन्न मन से मैंने इंटरव्यू दिया। मैं छोटी हिटलर किरदार के लिए चयनित हुई। उसके बाद मैंने सैट पर शूटिंग में बड़ी मेहनत की।'

'हिटलर दीदी' की मुंह बोलती कामयाबी ने श्रुति बिष्ट को रातों-रात पहचान दी। उसके पास अभिनय के प्रस्ताव आने लगे। 'छोटी सी जिंदगी', 'मिले हम तुम' सरीखे धारावाहिक में भी वह सीनियर आर्टिस्टों से अधिक प्रखर होकर उभरी। वह मानती है, 'योग्यता के संदर्भ में चाइल्ड आर्टिस्ट किसी से कम नहीं हैं। बस, उनको सही अवसर नहीं मिल पाता। मैं सीरियल के बाद फीचर फिल्मों की ओर कदम बढ़ा रही हूं। ग्रीष्मकालीन अवकाश में फिल्म की शूटिंग करना तय हुआ है।'

श्रुति बिष्ट मात्र दस वर्ष की हुई है। वह पढ़ाई में बहुत अच्छी है। क्लास में टॉप फाइव पर रहती आ रही है। सैट पर भी पढ़ना नहीं भूलती। बड़ी होकर वह फिल्म नायिका बनना चाहती है। शुद्ध शाकाहारी भोजन की प्रबल पक्षधर है। बाल पत्रिकाएं पढ़ना उसे अच्छा लगता है। वह मां की आज्ञाकारी पुत्री है।

–**राजू कादरी रियाज**

पेंटब्रश

दिव्या गौड़
अलवर (राज.)

रितिका सेन
सिरोही (राज.)

आदित्य जैन
अचनेरा (राज.)

रंग रंगीली ऋतुएं

सर्दी-गर्मी और बरसात
इन ऋतुओं से जीवन आबाद।
गर्मी पानी भाप बनाए
बादलों से आकाश सजाए।
बरसे पानी ताल भर जाए
जीव-जन्तु जीवन पा जाएं।
संतापों को दूर भगाए
ठंडी-ठंडी सर्दी आए।
फल-सब्जियां और मिठाई
गरमा-गरम पकौड़े खाएं।
हृष्ट-पुष्ट तन बनाएं
जीवन को खुशहाल बनाएं।

–**हेमलता शर्मा,** अजमेर (राज.)

नॉलेज बैंक

शब्द युग्म

आद्रा– एक नक्षत्र का नाम

आर्द्र– गीला

आदि– प्रारंभ, प्रथम, वगैरह

आदी– अ□यस्त

आयत– एक चतुर्भुज

आयात– विदेश से माल आना

आरति– विराम

आरती– पूजा के लिए दीपक

पहाड़– पर्वत

फाड़– चीर

अनेकार्थक शब्द

चांद : चन्द्र, चन्द्रमा, शशि, निशाकर।
चांदी : रजत, रूपक, रूपा, कलधौत।
चतुर : प्रवीण, कुशल, होशियार, विज्ञ।
चिह्न : निशान, पहचान, लक्षण, अलामत।
चांदनी : कौमुदी, ज्योत्सना, चन्द्रिका, कलानिधि।

ऊंची दुकान फीका पकवान।
Great cry, little wool.
Great boast, little roast.
ऊंट के मुंह में जीरा।
A drop in the ocean.
एक पंथ दो काज।
To kill two birds with one stone.
एक हाथ से ताली नहीं बजती।
It takes two to make a quarrel.
एक □यान में दो तलवार नहीं समाती।
Two of a trade seldom agree.

To carry hay- विजयी होना।
To carry weight- प्रभावशाली होना।
On the carpet- विचाराधीन विषय, निन्दित।
To carry with one- स्मरण करना याद करना।

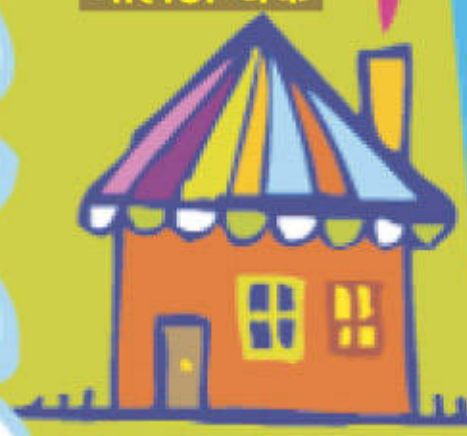

अंतर है

Dual - दोहरा
Duel - द्वंद्व युद्ध
Accept - स्वीकार करना
Except - को छोड़कर, के सिवाय
Acces - पहुंच, प्रवेश
Excess- जरूरत से ज्यादा

एक के तीन

Wave- वेब-तरंग- तरंग:
Last- लास्ट- पिछला- गत:, अंतिम:
Canal- केनाल- नहर- कुल्या, प्रणाली
Episode- एपिसोड- कड़ी-घटक, कणिका, कथानिका
Semi final- सेमी फाइनल- सेमी फाइनल- उपान्तिम:

मुहावरे

चन्दन विष व्यापै नहीं लिपट रहत भुजंग– भले लोगों पर बुरों की संगति का असर नहीं पड़ता।
चोर- चोर मौसेरे भाई– दुष्ट लोगों में आपस में घनिष्टता

उर्दू/ हिन्दी

कुनार– बेर, बेरी, कोल, बदरी।
कुफुल– ताल, द्वारयंत्र, तालिका
कुंद– मंद, मूढ़, भोथरा, आलसी।
कुनुक– मेहमान, अतिथि, आगंतुक।
कुंग– मोटा-ताजा, शा□तशाली, बलवान।

One Word

One who leads others- **Pioneer.**
One who has no money- **Pauper.**
An extreme or irrational fear of something- **Phobia.**
One who believes in total abolition of war- **Pacifist.**

प्रस्तुतिः किशन शर्मा

- जो पहले कभी न हुआ हो : **अपूर्व**
- जो अकारण जुल्म ढाता हो: **जालिम**
- जो किसी पर अभियोग लगाए : **अभियोगी**

art junction

कार्टून बर्ड

सामग्री

ड्रॉइंगशीट, पोस्टर कलर, कांच का गिलास, फेविकोल।

विधि

चिड़िया की शेप में ड्रॉइंगशीट को काट लें। रंग करके सूखने दें। फेविकोल से पंजे और चोंच चिपका दें, साथ ही आंखें बना दें। ड्रॉइंगशीट की पतली-पतली पट्टियां बनाकर चिड़िया के पीछे चिपका दें। इस चिड़िया को ग्लास पर चिपका दें। आप चाहें तो गिलास में छोटे-छोटे रंगीन पत्थर भर सकते हैं।

कार्टून काइट

सामग्री

पुरानी ब्राउन थैली, मार्कर पैन, पतली लकड़ी, रंगीन पंख, क्राफ्ट पेपर, फेविकोल।

विधि

थैली को बूंद की शेप में काटकर मार्कर से मुंह चोंच बना दें। लकड़ी को एक सीधी और एक आड़ी करके कागज में घुसा दें। सिर के ऊपर पंखों को चिपका दें। पूंछ की जगह क्राफ्ट पेपर की लम्बी पट्टी काटकर चिपका दें। जब पतंग हवा में उड़ेगी तो उसकी पूंछ आकाश में लहराएगी।

पजल्स

डॉट टू डॉट

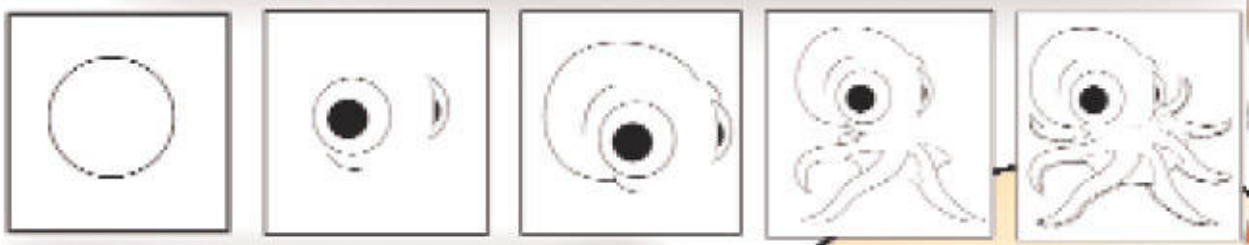

चित्र से चित्र

बिन्दु वाले स्थानों पर रंग भरकर चित्र पहचानो।

मेज
क्रेज

खाली चौखानों में ऐसी संख्या भरें, जिनका योग आगे लिखी संख्या हो।

		1	2	13
0	2			13
				7
			5	16
	6	4	2	16
14	12	17	9	19

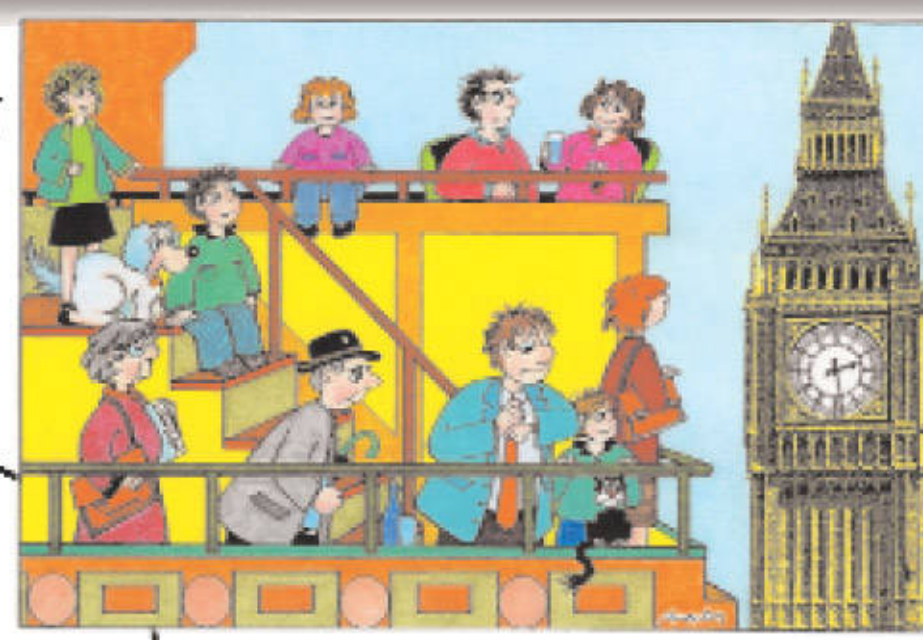

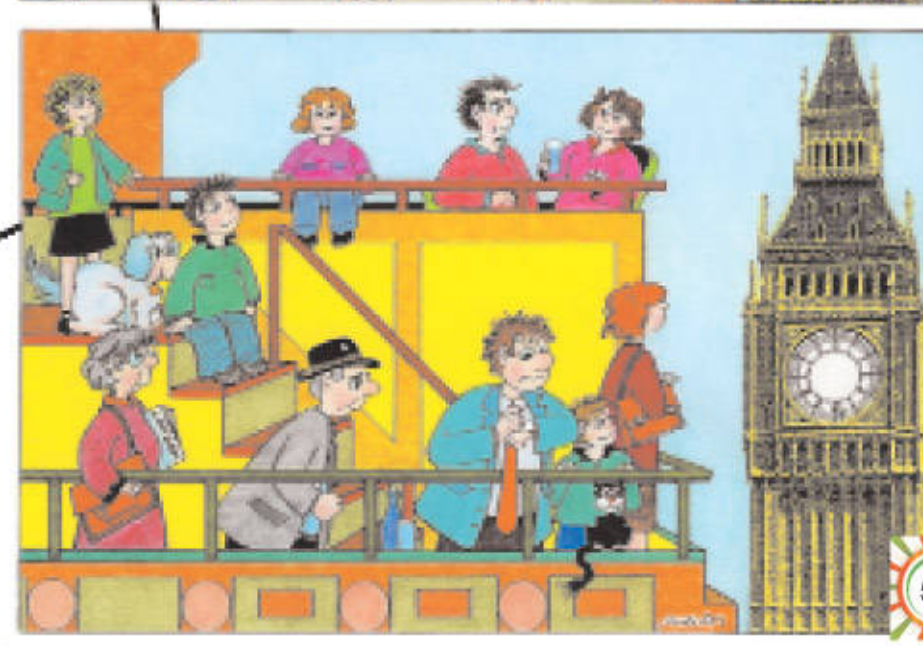

अंतर बताओ

1. घड़ी में सुइयां नहीं हैं।
2. बालकनी का कोना लिटल हुआ नहीं है।
3. नीचे वाला डिजाइन अलग है।
4. पीछे खड़ी महिला का हाथ रेल के बाहर है।
5. लड़के की टाई बाहर लटक रही है।
6. सीढ़ियों की रेलिंग में एक डंडा नहीं है।
7. कुर्सी का मुँह लड़की के पीछे है।
8. बालकनी में लगी रेलिंग का एक डंडा गायब है।
9. बैठे हुए आदमी की कुर्सी नहीं है।
10. खुली खिड़की की छड़ी दिखाई नहीं दे रही।

उत्तर

13	6	17	11	14
19	2	4	9	4
16	3	6	2	2
7	0	3	2	0
13	2	1	2	8
13				

KidsClub

नमन पोरवाल
उम्र- क्प वर्ष
स्थान- जयपुर (राज.)
रुचि- स्पोर्ट्स, □यूजिक।

दीपक शर्मा
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-करहैड़ा (उ.प्र.)
रुचि-क्रिकेट, पढ़ना।

खुशी पोरवाल
उम्र- क वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-डांसिंग,पेंटिंग।

आशीष कुमार
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-सादात, गाजीपुर
रुचि-पढ़ना, क□प्यूटिंग

सिद्धांत जायसवाल
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-सादाव (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

मो. अरमान
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-नरहन (बिहार)
रुचि-पढ़ना, क□प्यूटिंग।

नचिकेता वत्स
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-लारी, अरवल
रुचि-पढ़ना, लिखना।

गौरव सोनी
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-श्रीमाधोपुर (राज.)
रुचि-क्रिकेट, पढ़ना।

अर्चना जायसवाल
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-सादात (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

मो. मुमताज आलम
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-नरहन (बिहार)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

हनुमानराम जाखड़
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-कवास (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

सुमित कुमार
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-नवादा (बिहार)
रुचि-खेलना, लिखना।

चेतन पुष्करणा
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-बोहेड़ा (राज.)
रुचि-पढ़ना, जानकारी

पंखुरी चावला
उम्र- क वर्ष
स्थान-नई दिल्ली
रुचि-पढ़ना, तैराकी।

खूबैब रहबर
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-पूर्णिया (बिहार)
रुचि-क□प्यूटिंग,

गौतम कुमार
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-अरवल (बिहार)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

जतिन तायल
उम्र- ५ वर्ष
स्थान-अलवर (राज.)
रुचि-ड्रॉइंग, टीवी।

अभिलाषा कुमारी
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-हथौड़ी
रुचि-पढ़ना, खेलना।

दिव्यांश भोला
उम्र- ६ वर्ष
स्थान-नई दिल्ली
रुचि-खेलना, पढ़ना।

सनत चौधरी
उम्र- ख वर्ष
स्थान-सोड़ावास (राज.)
रुचि-खेलना, सेवा।

राशि लोढ़ा
उम्र- - वर्ष
स्थान-जोधपुर (राज.)
रुचि-नृत्य, रंगोली।

मु. आमिर
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-मदनपुर (उ.प्र.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

हेमन्त प्रजापत
उम्र- त्त वर्ष
स्थान-मेड़ता सिटी (राज.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

हिमांशु पोरवाल
उम्र- त्त वर्ष
स्थान-भीलवाड़ा
रुचि-डांसिंग, पढ़ना।

रमेश परिहार
उम्र- क्फ वर्ष
स्थान-सियाणी, बाड़मेर
रुचि-खेलना,पढ़ना।

चिन्मय पोरवाल
उम्र- - वर्ष
स्थान-भीलवाड़ा
रुचि-खेलना, पढ़ना।

सनोज कुमार
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-खोन्टाह (बिहार)
रुचि-पढ़ना, लिखना।

ठाकराम सऊ
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-डंडू, बाड़मेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

विशाल कुमार
उम्र- क्क वर्ष
स्थान-अरवल (बिहार)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

पलाश अरोड़ा
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-जोधपुर (राज.)
रुचि-क□प्यूटिंग,

नरेन्द्र सिंह भाटी
उम्र- क्ब वर्ष
स्थान-रायसर, जोधपुर
रुचि-

सुमन खण्डलुक
उम्र- क्ख वर्ष
स्थान-दिल्ली
रुचि-पढ़ना, सिंगिंग।

कहते पंछी हैं, उड़ नहीं पाते!

पंछी यानी उड़ने वाला जीव, बचपन से यही सुनते आए हो न आप सब! पक्षी अपने पंखों को फैलाकर उड़ान भरते हैं और कुछ पक्षी तो पानी में गोता लगाकर अपना भोजन भी निकाल लाते हैं। पंख हैं तो पक्षी है। लेकिन क्या तुम्हें मालूम है कि कुछ पक्षी ऐसे भी हैं जो पंख होने के बावजूद उड़ नहीं पाते। शुतुरमुर्ग, एमू, कसौवरी, किवी और पेंगुइन जैसे पंछी हैं, जो उड़ नहीं पाते।

पेंगुइन बहुत प्यारा पंछी है। इसके पंख बहुत स□त होते हैं। पेंगुइन इन पंख से उड़ नहीं पाते। लेकिन इनका इस्तेमाल वे तैरने के लिए करते हैं। पेंगुइन अपने पंखों के सहारे पानी में गहरा गोता लगा सकते हैं।

पेंगुइन के पैर मजबूत होते हैं। पानी को पीछे धकेलने के लिए वह अपनी पूंछ और पैरों का इस्तेमाल करता है। पेंगुइन करीब क्ष किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से तैर सकते हैं। दो-तीन बार पंख

एमू ऑस्ट्रेलिया का बड़ा और न उड़ने वाला पक्षी है। आकार में यह शुतुरमुर्ग से थोड़ा छोटा होता है। यह पांच फुट ऊंचा होता है और इसका वजन करीब पचास से पचपन किलो होता है। इसके कत्थई रंग के पंख होते हैं और इसकी गर्दन नीले रंग की होती है।

एमू ब्त से भ किलोमीटर प्रतिघंटा की र□तार से दौड़ सकता है और यह बहुत अच्छा तैराक भी होता है। एमू फल और कीड़े-मकोड़े खाकर गुजारा चलाता है। यह नौ-दस फुट लंबी छलांग भी मार सकता है, पर बेचारा उड़ नहीं पाता।

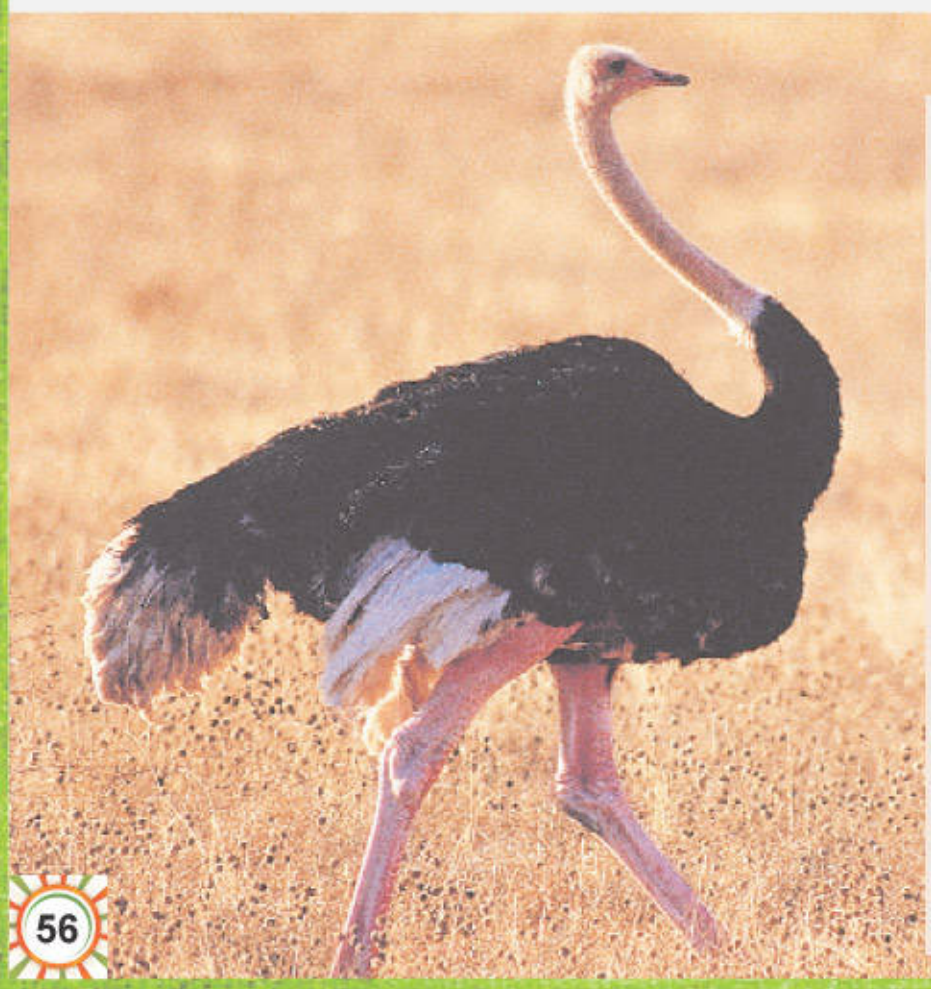

शुतुरमुर्ग

शुतुरमुर्ग इनमें से प्रमुख है। यह अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के मरुस्थलों में पाया जाता है। यह पंछी सात से आठ फुट ऊंचा होता है और इसकी गर्दन पतली एवं नुकीली होती है। लेकिन उसके पंख शरीर के मुकाबले बहुत छोटे, पतले और कमजोर होते हैं। शुतुरमुर्ग के पैरों में जान होती है। लिहाजा यह पंछी तेज भाग सकता है, मगर उड़ नहीं सकता।

हैरानी की बात यह है कि शुतुरमुर्ग धरती पर सबसे तेजी से दौड़ने वाला धावक है। यह म्ष किलोमीटर प्रतिघंटा की र□तार से भाग सकता है। बस उसके पंख इसी काम आते हैं कि भागते समय उसका संतुलन बना रहे।

कसौवरी

कसौवरी भी न उड़ने वाला बड़ा पंछी है। इसे दुनिया का सबसे खतरनाक पक्षी कहा जाता है। इसके जबड़े किसी पैने धारदार चाकू की तरह होते हैं। कसौवरी करीब पचास से पचपन किलोमीटर की गति से दौड़ सकता है।

यह पंछी न्यू गुयाना, ऑस्ट्रेलिया और आसपास के द्वीपों पर पाया जाता है। इसका कद करीब डेढ़ मीटर होता है और वजन पचास-पचपन किलो। इसके सिर पर चमड़े का हैल्मेट होता है। इसकी गर्दन नंगी होती है और यह चटख नीली या गहरे लाल रंग की होती है।

कसौवरी के मजबूत पांव होते हैं। हर पांव में तीन पंजे होते हैं। बीच का पंजा करीब दस सेंटीमीटर

नीचे दिये गए सवाल का सही जवाब दें, और एनिमल प्लेनेट से इनाम पाएं।

- **उस न उड़ने वाले पक्षी का नाम बताएं, जो आकार में सबसे बड़ा होता है।**

(ए) किवी
(बी) शुतुरमुर्ग
(सी) पेंगुइन
(डी) बत्तख

Name.....

Address.....

City.....Pin.....Phone.....

Date of birth...../...../ .....

Email id.....

एंट्री फॉर्म को पूरा भरें और इसे इस पते पर भेज दें-

Animal Planet- Balhans Contest
P.O. Box No. 10534, New Delhi- 110 067

पंख होने के बावजूद न उड़ पाने वाले और भी पंछियों के बारे में आपको जानना है तो एनीमल प्लेनेट पर देखना न भूलें - प्लेनेट ऑवर हर शाम ८ बजे।

पिछली बार के सवाल,
'इनमें से कौनसा जानवर टीम का अच्छा खिलाड़ी नहीं होता' का सही जवाब है-
भालू

शर्तें : कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी कम्यूनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही एंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई एंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

दिसम्बर प्रथम, 2013

क. **विनया त्रिवेदी,** उदयपुर (राज.)
ख. **सरस्वती बनर्जी,** दिल्ली
फ. **जतिन तायल,** अलवर (राज.)
ब. **रमेश शर्मा,** कांवट, सीकर (राज.)
भ. **सहर अनम,** जबलपुर (म.प्र.)
म. **लक्ष्य त्रिवेदी,** पाली (राज.)
स्त्र. **जया शु□ला,** फुलवरिया, आजमगढ़
त्त. **अनुराधा शर्मा,** जयपुर (राज.)
-. **यशवंत सुशील,** भिलाई नगर, दुर्ग

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

सराहनीय प्रयास

क. **पराग झुंझुनवाला,** जयपुर (राज.)
ख. **सिद्धार्थ मालपानी,** अलवर (राज.)
फ. **दर्शित शर्मा,** कोटा (राज.)
ब. **दीपा,** गुड़गांव (हरियाणा)
भ. **सोहम गुप्ता,** मथुरा (उ.प्र.)
म. **राशि बेदी,** जोधपुर (राज.)
स्त्र. **नीलिमा अग्रवाल,** आगरा (उ.प्र.)
त्त. **मो. ईरशाद,** सरदलपट्टी (बिहार)
-. **कुलदीप,** गुड़गांव (हरियाणा)
क. **अविनाश कुमार,** पूर्णिया (बिहार)
क्क. **प्रियांशु छाबड़ा,** बांसवाड़ा (राज.)
क्ख. **मंजीत कुमार,** फतुहां, पटना (बिहार)
क्फ. **राघवेन्द्र शर्मा,** अजमेर (राज.)
क्ब. **नमित अरोड़ा,** रोहिणी, नई दिल्ली
क्भ. **मुस्कान,** गुड़गांव (हरियाणा)

ज्ञान प्रतियोगिता- 339 का परिणाम

क. **तुनज शर्मा,** नारायणपुर, अलवर (राज.)
ख. **कु. प्रांजलि,** टोंक (राज.)
फ. **रुकमणी मीणा,** सवाई माधोपुर (राज.)
ब. **तुषार अग्रवाल,** आगरा (उ.प्र.)
भ. **वसुन्दरा प्रजापत,** नारायणपुर, अलवर (राज.)
म. **दीपक खदा,** लाखनी, सीकर (राज.)
स्त्र. **नीरजा प्रधान,** कोटा (राज.)
त्त. **नेनसी गुप्ता,** पाण्डेपुर, वाराणसी (उ.प्र.)
-. **साक्षी बंसल,** सवाई माधोपुर (राज.)
क. **मौलिक माथुर,** अलवर (राज.)

ज्ञान प्रतियोगिता- 339 का सही हल

अक्षरधाम मंदिर, स्वर्ण मंदिर, लिंगराज मंदिर, रणकपुर जैन मंदिर
क. कपास की फसल
ख. एशिया
फ. शुतुरमुर्ग
ब. जिराफ
भ. सहारा मरुस्थल

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

बालहंस के सित□बर-क. ख्क्फ के अंक में हमने 'विजन-ख्ख्' की एक एं□टविटी किट प्रतियोगिता के रूप में दी थी। हमें इसकी कई प्रविष्टियां प्राप्त हुई हैं। परिणाम अगले अंक में देखें।

ज्ञान प्रतियोगिता

342 परखो ज्ञान, पाओ इनाम

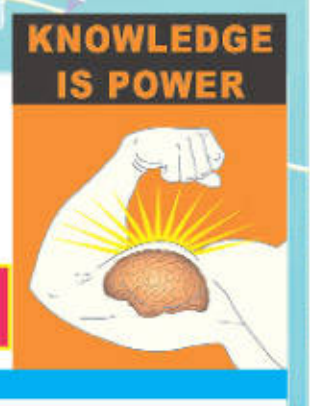

क. मध्य प्रदेश के मु□यमंत्री का □या नाम है ?

(अ) अखिलेश यादव

(ब) पृथ्वी सिंह

(स) शिवराज सिंह चौहान

ख. वसुंधरा राजे किस प्रदेश की मु□यमंत्री हैं ?

(अ) गुजरात

(ब) राजस्थान

(स) महाराष्ट्र

फ. छ□ीसगढ़ के मु□यमंत्री कौन हैं ?

(अ) रमन सिंह

(ब) कल्याण सिंह

(स) प्रद्यु□न सिंह

ब. दिल्ली में हाल ही में अस्तित्व में आयी राजनैतिक पार्टी का नाम है ?

(अ) भाजपा

(ब) आप

(स) माकपा

भ. मिजोरम में पांचवीं बार मु□यमंत्री बने लाल थनहवला की पार्टी है ?

(अ) कांग्रेस

(ब) बसपा

(स) भाजपा

भारतवर्ष के नव-निर्माण में इन दो शा□सयतों का अहम योगदान रहा है। नाम बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ज्ञान प्रतियोगिता– 342

नाम.....

पता.....

.....पोस्ट .....

जिला.....

राज्य.....

जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार

चयनित दस प्रविष्टियों को क- क रुपए (प्रत्येक को सौ रुपए) भेजे जाएंगे।

हमारा पता बालहंस, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

रंग दे

1000 रुपए के पुरस्कार

दोस्तो, इस चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को काटकर (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 25 जनवरी, 2014 तक भिजवाना है। अगर आपकी उम्र 15 वर्ष या इससे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रविष्टियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

दूंढो तो.....

नीचे दी गई आकृतियों को ऊपर वाले चित्र में ढूंढ़ना है। इतना करके चित्र में रंग भी तो भरो, देखो कितना मजा आता है!

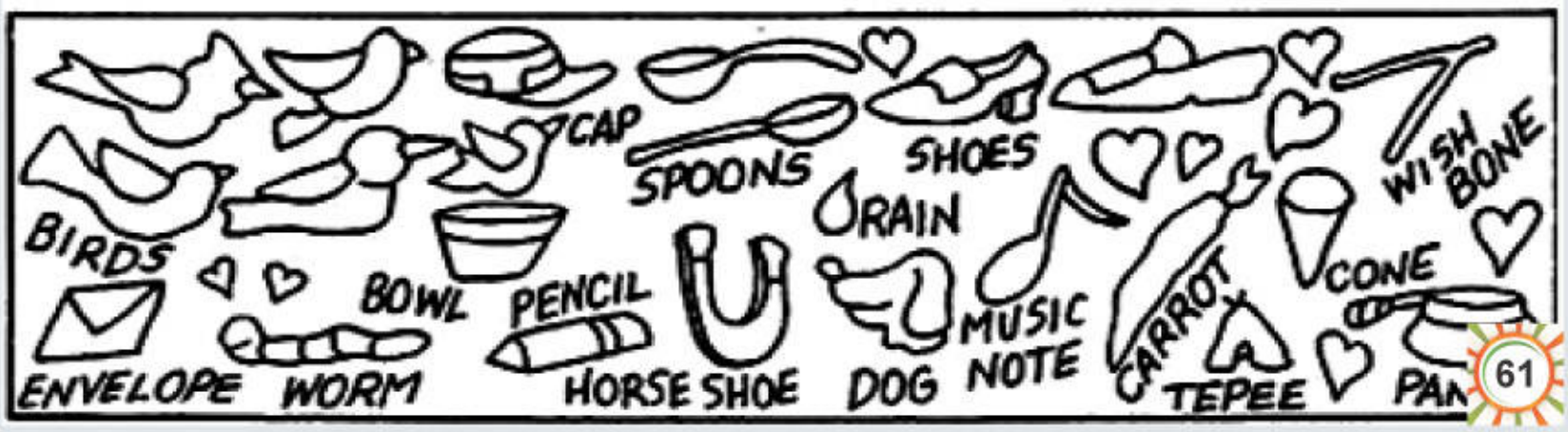

ई-मैन - 12

प्रस्तुतिः उन्नी कृष्णन किडनगूर

अब तुम जा सकते हो। किसी को भी मत बताना कि तुमने मुझे कुछ बताया है।
हां...सर।
और हां, याद रखना, मैं हमेशा साये की तरह तुम्हारे पीछे रहूंगा।
हां...सर
...और थोड़ी ही देर में जॉन वहां से चला गया।

इसके बाद बसु उन्हीं कपड़ों में लौटा, जिनमें वह वहां से गया था।
बसु, क्या हुआ?
पहले मैं अपने कपड़े बदल लेता हूं।
शीघ्र ही...
ओहो! अब तुमने क्या करने की योजना बनाई है।
क्या हमें नौसेनाध्यक्ष को सूचना देनी चाहिए?
उन्हें कंपनी की गतिविधियों पर संदेह है।
सावधान रहना, वह नहीं जानते कि तुम ई-मैन हो।

दो दिन बाद...
अंकल, तुमने खुद ने उनसे बात की है।
एडमिरल सर, आपने मुझे क्यों बुलाया है?
तुम्हारे अंकल ने मुझे बुलाया था।
क्या कोई संदेहास्पद मामला है...
पूरी जांच तो मेरे अधीन नहीं है। लेकिन तुम कुछ कर सकते हो।
आप क्या कहना चाहते हो?
(अगले अंक में जारी)

दिसबर द्वितीय,ख्क्प

कैसा लगा

मैं बालहंस का नया पाठक हूं। मैंने जब से बालहंस लेना शुरू किया है, तब से मेरे ज्ञानकोष में नियमित वृद्धि हो रही है। यह मुझे इतनी अच्छी लगी कि मैं इसे मेरे दोस्तों को भी पढ़ने के लिए कहता हूं। गुदगुदी, तथ्य निराले, आर्ट एंड क्राट सहित सभी कुछ इस अंक में बहुत अच्छे लगे।

– आदित्य कुमार,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

बालहंस पढ़ रहा हूं मगर धीरे-धीरे
वर्ग पहेली बूझ रहा हूं मगर धीरे-धीरे।
गुदगुदी हो या हो सैर सपाटा
दोनों से है मुझको नाता।
चित्रकथा पढ़ रहा हूं मगर धीरे-धीरे
नॉलेज बैंक ज्ञान बढ़ा रहा है।
तथ्य निराले जानकारी दे रहे हैं
अपना ज्ञान बढ़ा रहे हैं सभी शनैः शनैः।

–मु. ***हाशिम, नयापुरा,***
मुबारकपुर (उ.प्र.)

बालहंस है आया
सबके मन को भाया।
इसको पढ़ करके
सबका मन हर्षाया।
इससे है दोस्ती पुरानी
कहानियां सदैव सीख सिखाती।
ज्ञान-विज्ञान सहित बहुत
सी जानकारियां लाती।

– रागिनी देवी निगम, *कानपुरनगर (राज.)*

I like Balhans very much. I got lot of knowledge from it. Balhans has interesting stories, sairsapata, kids club, learn english and many more...

-Deepak Singh,
Naguar (Raj.)

इनके पत्र भी मिले

- **राजदीप सिन्हा,** किशनगंज (बिहार)
- **सहर अनम,** जबलपुर (म.प्र.)
- **राजदीप सेंगर,** कानपुर नगर (उ.प्र.)
- **मनीषा व्यास,** फलौदी, जोधपुर (राज.)
- **शिवनाथ शुल,** भिलाई (छीसगढ़)
- **गौरव आनंद,** भीलवाड़ा (राज.)
- **राजकुमार शर्मा,** नई दिल्ली
- **रूपांजी,** ताजपुर (बिहार)
- **पिन्टू कुमार गुप्ता,** सिवान (बिहार)
- **कुमार रवि,** गोपालगंज (बिहार)
- **श्याम नारायण,** रायगढ़ (छीसगढ़)
- **विकास लबोरिया,** खरसंडी, नोहर (राज.)
- **जोगेन्द्र कुमार लेघा,** सेतराऊ (राज.)
- **निरंजन कुमार राय,** सिवैसिंगपुर (बिहार)

सब्सक्रिप्शन फॉर्म

बालहंस

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (480/-रुपए)..... वार्षिक (240/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (120/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया फोन नं. 0141-3005825 पर संपर्क करें।

राशि इस पते पर भेजें-

बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर

नोटः बालहंस पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पाने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेजा जाएगा। देर से भेजी गई आपत्तियां अस्वीकार होंगी।

डॉ. हेमन्त बेन्दा
(एक्यूपंक्चर विशेषज्ञ)

ॐ

हताश रोगियो के लिये नई आशा...

BENDA®
ACUPUNCTURE

क्या आप बीमारी से थक चुके है ?
क्या आप दवा खाते खाते परेशान है ?
क्या आप जिन्दगी से हताश हो गये ?

चीनी चिकित्सा द्वारा ईलाज

नस दबने से उत्पन्न रोगों में
90% सफल परिणाम।
डॉ. बेन्दा
द्वारा बिना दवा,
बिना ऑपरेशन के प्राकृतिक
ढंग से रोगी स्वस्थ हुये।

कमर दर्द (स्लिप डिस्क), गर्दन दर्द घुटना दर्द, साईटिका (कमर से पंजे तक दर्द) आदि का ईलाज सम्भव।

- श्वास रोग (दमा)
- गठिया (जोड़ो में दर्द)
- सरदर्द (माईग्रेन)
- लिखते समय हाथ कांपना (पार्किन्शन)
- गर्दन में जकड़न/चक्कर आना
- एड़ी व कलाई में दर्द
- टेनिस एल्बो • एलर्जिक जुकाम
- कंधे व कुल्हे की जकड़न व दर्द
- बहरापन (कान में आवाज आना)
- पैरो में सुन्नता व दर्द
- लकवा (चेहरे व हाथ पांव का)
- ट्राईजेमिनल न्यूरालजिया
- नशा मुक्ति
- रीढ़ की हड्डी का टेढ़ापन
- मोटापा घटायें, हाईट बढ़ायें

सेरेब्रल पाल्सी से ग्रस्त बच्चा
ईलाज के बाद पूर्ण स्वस्थ

घुड़ाराम : उम्र 6 वर्ष
निवासी : सिरगरी, गाडमेर

– आपका बच्चा –

सेरेब्रल पॉल्सी, डाउन सिंड्रोम, मंगोलिज्म

आदि रोगो से बच्चा ग्रस्त है तो तुरन्त सम्पर्क करें। बच्चे के हाथ पैर व गर्दन पर नियन्त्रण नहीं, मुंह से लार गिरना, शारीरिक मानसिक विकास धीरे धीरे होना, मंद बुद्धि, एड़ी उठाकर चलना। एक हाथ या एक पैर काम नहीं करता, पढ़ाई में कमजोर, तुतलाना अत्यधिक गुस्सा करना, बिस्तर गिला करना आदि का ईलाज।

सेरेब्रल पॉल्सी ऐसी भयावह बीमारी है जिसमें बच्चे को ताउम्र अपाहिज की जिन्दगी बितानी पड़ती है। सही समय पर यदि इस रोग से ग्रसत बच्चे का ईलाज एक्यूपंक्चर पद्धति से करवाया जाए तो इस बीमारी से मुक्ति मिल सकती है एवं बच्चा आसान जिन्दगी जी सकता है। बच्चे की उम्र जितनी कम होगी बच्चे के ठीक होने की उतनी ही ज्यादा संभावना होगी। ऐसे बच्चों का लक्षणों के आधार पर एक्यूपंक्चर पद्धति से लम्बे समय तक ईलाज करवाना पड़ता है। विश्व में एक्यूपंक्चर चिकित्सा वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति है जिसमें सेरेब्रल पॉल्सी, डाउन सिंड्रोम, मंगोलिज्म ठीक हो सकती है। बशर्ते ईलाज पूरा लिया हो। बेन्दा एक्यूपंक्चर सेन्टर में इस बीमारी से ग्रस्त कई बच्चे स्वस्थ होकर अपनी सामान्य जिन्दगी जी रहे है।

वर्षों पुराना विश्वसनीय चिकित्सा केन्द्र

बेन्दा एक्यूपंक्चर & स्लिमिंग सेन्टर

बोम्बे मोटर्स सर्कल, 11वीं चौपासनी रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
फोन : 0291-2648757, 9414295270 समय : सुबह 9 से 2 एवं सायं 5 से 7
E-mail : dr.hbenda@gmail.com Website : acupuncture.co.in

Parikrama

स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशकः रघुनाथ सिंह द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रा. लि., केसरगढ़, जे.एल.एन. मार्ग/5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं. 73-74, रीको औद्योगिक क्षेत्र, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. 46292/86, सम्पादकः आनन्द प्रकाश जोशी

PARLE
TOM and JERRY
SPECIAL EDITION
MILK SHAKTI
Milky Sandwich
लिमिटेड एडिशन
मिल्क शक्ति
मिल्की सैंडविच बिस्किट्स.
अनलिमिटेड मस्ती
टॉम एंड जेरी और
मिल्की क्रीम के साथ.
पेश है नया मिल्क शक्ति मिल्की सैंडविच बिस्किट्स,
टॉम एंड जेरी के साथ. आपके मनपसंद टून्स के
चेहरेवाले इन स्वादिष्ट बिस्किट्स के
अंदर भरे हैं मजेदार, क्रीमी दूध की खूबियां.
तो जल्दी कीजिए, अपना पैक आज ही ले आइए!
और टॉम एंड जेरी के साथ मिल्की क्रीम के
मस्तीभरे स्वाद का मजा लीजिए.